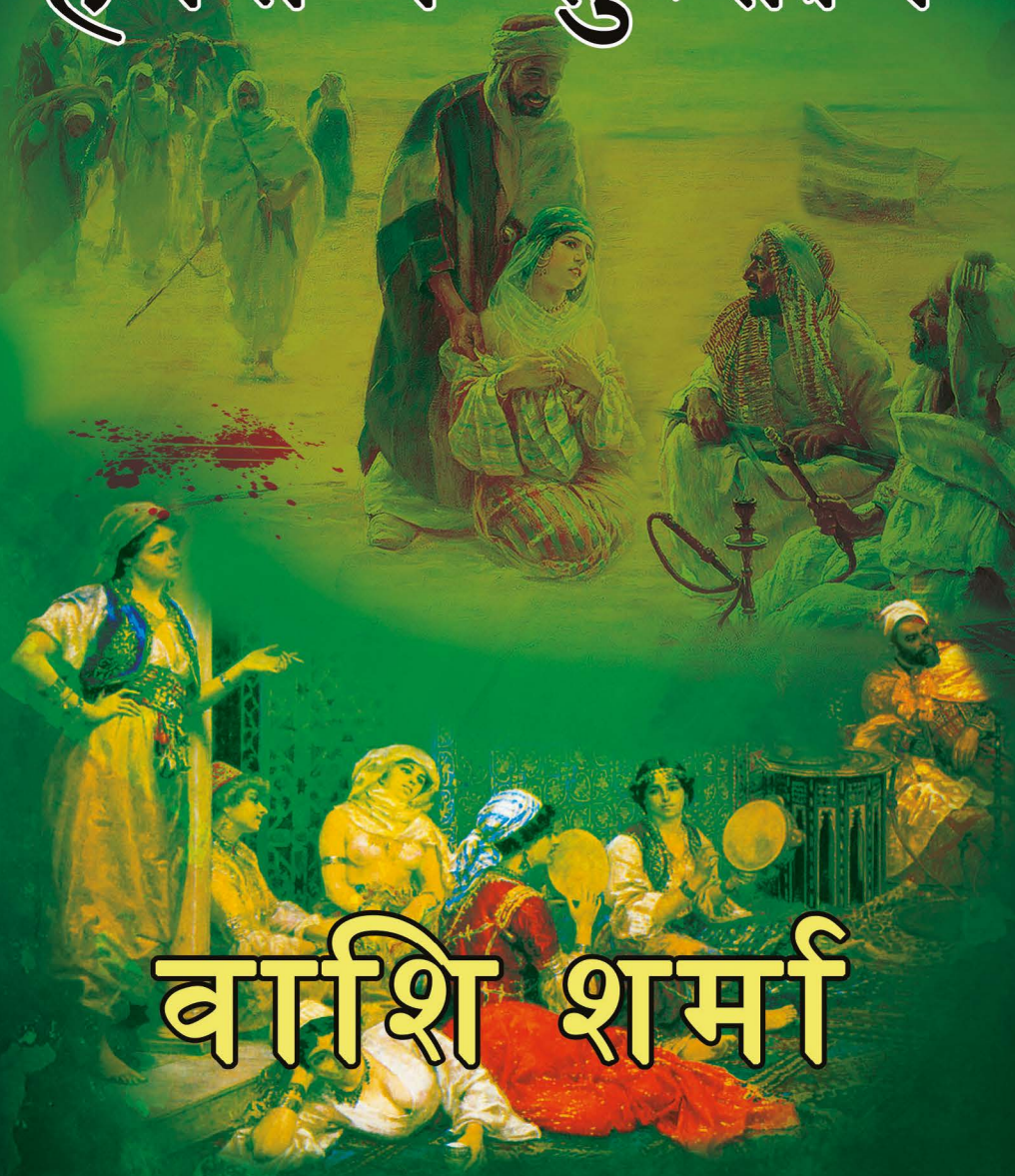


मुग़ल हवस के सुल्तान



वाशि शर्मा

मुग़ल
हवस के सुल्तान

मुग़ल : हवस के सुल्तान

कॉपीराइट © २०१८ अग्निवीर

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पुस्तक को सम्पूर्ण या आंशिक रूप से प्रकाशक की पूर्व में लिखित अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या यान्त्रिक या लिखित या प्रतिलिपि के द्वारा या रिकार्डिंग से या अन्य किसी भी माध्यम से और किसी भी स्वरूप में संग्रहित या प्रसारित नहीं किया जा सकेगा।

जानकारी के लिए संपर्क करें
books@agniveer.com

प्रथम संस्करण : मार्च २०१८

मुग़ल हवस के सुल्तान

वाशि शर्मा

यह पुस्तक समर्पित है हिंदू दलित हुतात्मा किरण कुमारी को जिसने ४ जिहादियों द्वारा बलात्कार और दरिंदगी के बाद भी निकाह के लिए इस्लाम कुबूल नहीं किया। अंत में गला रेत कर मार डाली गई, पर धर्म नहीं छोड़ा। आँखों में खून के आँसू और हृदय में प्रतिशोध का संकल्प लिए तेरा भाई

वाशि शर्मा

अस्वीकरण

इस पूरी पुस्तक में जहाँ भी 'इस्लाम' वा 'मुसलमान' वा पैग़म्बर आदि मज़हबी शब्दों का प्रयोग हुआ है, उसका अर्थ केवल और केवल इस्लाम वा मुसलमान वा पैग़म्बर आदि शब्दों की वह व्याख्या है जो कट्टर इस्लाम के मशहूर और लोकप्रिय प्रचारक जैसे - ज़ाकिर नाईक़, अंजम चौधरी, हाफ़िज़ सईद, मौलाना इसरार अहमद, मौलाना मसूद अज़हर और उनके समर्थक करते हैं जिसके अनुसार हर ग़ैर-मुसलमान जहन्नम/नर्क की आग में जलेगा और हर इस्लाम छोड़ने वाले को क़त्ल कर देना चाहिए।

इस पूरी पुस्तक में जहाँ भी 'क़ुरान' शब्द प्रयुक्त हुआ है, उसका अर्थ क़ुरान की पुस्तक के वो अनुवाद और व्याख्याएँ हैं जो कट्टर इस्लाम के प्रतिनिधियों द्वारा इंटरनेट और अन्य स्थानों पर प्रचारित-प्रसारित की जाती हैं जिन्हें पढ़कर कमज़ोर दिल के लोग कट्टरता की दिशा में मुड़ रहे हैं। हम जानते हैं कि क़ुरान व उपरिलिखित शब्दों की कुछ व्याख्याएँ ऐसी भी हैं जो हिंसा को आज के दिन ठीक नहीं समझतीं, एवं ग़ैरमज़हबी मानवता पर बल देती है पर ऐसी व्याख्याएँ और व्याख्याता कट्टर इस्लाम के प्रतिनिधियों और उनके अनुयायियों की दृष्टि में मुर्तद (मुसलमान जिसने इस्लाम छोड़ दिया हो) घोषित किए गए हैं। ऐसे व्याख्याता और उनकी व्याख्याएँ इस पुस्तक के विषय नहीं हैं। चिंता का विषय है की आज इंटरनेट आदि माध्यमों में कट्टरवादी व्याख्याओं का बाहुल्य है एवं उदारवादी सहिष्णु व्याख्याएँ दुष्प्राप्य हैं।

किसी भी व्यक्ति, समुदाय, उदारवादी विचारधारा की भावना को ठेस पहुँचाना इस पुस्तक का उद्देश्य नहीं है। किंतु विषय गम्भीर है, संवेदनशील

है। प्रचारित इतिहास पर प्रश्नचिन्ह उठाता है। कुछ स्थानों पर ऐतिहासिक विषयों को नाटकीय रूप में भी प्रस्तुत किया गया है। अतः यह निवेदन है कि यदि इन विषयों को लेकर आप किंचित भी संवेदनशील हैं तो इस पुस्तक को आगे न पढ़ें। यह पुस्तक केवल परिपक्व मनस हेतु है जो इस अस्वीकरण को ध्यान रखते हुए, हमारी मूल भावना का सम्मान करते हुए, हमारे सृजनात्मक अभिव्यक्ति के अधिकार को अंगीकार कर सकें।

भूमिका

दिल्ली के लाजपत नगर में एक रिश्तेदार के घर बैठा था। ६-७ जवान लड़के साथ ही खाना खा रहे थे। देश की सबसे बड़ी समस्या क्या है, मैंने पूछा। भ्रष्टाचार, एक ने कहा। साफ़ पानी, दूसरा बोला। कोई बिजली, कोई महँगाई, कोई ग्लोबल वार्मिंग से पीड़ित था। किसी को गोरक्षकों की गुंडागर्दी की चिंता थी तो कोई सड़क पर प्यार के इज़हार की छूट की कमी को लेकर चिंता में था।

आतंकवाद या मज़हबी कट्टरपन नहीं? मैंने पूछा। जवाब आया- “ये तो सब राजनीति है जी, सब राजनेता लड़वा देते हैं आवाम को। वरना आम लोग तो अमन शान्ति से रहना चाहते हैं। ये सब वोट बैंक की राजनीति करते हैं। वरना कोई धर्म मज़हब बुरा नहीं होता”। और अचानक मेरी आँखों के आगे पिछले १३०० सालों का इतिहास घुमड़ घुमड़ कर आने लगा।

आठवीं सदी में मुहम्मद बिन कासिम का जिहादी जंगी जुनून, काफ़िर राजा दाहिर का कटा सर, इराक़ में हज्जाज इब्न यूसुफ़ के हरम में दाहिर की बेटियों के कुचले हुए जिस्म, लड़ाई के बाद सिंध में सड़कों पर सड़ती काफ़िरों की लाशें, अधमरे सैनिकों की दिल चीर देने वाली चिंघाड़, कासिम के जिहादियों के चंगुल में आयीं हज़ारों काफ़िर औरतें, उनकी बोटी बोटी नोचे जाने से उठी चीत्पुकार, १०-१० जिहादियों के नीचे फँसी उस माँ को जिसके दुधमुँहे बच्चे को अल्लाहु अकबर के नारे के साथ भाले की नोक पर घुसा कर हवा में उछाल दिया गया था, उस माँ को जो यह नहीं जान पा रही थी कि कौन सी तकलीफ़ ज़्यादा बड़ी है- एक साथ १० हैवानों के बीच

अपने जिस्म को नुचवाना या अपने बच्चे को भाले की नोक पर लटके हुए देखना या उस जिगर के टुकड़े को आखिरी आशीर्वाद भी नहीं दे पाना ।

ग्यारहवीं सदी के पहले साल से ही महमूद गजनवी के जंगी दस्ते, १/२/३/१७ बार सोमनाथ मंदिर का विध्वंस, करोड़ों हिंदुओं की आस्था का प्रतीक ज्योतिर्लिंग जो अब टुकड़े टुकड़े होकर जिहादियों के क्रदमों में पड़ा था, हज़ारों सर जो धड़ों से जुड़ा करके खेतों में फेंक दिए गए, पेशावर, मुल्तान, लाहौर, के वो जले हुए शहर, उनमें भुट्टों की तरह भून दिए गए बुतपरस्त काफ़िर ।

बारहवीं सदी के वो गुरु चले- ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती और मुहम्मद गौरी, राजा पृथ्वीराज के राज्य में उसी के टुकड़ों और दया पर पलने वाले चिश्ती के ख्वाब में आए इस्लामी नबी, उसका हिन्दुस्तान पर हमला करके बुतपरस्त काफ़िरों को सबक सिखाने के लिए गौरी को चिट्ठी, पहली लड़ाई में पृथ्वीराज के सामने घुटनों पर आकर सिर झुकाने वाले गोरी का अगली बार फिर से झपटना, और अपनी जान बख़्शने वाले के सर को अपने मुल्क ले जाकर क़िले के दरवाज़े पर टाँग देना, उसके साथ हुआ अल्लाहु अकबर का अट्टाहस, हिन्दुस्तान में मूर्तिपूजकों के खून से घुटनों तक दरया बहाने के गुरु चेलों के मंसूबे और कत्लेआम ।

तेरहवीं सदी में बख़्तियार ख़िलजी का हमला । नालंदा और विक्रमशिला के महीनों तक धूँ धूँ करके जलते भवन, तकबीर के नारों और फ़तह के जश्र के शोर के बीच मौत के आगोश में समा गए हज़ारों आचार्य, शिक्षक, शिष्य, मर्द, औरत, बच्चे ।

चौदहवीं सदी में महारानी पद्मिनी को पाने के लिए अलाउद्दीन ख़िलजी

का चित्तौड़ का हमला, शादीशुदा माँ समान रानी को अपने बिस्तर में देखने के जिहादी मंसूबे, हज़ारों महारानियों, रानियों, राजकुमारियों, और साथी स्त्रियों की सामूहिक पूजा, पूरा शृंगार करके आरती अर्चना, भीमकाय किले के बीचोंबीच हज़ारों मन लकड़ियों को इकट्ठा करते शाही हाथी, अहाते के चारों तरफ़ उन लकड़ियों को जमता देखती कन्याओं की टोली, प्रचण्ड आग में कूदने के पहले एक दूसरे से आखिरी गले मिलना, धर्म की विजय की कामना करते हुए महारानी पद्मिनी का अग्निकुण्ड में प्रवेश, एक पल में लकड़ी को कोयला कर देने वाली दहकती आग में माँ समान कोमल महारानी और हज़ारों स्त्रियों का अंतिम प्रयाण, मर कर भी किसी जिहादी के हाथ ना आने का अतुल्य संतोष, मर कर भी सम्मान नहीं मरने देने का सुख, आने वाली पीढ़ी के वीर पुत्र अपनी जलती माताओं का प्रतिशोध ज़रूर लेंगे, इस संदेश के साथ उस ऊँची उठती आग में धुआँ हो जाने वाली राजमाताएँ और पुत्रियाँ।

इसी सदी में काफ़िरों के कटे सरों की मीनारें बनाने वाला तैमूर, दिल्ली शहर का वो कल्लेआम, दहाईयों तक इंसानी वजूद से ख़ाली हो जाने वाले शहर, गिद्ध, चील, भेड़ियों और जानवरों के शोर में ढके हुए शहर, करीब २ करोड़ इंसानों के क्रातिल का दिल्ली की गलियों में बेख़ौफ़ घूमना, पूरी दुनिया की इंसानी आबादी के ५% हिस्से को अपनी तलवार से ख़त्म करने वाले उस लंगड़े के चेहरे के भद्दे चेचकी दाग़।

सोलहवीं सदी के मुग़ल बाबर के हाथों से काटे गए हज़ारों सरों की मीनारों के जुलूस, मीनारों के ख़ौफ़ से पूरे के पूरे शहरों का इस्लाम कुबूल करना, बाजौड़ की औरतों की दर्दनाक दास्ताँ, बाबर के हरम से हर रात निकलने वाली कमसिन बच्चों की चीख़ें, अफ़ीम के नशे में सर काटने की

प्रतियोगिता । करोड़ों हिंदुओं के भगवान राम के मंदिर का ज़मीन में दफ़न किया जाना ।

इसी सदी में बाबर के पोते अकबर महान का अपने उस्ताद बैरम खाँ को फ़ारिग़ करके माँ समान उसकी बीवी से निकाह, चित्तौड़ के क़ब्ज़े के दिन ३०,००० बेगुनाह औरतों, बच्चों, बूढ़ों और जवानों का अपने हाथों से कल्लेआम, सैकड़ों राजस्त्रियों का जौहर की आग में फिर से पलायन, ५,००० काफ़िर औरतों और बच्चों से भरा हुआ हरम, रिश्ते में बेटी, पोती और बहू लगने वाली औरतों/बच्चों की दर्दनाक चीखों से भरी हुई हरम की रातें ।

सत्रहवीं सदी में अकबर महान के बेटे जहांगीर का हिंदू-सिखों के गुरु अर्जन देव जी को इस्लाम कुबूल करने का हुक्म, गुरु का इनकार, गुरु की मौत का फ़रमान, जलते लोहे के तवे पर गुरु का बैठना, ऊपर से गरम रेत से बदन को छलनी करना, भालों से गुरु का माँस उतारना, बादशाह जहांगीर का आख़िरी बार इस्लाम कुबूल करने का हुक्म? गुरु का आख़िरी इनकारी जवाब, गुरु को उनकी गाय माता की खाल में सिल कर मारने का फ़रमान, इस पर गुरु का रावी नदी में स्नान के लिए जाना और फिर कभी वापस नहीं आना ।

इसी सदी में अकबर महान के पड़पोते औरंगज़ेब के हाथों इस्लाम कुबूल नहीं करने पर लाखों हिंदुओं का कल्लेआम । हज़ारों मन्दिरों को ज़मींदोज़ करके मूर्तिपूजक हिंदुओं को असली खुदा की ताक़त का एहसास करवाना, हिंदू-सिखों के गुरु तेग़ बहादुर जी को इस्लाम कुबूल नहीं करने पर क़ल्ल का फ़रमान, दिल्ली की धरती पर गुरु का उड़ता हुआ

सर, भाई मति दास का आरे से चीरा गया बदन, भाई सती दास का रुई में लपेट कर जलाया गया जिस्म, भालों पर झूलते ७०० सिखों के कटे सर, दिल्ली में कटे सरों के जुलूस, छत्रपति शिवाजी महाराज के बेटे छत्रपति संभाजी की यातनाओं के २० दिन, इस्लाम नहीं कुबूल करने के लिए खंजर से निकाली गयीं आँखें, अल्लाहु अकबर नहीं बोलने के लिए खींची गयी ज़बान, उँगलियों के खींचे गए नाखून, पत्थरों से कुचली गयीं उँगलियाँ, चिमटों से खींची गयी जिस्म की खाल, खंजरों से काटी गयी बोटी बोटी, तलवार से कलम किया गया सर।

अठारहवीं सदी में हिंदू-सिखों के दसवें गुरु गोबिन्द सिंह जी के ५ और ८ साल के छोटे छोटे बच्चों का अपहरण, उन्हें इस्लाम कुबूल करने का हुक्म, बच्चों का इनकार, दीवार में ज़िंदा चिनवाए गए बच्चे, अल्लाहु अकबर का शोर। बच्चों के बलिदान का बदला लेने वाले बंदा वैरागी का दिल्ली आना, शेर के पिंजरे में उसे कैद करके दिल्ली शहर में घुमाना, दुधमुँहे बच्चे का माँस खंजर से निकाल के पिता बंदा के मुँह में ठूसना, इस्लाम कुबूल नहीं करने पर बदन के टुकड़े टुकड़े दिल्ली की सड़कों पर। देवी के अपमान पर पैगम्बर का अपमान करने के जुर्म में १४ साल के बालक हकीकत राय का लाहौर में माँ की आँखों के सामने तन से जुड़ा सर।

इतना सुनना था कि खाने की मेज़ पर रोटी के निवाले हलक में अटक गए। रूँधे हुए गले से रोटी नीचे नहीं उतरती थी। भाई, ये सब क्या था? अगर ये सब सच है तो हमने स्कूल में ये सब क्यों नहीं पढ़ा? १४ आँखों से आँसू लुढ़क रहे थे। कमरे में खामोशी ही खामोशी थी जो ७ लोगों के सुबकने से टूट रही थी।

एक सवाल मन में कौंध रहा था, क्या कारण है कि जिस देश में पिछले १३ सदियों का एक एक साल खून में डूबा हो, एक भी सदी बिना औरतों, बच्चों, माँओं की अगणित चीख पुकार सुने बिना नहीं बीती, जिस देश में आज भी उन १३०० सालों के हमलावरों, माओं को नंगा घुमाने वालों, उनको अरब की गुलाम मंडियों में बेचने वालों, बलात्कार करने वालों, लाखों मंदिरों-मूर्तियों को तोड़ कर उन पर मस्जिद बनाने वालों, करोड़ों लोगों को तलवार के ज़ोर पर हिंदू से मुसलमान बनाने वालों को हीरो, वली और इस्लाम का गाज़ी समझा जाता हो, ग़ज़नी, बाबर और औरंगज़ेब के नाम की मस्जिदें बनाकर उनमें बैठ कर करोड़ों हिंदुओं के ज़ख्मों पर दिन में ५ बार, सप्ताह में ३५ बार, महीने में १५० बार और साल में १८२५ बार नमक मिर्च रगड़ा जाता हो, जिस देश में बलात्कारी बाबर के नाम की मस्जिद के लिए लाखों लोग सड़कों पर उतर आते हों, औरंगज़ेब के नाम की मस्जिद से दिल्ली में तकारीर की जाती हों, जिस देश को ७० साल पहले इन्हीं क्रांतिलुतरे के मानने वालों ने दो टुकड़े कर के फेंक दिया, जिस देश के टुकड़े होने के बाद भी बचे खुचे पर शरीयत के काले क़ानून के साथे हैं, जिस देश के २०% लोग देश का क़ानून मानने से इनकारी हों, मज़हब मुल्क से ऊपर है, इस बात का खुल्लम खुल्ला एलान करते घूमते हों, जिस देश में ६०० में से ८६ जिलों में ऐसे लोगों की संख्या २०% के पार हो चुकी हो, जिस देश में हिंदू को कश्मीर से साफ़ किया गया हो, राजधानी दिल्ली से १०० किलोमीटर दूर कैराना में हिंदुओं का पलायन किया जा चुका हो, मेरठ, मुज़फ़्फ़रनगर, सहारनपुर, बुलन्दशहर, रामपुर, मुरादाबाद आदि में पलायन की तैयारी हो चुकी हो, जिस देश में बचे खुचे हिंदू ८ राज्यों में अल्पसंख्यक बन चुके हों, जिस देश के स्कूलों में रमज़ान के दिनों में हिंदू बच्चों के लिए भी खाने पर पाबंदी लगनी शुरू हो गयी हो,

जिस देश की राजधानी में हनुमान आरती को रमज़ान के महीने में रुकवा दिया गया हो क्योंकि मूर्तिपूजा से मोहल्ले के लाखों अल्पसंख्यक लोगों की धार्मिक भावनाएँ आहत हो जाती हैं, जिस देश में आपके लिए घेरा तंग से तंगतर होता जा रहा हो, उस देश के युवाओं की समस्या क्या हैं? भ्रष्टाचार, ग्लोबल वार्मिंग, गोरक्षक, खुले में प्यार करने की आज़ादी पर रोक?

शर्म से सर नीचे हो गया। पर ऐसा क्यों हुआ? युद्ध के गरजते बादलों और दुश्मन की चुनौती के बीच इस 'भ्रष्टाचार/ग्लोबल वार्मिंग/ चुम्बन की आज़ादी' की नपुंसकता का राज क्या है? लाजपत नगर - दिल्ली की एक रेफ़्यूजी कॉलोनी जहाँ पर पाकिस्तान से कट पिट कर हिंदू सिख १९४७ में आकर बसे थे, उस में बैठ कर ७० साल बाद बदले की बजाय 'सब राजनीति है, वरना लोग तो सब शांति से रहना चाहते हैं' की नामदर्नगी उनमें किसने डाली?

हिंदुस्तान के विभाजन में पाकिस्तान का ज़ेहन साफ़ था। पाकिस्तान मुस्लिम रियासत होगी। हिन्दुस्तान हमेशा की तरह संशय में था। सदियों लुटने पिटने और चौथाई देश खोने के बावजूद भी 'मानवता ही हमारा धर्म है, अहिंसा ही हमारा रास्ता है' के खोखले जुमले इस देश की नींव बने। 'सब धर्म बराबर हैं' के अर्थहीन दावे इतिहास को मुँह चिढ़ा रहे थे। हिंसा को अहिंसा से जीतेंगे, झूठ को सच से जीतेंगे, नफ़रत को मोहब्बत से जीतेंगे, इस तरह के मदारी के खेल करते हुए यहाँ के नपुंसक नेता और उनके भक्त सत्ता में आए। अपनी अहिंसा से एक मक्खी की टाँग भी ना तोड़ पाने वाले अहिंसक वीरों ने ठान लिया था कि पाकिस्तान को प्यार से जीतेंगे और हिन्दुस्तान में मुसलमान को हिंदू से मिलाकर ही दम लेंगे।

सदियों से खुद को हिन्दुस्तान का फ़ातेह और विजयी समझने वाला मुसलमान कहीं बँटवारे की वजह से बहुसंख्यक हिंदू की 'नफ़रत' का शिकार ना हो, इसके लिए शुरू हुआ 'हिंदू-मुस्लिम एकता' का भयानक खेल। बहुसंख्यक हिंदुओं के मन में अल्पसंख्यक मुसलमानों के लिए भाईचारा बढ़ाने के लिए रचाया गया एक नया इतिहास। १००० साल के हमलों को हज़ार साल की हुक्मरानी/सल्तनत का नाम दिया गया। हर मुसलमान हमलावर और दो कौड़ी के गाज़ी को हिन्दुस्तान का राजा बताया गया। दिल्ली के बाहर हरियाणा तक भी जिनके फ़रमान कागाज़ के टुकड़ों से ज़्यादा कुछ नहीं थे, उन्हें पूरे हिन्दुस्तान का बादशाह बताया गया।

अफ़्रीम के नशे में हाथी और गैंडे का फ़र्क भी ना कर पाने वाले बाबर को हिंदुस्तान के मुगल साम्राज्य का संस्थापक बताया गया। हर सप्ताह मीना बाज़ार सज़ा कर हिंदू औरतों का भरे बाज़ार शिकार करने वाले अकबर को नरम दिल बादशाह की पदवी दी गयी। ५००० काफ़िर औरतों से हरम सजाने वाला, काफ़िर राजाओं को उनकी औरतों की डोलियाँ हरम में भेजने को मजबूर करने वाला, चित्तौड़ में ३०,००० निर्दोष निहत्थे लोगों को एक दिन में क़त्ल करने वाला अकबर महान बनाया गया। जोड़ घटाव जैसे सामान्य गणित करने में भी लाचार शाहजहाँ को ताज महल का शिल्पकार कहा गया। टनों के हिसाब से सरों से गर्दन और कंधों से जनेऊ उतारने वाले कतलगीर ऐय्याश औरंगज़ेब को टोपी सिलकर गुज़ारा चलाने वाला आलमगीर कहा गया। 'मुग़लों ने हिन्दुस्तान को ताजमहल, बिरयानी और कुर्ता पायजमा दिया', जैसे कि इस सब से लाखों क़त्ल, लाखों मंदिर और अनगिनत लुटी हुई आबरू का हिसाब हो गया!

इतिहास की किताबों में यह सब पढ़ कर नतीजा यह निकला कि एक

आम हिंदू ने खुद को १००० साल तक हारी हुई गुलाम क्रौम समझ लिया। साथ ही खूँखार लुटेरों, हमलावरों और बलात्कारी दहशतगर्दों को अपना गौरवशाली इतिहास। हिंदुओं ने हमलावरों को अपना इतिहास समझ कर दोस्ती कर ली। एक आम हिंदू को फ़ख़्र है उसके राजा अकबर पर जिसने इंसानियात के लिए दीन ए इलाही चलाया। जिसने हिंदू औरतों को रखैल ही नहीं अपनी बीवी भी बनाया और बराबरी का रिश्ता रखा। दिल्ली में बाबर रोड, हुमायूँ रोड, अकबर रोड, जहाँगीरपुरी, शाहजहाँ रोड, औरंग-गज़ेब रोड, शेरशाह सूरी रोड आदि दिल्ली की गंगा जमुनी सभ्यता की प्रतीक समझी गयीं। कुल मिलाकर हिंदू ने हमलावर मुसलमानी इतिहास से दोस्ती करके उसे आत्मसात कर लिया। क्योंकि हिन्दुस्तान एक धर्म-निरपेक्ष देश है, इसलिए हिंदू अब हिंदू ना होकर हिंदुस्तानी हो गया। देश धर्म से ऊपर हो गया।

अब बारी मुसलमान की थी। भारत के अहिंसा वीरों ने सोचा कि अब जब हिंदुओं ने मुसलमान के इतिहास को अपना इतिहास समझ लिया, उनको अपना राजा समझ लिया, उनको अपना लिया तो मुसलमान भी अब कट्टरता और मज़हबी हठधर्मी छोड़ कर मुख्य धारा में आएँगे और भारत माता के आगे सिर झुकाएँगे। पर इन मदारियों को इल्म नहीं था कि जिसने घर से ही बुतपरस्त हिंदू के ऊपर अपनी क्रौम के १००० साल की हुकूमत के क्रिस्से सुने हुए थे और जो हिंदू और मूर्तिपूजा से नफ़रत के कारण गोरी, ग़ज़नी और बाबर के मुरीद थे, जिन्होंने भारत को एक दासी से ज़्यादा कुछ नहीं समझा वो इसे माता कहकर सिर कैसे झुकाएँगे? मुसलमान ने हिंदुस्तान के एक क़ानून को मानने से इनकार किया। हिंदुस्तान के इतिहास को नकारा। राम से नफ़रत की, बाबर से प्यार किया। महाराणा प्रताप से नफ़रत की, अकबर से प्यार किया। शिवाजी से नफ़रत की।

औरंगज़ेब से मुहब्बत की। अपने हिंदू पूर्वजों को नकार कर अरबों, तुर्कों, अफ़ग़ानों और ईरानियों से नाता जोड़ा। अपनी ही माँ बहनों के हत्यारों के आगे सजदा किया।

नतीजा यह कि एक आम हिंदू अपना इतिहास भूल कर गैरों की गोद में जाकर बैठ गया। और एक आम मुसलमान दोबारा हिंदुस्तान पर इस्लामी हुकूमत के सपने देखने लगा। एक मरने को तैयार हो गया। एक मारने को। जोड़ी ख़ूब जमी। नतीजा यह कि ७० साल पहले विभाजन के बाद १०% से भी कम आबादी वाला मुसलमान हिंदुस्तान में आज १७% हो गया जबकि ९०% हिंदू घट कर ७९% रह गया। हर बीतते हुए साल में यह अंतर बढ़ता है। पर फ़िक्र किसको है? धर्मनिरपेक्षता के अपने तक्राज़े हैं।

हिंदू और मुसलमान के बीच शिकार और शिकारी के इस रिश्ते की बुनियाद वो झूठा इतिहास है जिसने एक आम हिंदू को सब ख़तरों से बेख़बर किया। जो क़ौमों अपना इतिहास याद रखती हैं, वो सदा ज़िंदा रहती हैं। जो क़ौमों अपना इतिहास भूल जाती हैं, वो इतिहास में खो जाती हैं। हिंदुस्तान का इस्लामी इतिहास एक ख़ूनी इतिहास है। पर केवल इसलिए कि वह ख़ूनी है, इस पर पर्दा डालना ठीक नहीं। जो लोग ख़ून देखकर आँखें बंद कर लेते हैं, उनकी आँखें सदा के लिए बंद हो जाती हैं। जो ख़ून देखकर उसकी जड़ में जाते हैं, वो तकलीफ़ सह कर भी इलाज कर लेते हैं और ज़िंदा रहते हैं। अब वक्रत आ गया है कि सच्चे इतिहास को जाना जाए। हमलावरों के असली चेहरे को उघाड़ा जाए। यह किताब उन चन्द हमलावरों की ज़िंदगी के कुछ अनखुले पन्ने खोलती है जिन्हें बहुत से लोग वली/अल्लाह का दोस्त समझ कर जी रहे हैं। बाबर का मर्द आशिक़ हो या अपनी बहू के शिकारी अकबर के हरम की कहानी, बीवी के 'प्यार'

में ताज महल बनवाने वाले शाहजहाँ का अपनी साली से प्यार, औरंगज़ेब आलमगीर की कतलगीरी और देशभक्त टीपू सुल्तान का भारत प्रेम, यह सब जो इस किताब में है वह आपने आज तक नहीं पढ़ा होगा।

पढ़िए उनकी ज़िंदगी और कीजिए फ़ैसला कि क्या मुसलमान आदर्श ऐसे होते हैं? क्या ऐसे लोगों को इंसान भी कहा जा सकता है? वक़्त आ गया है कि अब इन क्रांतिल बलात्कारियों के झूठे महानता के दावों को खुद उनके इतिहास से रद्द किया जाए। एक मुसलमान इनसे अपना रिश्ता तोड़ अपने असली दादा परदादा प्रताप और शिवाजी से रिश्ता जोड़े। एक हिंदू सच्चे इतिहास से सबक लेकर भविष्य की क़िलाबन्दी करे। झूठे अहिंसा और प्रेम के फ़सानों में समय ख़राब ना करके कई और पाकिस्तान बनाने का ख़्वाब देखने वालों या हिन्दुस्तान में शरीयत लागू करके इसे अरबों का गुलाम बनाने के सपने देखने वालों की नस्लें तबाह करे।

याद रखिए, इस किताब की बिक्री से आने वाले हर एक रुपए को इसी काम को आगे बढ़ाने में ख़र्च किया जाएगा। यह तो बस शुरुआत है। अभी तो बहुत महानों के राज खोलने हैं। आप दिल खोल कर सहयोग कीजिए।

तो आइए शुरू करते हैं मुस्लिम सुल्तानों की ज़िंदगी के उन पहलुओं से जो आज तक छिपे हुए थे। जानिए खुद उनकी अपनी किताबों से और उनके पगार पर रखे हुए अपने इतिहासकारों की कलम से।

बिलकुल, कुछ लोगों के लिए यह दुखदायी होगा। पर सच्चाई के लिए यह क़ीमत बड़ी नहीं। कुछ लोग कहते हैं कि भाई बात तो आप ठीक कहते हैं पर यह सब बता कर शांति भंग हो जाएगी। तो भाई, शांति तो एक लाश में भी होती है। क्या वह कुबूल है? न्याय और शांति में जब भी किसी एक

को चुनना हो तो न्याय को चुना जाता है। शांति न्याय का परिणाम हो तभी अच्छा लगता है। यदि वह अन्याय का बहाना बन जाए तो कायरता हो जाती है।

हिंदू मुसलमान भाई हैं। उन्हें एक होना चाहिए। पर बाबर, अकबर और ग़ज़नी के सम्मान में नहीं। भारत माता के चरणों में। भारत माता के नियम मानने में। भारत माता के पुत्रों बप्पा रावल, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, छत्रसाल, गुरु गोबिन्द सिंह, बंदा वैरागी, वीर लचित, हरि सिंह नलवा, हकीकत राय, बिस्मिल, अशफ़ाक़, अब्दुल हमीद और ए पी जे अब्दुल कलाम को नमन करने के लिए। इसको छोड़ कर और कोई भाईचारा हमें मंज़ूर नहीं।

डॉ वाशि शर्मा

हुतात्मा चंदन गुप्ता बलिदान स्थल, कासगंज (उत्तर प्रदेश)

विषय सूची

अस्वीकरण	i
भूमिका	iii
अध्याय १: मुस्लिम सुल्तान और उनके मर्द महबूब	1
अध्याय २: मुस्लिम सुल्तान : गैरों पे करम अपनों पे सितम?	8
अध्याय ३: बाबर - एक लौंडेबाज अफ़ीमची	35
अध्याय ४: अकबर और कटे सरो की मीनार	42
अध्याय ५: जोधा अकबर - प्रेम कहानी या बेटी के बलात्कार की मज़हबी दास्ताँ?	66
अध्याय ६: शाहजहाँ - माली और बगीचे के फूल!	84
अध्याय ७: औरंगज़ेब - वली या वहशी दरिदा?	94
अध्याय ८: टीपू सुल्तान - ख़ूनी तलवार	104
दो शब्द	124
संदर्भ ग्रंथ सूची	125
लेखक परिचय	126
अग्निवीर : एक परिचय	127

अध्याय १

मुस्लिम सुल्तान और उनके मर्द महबूब

आम मुसलमान के दिल में अपनी इस्लाम पसंदी और रिवायतों के लिए राज करने वाले मुस्लिम सुल्तान अपनी असल ज़िंदगी में कैसे थे, यह हिंदुस्तान के इतिहास में मिलता ही नहीं। इसे इस्लामी खौफ़ कहें या हिंदुओं की अतिथि देवो भव परम्परा की एक और कड़ी, हिंदुस्तान पर 'हुकूमत' करने वाले अनपढ़ मुस्लिम सुल्तान ताज महल, लाल क़िला, कुतुब मीनार वगैरह बनाने वाले सिविल इंजिनियर बताए गए पर इनके अपने महलों के अंदर झाँकने की हिम्मत आज तक किसी इतिहासकार को नहीं हुई। इतिहास के पन्नों से इनके रंगीन शौक़ मिटा दिए गए। जी हाँ, वो रंगीन शौक़ जिनके लिए आज किसी भी मुस्लिम मुल्क में गर्दन उड़ा दी जाती है।

हिंदुस्तान का हर मुस्लिम सुल्तान समलैंगिक (लौंडेबाज) था। शराब,

अफ्रीम और हवस में दिन रात डूब कर खोखले हो चुके ये सुल्तान अपनी नामदर्शनगी से तंग आकर तरह तरह के खेलों से अपने शिथिल पुट्टों में जान डालने की कोशिश करते थे। कभी औरतों के साथ, कभी मर्दों के साथ, कभी बच्चों के साथ, और कभी जानवरों के साथ, ऐसा कोई नहीं जिसे इन्होंने छोड़ा था। कभी कभी खुद को औरतों के लिबास में कैद कर के आइने में खुद को निहारते थे तो कभी औरत बन कर अपने मर्द महबूब को रिझाते थे।

यौन कुंठाओं और हवस के खेलों के इसी दौर को इतिहास में मुस्लिम राज का सुनहरा दौर कहा गया। बात केवल बीवी या कुछ मर्द महबूब/दोस्तों तक सीमित नहीं रही। नामर्द सुल्तानों के रूठे हुए पौरुष को जगाने के लिए बीवियाँ और कुछ दोस्त अब काफ़ी नहीं थे। हज़ारों बंदियों, लौंडों और बिना बालों वाले बच्चों से भरे हरम इन सुल्तानों की शान बढ़ाते थे। मुकद्दस किताब में बताई गयीं गोरी, बड़ी आँखों और छातियों वाली हूरे, बिना बालों वाले, नीली आँखों वाले, सुंदर मुखड़े वाले कमसिन नरम लड़के - गिल्मां जैसे जन्नत से उतर कर हरम में आ गए थे। गौर फ़रमाइए।

सोमनाथ के मंदिर को नेस्तनाबूद करके इस्लाम के बुतशिकन (मूर्ति-भँजक) गाज़ी का ख़िताब पाकर आज तक भी मुसलमान दिलों पर राज करने वाला सुल्तान महमूद ग़जनवी परले दर्जे का ऐय्याश लौंडेबाज था। पन्द्रहवीं सदी के मशहूर फ़ारसी इतिहासकार और इस्लामी विद्वान मुहम्मद ख़ोदमीर की किताब दस्तूरुल वुज़रा के मुताबिक़ एक बार सुल्तान को ख़बर मिली कि उसके एक वज़ीर अबुल अब्बास ने अपने घर में वीनस के जैसा ख़ूबसूरत बिना दाढ़ी वाला लौंडा छिपा रखा है। इतना सुनना था कि छटपटाते सुल्तान ने लौंडे की चाह में वज़ीर को फ़ौरन तलब किया। वज़ीर

ने इस बात से इनकार किया तो सुल्तान ने गुस्से में उसे नौकरी से बर्खास्त किया। सुल्तान उस लौंडे के लिए ऐसा पागल था कि बर्खास्त किए हुए वज़ीर के घर जा पहुँचा। जब वहाँ भी लौंडा नहीं मिला तो उसने हवस में धोखा खाए एक जानवर की तरह घर को तहस नहस कर डाला।

एक दूसरा जिहादी सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी हुआ। इसने गुजरात पर हमला करके राजा कर्ण देव की पत्नी महारानी कमला देवी को उठा लिया। साथ ही इस राज़ी ने एक लौंडे काफ़ूर हज़ार दीनारी को गुलाम बनाया। यह लड़का कभी हिंदू था जिसको १००० दीनारों में ख़रीद लिया गया था। इस तरह एक और हिंदू रानी को, जो कि एक दुधमुँहे बच्चे की माँ भी थी, ज़बरन इस्लाम कुबूल करवाया गया। बच्चा पिता के पास रह गया। माँ को सुल्तान ख़िलजी ले गया। मुसलमान बनाकर उससे निकाह रचाया गया।

धन्य है भारत देश! जिसमें ऐसे हैवान के दुधमुँहे बच्चों की माँओं से बलात्कार के ख़ौफ़नाक मंज़र भी कुछ फ़िल्म निर्माताओं को प्यार के क्रिस्से दिखाई देते हैं। ख़ैर, सुल्तान की रातों का लौंडा साथी काफ़ूर हज़ार दीनारी जो मलिक काफ़ूर के नाम से मशहूर हुआ, सुल्तान का सहायक बनाया गया। लौंडा जवानी की दहलीज़ पर था पर सुल्तान को एक और ही चिंता खा रही थी। जवान होकर अगर उसने बिस्तर में बगावत की तो? शिकार अगर शिकारी बन गया तो? बस इसी चिंता में इस लौंडे के अंडकोश काट दिए गए और उसे सदा सदा के लिए सुल्तान का मुलायम साथी बना दिया गया। मुस्लिम सुल्तान अपने लौंडों के साथ यह काम करते ही थे क्योंकि इस एक क़दम के कई फ़ायदे थे।

- सुल्तान के लिए हरम के चुने हुए लौंडे केवल सुल्तान के इस्तेमाल में आएँ, लौंडों के आपस के इस्तेमाल में नहीं।
- अब लौंडे शाही हरम की रखवाली के लिए भी रखे जा सकते थे और अब वहाँ की औरतों के किसी और के साथ भटक जाने का कोई डर नहीं था।
- लौंडे सदा चिकने और मुलायम रहते थे ताकि सुल्तान की ख्वाहिश पूरी होती रहे और शिकारी कभी खुद शिकार ना बन जाए।
- इस तरह के लौंडों को फ़ौज, हरम (शाही वेश्यालय) और रियासत की अहम ज़िम्मेदारी दी जा सकती थीं क्योंकि ऐसे लोगों को औरत या लौंडों का लालच देकर ख़रीदा नहीं जा सकता था।

सुल्तान मुबारक ख़िलजी एक और सुल्तान था जो लैला मजनू प्यार में नहीं मजनू-मजनू प्यार में दिलचस्पी रखता था। बिना दाढ़ी मूछों वाले लौंडे इसकी कमज़ोरी थे। खुसरो खान नाम का एक गिल्माँ (नीली आँखों वाला कमसिन लड़का) इसकी आँखों का तारा था। वह एक इस्लामी बीवी की तरह इसकी ज़रूरतें पूरी करता था। दिन, रात, सोते, जागते, वह इसके इर्द गिर्द ही रहता। सुल्तान ने इसको अपनी फ़ौज की बागडोर देकर दक्षिण की तरफ़ भी भेजा।

पर हाय री ज़ालिम तक्रदीर! तूने इस प्रेम कहानी का ख़ात्मा किस बेदर्दी से किया! हर रात की तरह उस रात भी खुसरो सुल्तान की बाँहों में था, साँसें तेज़ थीं, सुल्तान का दिल उत्तेजना में ज़ोर से धड़कता था, और जैसे ही प्यार चरम सुख को पहुँचने को था, खच्च से आवाज़ हुई। सुल्तान

शिकार हो चुका था। जिन बाहों ने आज तक बीवी का प्यार दिया, उन्हीं बाँहों ने सुल्तान के मर्मस्थल पर वार कर दिया था। सुल्तान आखिरी प्यार के आगोश में दुनिया से विदा हो चुका था। खुसरो अगला सुल्तान बन गया था।

इस्लामिक इतिहासकारों के मुताबिक सुल्तान सिकंदर लोधी लौंडेबाज़ी में फँसा एक और सुल्तान था। इसके हरम नीली आँखों वाले कमसिन जन्नती लौंडों से भरे होते थे। दिन में इसकी तलवार मूर्तिपूजक काफ़िरों के खून से लाल रहती थी जो इस्लामी राज क़ायम नहीं होने तक म्यान में जाने की इंकारी थी। पर रात होते होते इसकी तलवार की लाली मद्धम हो जाती। हर रात कल्लेआम से लौट कर इसको कमसिन लौंडों के चेहरे की लाली में ज़्यादा दिलचस्पी होती थी। एक एक करके लौंडों और गुलाम लौंडियों को पास बुलाकर यह अपने हरम में ही इस्लामी जन्नत का सा समां बाँध लेता था। रात रात भर फिर गाज़ी सुल्तान, लौंडे और लौंडियाँ आपस में मिलकर निबट लेते। सुल्तान सुबह उठ कर फिर से बुतपरस्त काफ़िरों के खिलाफ़ इस्लामी मोर्चा खोल देता।

सुल्तानों के अपने मर्द महबूबों से ये नज़दीकियाँ बहुत लोगों को नागवार गुज़रती थीं। जैसे एक औरत अपने शौहर के साथ किसी और औरत को नहीं देख सकती, उसी तरह एक गुलाम लौंडा दूसरे के साथ अपने सुल्तान को नहीं देख सकता था। यही हालत सुल्तान के गद्दी पर नज़र रखने वालों की थी। यही वजह थी कि जब एक इस्लामी सुल्तान को अगला गाज़ी सुल्तान क़त्ल करके गद्दी छीनता था तब उसके सब पसंदीदा लौंडों को भी क़त्ल किया जाता था कि कब ना जाने कौन सा लौंडा अपने शौहर का बदला ले ले। यह रिवाज पूरे इस्लामी सल्तनत में शुरू से आखिर

तक चला। गोरी से बाबर, बाबर से अकबर, अकबर से औरंगज़ेब और औरंगज़ेब से बहादुरशाह, इस्लामिक हरमों में कमसिन लौंडों के क़त्ल में कभी रियायत नहीं बरती गयी।

फ़रिश्ता में एक वाक़या है कि गाज़ी फ़िरोज़ शाह तुग़लक़ के मर्द महबूबों को किस तरह मुहम्मद बिन तुग़लक़ ने ३ दिन के भीतर रियासत छोड़ने का हुक्म दिया था जिसके नहीं मानने पर उनके क़त्ल का फ़रमान था। केवल कुछ ही आला दर्जे के कमसिन लौंडों पर यह हुक्म लागू नहीं था।

बरानी के मुताबिक़, अल्लाह के करम से सुल्तान गियासुद्दीन तुग़लक़ लौंडेबाज नहीं था। उसे कमसिन लौंडों के साथ कभी नहीं देखा गया। पर जैसे ही बात सुल्तान के बेटे मुहम्मद बिन तुग़लक़ की होती है, सिवाय शर्म के और कुछ नहीं बचता। अल्लाहताला का करम भी इस लौंडेबाज के अप्राकृतिक और घिनौने कामों पर पर्दा नहीं डाल सका। इब्र बतूता के मुताबिक़ इसी बात को लेकर बाप बेटे में घमासान मचा हुआ था।

समलैंगिता/लौंडेबाज़ी इन मुस्लिम शहज़ादों और सुल्तानों में इस क़दर फैली थी कि हर एक के हरम में कमसिन लड़कों के लिए अलग से विभाग बनाए गए थे।

ये सभी सुल्तान अपने राज्य के हर अहम पदों पर हिजड़ों (मर्द जिनके अंडकोश काट कर ज़बरदस्ती नामर्द बनाया जाता था) को लगाते थे। क्या दरबान और क्या वज़ीर, सब तरफ़ इन्हीं का बोलबाला था। पर सच बात तो ये है कि ये सब हवसी मुस्लिम सुल्तानों के मासूम शिकार थे जिनकी कोई ग़लती नहीं थी। जिनको जब तक चाहा जाता, बिस्तर

में इस्तेमाल किया जाता और जब चाहा जाता, क़त्ल कर दिया जाता या किसी और को बेच दिया जाता। जिनको उनकी मर्ज़ी के बिना अपने जिस्मानी खेल के लिए सुल्तान ज़बरदस्ती अपाहिज बनाते थे। और खेल देखिए कि इंसानियत के ऐसे धब्बों इन वहशी मुस्लिम सुल्तानों को ही हिन्दुस्तान के 'उदारवादी' इतिहासकार महान बताते हैं। इन यौन कुंठाओं के मरीज़, अफ़्रीम और गाँजा के नशेखोरों और हज़ारों बच्चों और लड़कों की ज़िंदगी ख़राब करने वालों के कला प्रेम और भवन निर्माण के ज्ञान के मनघड़ंत क्रिस्से सुनाकर नयी पीढ़ी को गुमराह करते हैं। अब वक़्त आ गया है कि इन झूठे मक्कार लोगों के ख़याली पुलिंदों का पर्दाफ़ाश हो। तो आज से कोई भी अगर आपके आगे मुस्लिम राज के गौरवशाली क्रिस्से सुनाए तो इन वहशी जानवरों के समलैंगिकता, लौंडेबाजी, काफ़िर औरतों पर हमला, अपहरण, ज़बरदस्ती इस्लाम कुबूल करवाने, बलात्कार करने, मासूम बच्चों और मर्दों के अंडकोश काटने, मासूम बच्चों के बचपन से खेलने वाले क्रिस्से सुनाकर उनके मुँह बंद कीजिए।

अध्याय २

मुस्लिम सुल्तान : गैरों पे करम अपनों पे सितम ?

हिंदुस्तान में भाड़े के इतिहासकारों की मानी जाए तो हिंदुस्तान में मुस्लिम सुल्तानों का आना जैसे तपते रेगिस्तान में बारिश होने जैसा था। 'हज़ारों सालों से' जातियों में बँटे हुए हिंदुस्तान को जैसे मुस्लिम सुल्तानों ने एकता और भाईचारे में पिरो दिया। जैसे अनपढ़ जाहिल लोगों के बीच में कोई ज्ञान का उजाला कर दे, उसी तरह शिल्प, भवन निर्माण, कला से ख़ाली हिंदुस्तान को जैसे मुस्लिम सुल्तानों ने ताज महलों और लाल क़िलों से एक नयी सभ्यता से पाट दिया था। 'इस्लाम में जात पात नहीं है' का नारा, ताज महल के मन घड़ंत क्रिस्से, हिंदुस्तान में बिरयानी लाना और ना जाने कितनी बिना सिर पैर की बातों से इन मुस्लिम आतंकवादियों के

१३०० साल के हमलों को हिंदुस्तान पर एक अहसान बताने की कोशिश हुई।

पर झूठ के पाँव नहीं होते। इन्हीं सुल्तानों और उनके टुकड़ों पर पलने वाले उनके समकालीन इतिहासकारों की लिखी किताबें कुछ और ही बयान करती हैं। गणित और विज्ञान के 'आविष्कारक' मुग़लों के दादाजी बाबर गैंडे और हाथी का फ़र्क़ नहीं कर सकते थे। १ के आगे ० रखने पर दस बनता है, उसके आगे एक और रखने पर सौ, फिर हज़ार, लाख, करोड़, हिंदुस्तान के इस 'गणित' पर दाँतो तले उँगली दबा लेने वाला बाबर लिखता है- "इस गिनती करने के ढंग से मालूम होता है कि हिन्दू बड़ा समृद्ध कबीला है"। लाख और करोड़ जैसे सामान्य और औसत अंकों से डर जाने वाले, अपने मुल्क में तंबू गाढ़ कर रहने वाले, अपने देश में आज तक भी ताजमहल जैसा एक महल नहीं बनवा पाने वाले हिंदुस्तान में आते ही आविष्कारक बन जाते थे! ज़बर्दस्त फ़लसफ़ा है!

आज जिधर देखो, मुसलमान क्रौम की बदहाली के लिए अमेरिका, इस्राइल या हिंदुस्तान को ज़िम्मेदार ठहराया जाता है। पर हकीकत क्या है? पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, इराक़, सीरिया, सोमालिया में बम फाड़ने वाले भी खुद को गाज़ी बताते हैं और मरने वाले खुद को शहीद। मुसलमान ही मरने वाला है और मुसलमान ही मारने वाला! आख़िर वो इस्लाम जिसके मायने मौलवी हज़रात के मुताबिक़ अमन, शांति और सलामती हैं, अपने इतिहास में केवल खून, लाशों और क़ब्रिस्तान की शांति के लिए ही क्यों जाना जाता है?

इस सवाल का जवाब इतिहास के उन पन्नों में दबा है जिसे भाड़े के

इतिहासकारों ने आज तक दुनिया से छिपा कर रखा। 'इस्लाम का मतलब अमन शांति है' के दावों पर खुद इस्लामी इतिहास दहाड़ मार मार कर हँस रहा है। दुनिया में पिछले १३०० सालों का इस्लामी इतिहास गद्दी के लिए अपने ही भाईयों, बाप और बेटों से मुर्गों की तरह लड़ने वाले जाहिल सुल्तानों की कहानियों से ज़्यादा कुछ भी नहीं है। सुल्तान की गद्दी के लिए अपने ही भाई की गर्दन काट कर बाप को भेंट करने वाले अचानक से अपनी एक बीवी (हरम में पाली हुई हज़ारों बीवियों और लौंडियों में से एक) पर इतने मेहरबान कैसे हुए कि उनकी याद में महल बनवा दिए? अपने ही खून के भाई, एक ही माँ के पेट से पैदा हुए भाई की आँखें निकाल लेने वाले सुल्तान ग़ैर मुसलमान के साथ क्या करते होंगे?

जिनको यकीन नहीं, ये अध्याय उनके लिए समर्पित है। आओ और देखो कि इस्लाम के आगाज़ से ही कैसे इस्लामी सुल्तान अपने ही बाप, भाई और बेटों के क़त्ल करते आए। ग़ैर मुसलमानों के साथ बर्ताव की झलकी अगले अध्यायों में देंगे।

इस्लाम दुनिया में पैग़म्बर मुहम्मद से चला। इस्लाम का खूनी इतिहास भी तभी शुरू हो गया था।

- बहुत से इस्लामी विद्वानों का मानना है कि खुद पैग़म्बर श्री मुहम्मद (सल्ल०) की मौत के पीछे उनकी बीवी श्रीमती आयशा और श्रीमती हफ़सा का हाथ था।
- श्री मुहम्मद (सल्ल०) के बाद लोगों के घोर विरोध के बावजूद श्री अबू बकर इस्लाम के पहले खलीफ़ा बने। बहुत से लोगों का मानना था कि यह पद पैग़म्बर के दामाद और सबसे भरोसेमंद आदमी

श्री अली को मिलना चाहिए था। इसी बात को लेकर मुसलमान दो टुकड़ों में टूट गया। शिया सुन्नी झगड़े की जड़ यही एक घटना है।

- श्री अबू बकर के बारे में बहुत से इस्लामी विद्वानों का मानना है कि उनके ही एक आदमी ने उन्हें ज़हर देकर मार दिया।
- उनके बाद दूसरे खलीफ़ा बने श्री उमर को एक मुसलमान गुलाम के हाथों जन्नत नसीब हुई।
- उनके बाद तीसरे खलीफ़ा बने श्री उस्मान। इनके समय तक कुरान के बहुत सारे रूप बन चुके थे। कौन सी असली है और कौन सी झूठी, इसका फैसला इन्होंने एक को चुन कर बाक़ी सबको जलवा कर किया। विद्वानों के मुताबिक़ इस क्रदम ने इनके बहुत से दुश्मन पैदा किए। एक दिन जब ये अपनी कुरान का पाठ कर रहे थे तो उसी वक़्त एक शख्स ने इन का क़त्ल कर दिया। बहुत से आलिम कहते हैं कि क़ातिल और कोई नहीं श्री अबू बकर का बेटा ही था।
- उनके बाद इस्लाम के चौथे खलीफ़ा बने श्री अली को भी बाक़ी खलीफ़ाओं की तरह अपने ही लोगों ने उस वक़्त मौत के घाट उतार दिया जब वो नमाज़ पढ़ रहे थे।

मुस्लिम खलीफ़ाओं का दर्दनाक अंत केवल यहीं नहीं थमा। श्री अली के क़त्ल के पहले ही पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की सबसे प्यारी और चहेती बीवी श्रीमती आयशा (जिनका निकाह अल्लाह के ख़ास हुक्म से पैग़म्बर के साथ ६ साल की उम्र में ही हो गया था) ने श्री अली पर चढ़ाई की। याद रहे कि श्रीमती आयशा इस्लाम के पहले खलीफ़ा श्री अबू बकर

की बेटी थीं। तो इस तरह इस्लाम के पहले खलीफ़ा की बेटी ने इस्लाम के चौथे खलीफ़ा के सामने अपनी फ़ौज उतार दी। श्री अली इस लड़ाई में इक्कीस साबित हुए। पैग़म्बर की बीवी श्रीमती आयशा को कैद करके मदीना में रखा गया। बहुत से विद्वानों का यहाँ तक भी कहना है कि श्रीमती आयशा को भी किसी क़रीबी ने क़त्ल किया।

इतना खून ख़राबा देख कर श्री अली के बेटे श्री हसन ने खलीफ़ा बनने से ही इनकार कर दिया। पर इतने से भी बात नहीं बनी। उनकी खुद की बीवी ने इनका क़त्ल किया। कहा जाता है कि उनकी बीवी मिस्र के उस गवर्नर मुआविया की साज़िश का हिस्सा थी जो श्री हसन के खलीफ़ा नहीं बनने पर अब खलीफ़ा बन चुका था।

मुआविया के बाद उसका बेटा यज़ीद खलीफ़ा बना। इसने हैवानियत के ऐसे नंगे नाच किए जिससे इंसानियत ही नहीं, इस्लामियत भी काँप उठी। इसने पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के एक और पोते श्री हुसैन को मैदान ए करबला में घेर कर प्यासा मार डाला। इन्हीं की याद में शिया हर साल मुहर्रम मनाया करते हैं। श्री हुसैन की मौत के साथ ही पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के बीज का नाश कर दिया गया। उनके सारे साथियों को भी मौत के घाट उतारा जा चुका था। तो इस तरह इस्लामी इतिहास का पहला ही पन्ना इस्लाम के संस्थापक के बीज/सच्चे साथियों के बेरहम कत्लेआम से शुरू हुआ।

कुछ साल बीते। खलीफ़ा वलीद के मरते ही उसके भाई सुलेमान ने खलीफ़ा की गद्दी क़ब्ज़ा ली। साथ ही वो सभी लोग जो वलीद के बेटे को खलीफ़ा बनाना चाहते थे, क़त्ल कर दिए गए।

खलीफ़ा वलीद के हुक्म पर गाज़ी मुहम्मद बिन क़ासिम ने हिंदुस्तान पर हमला किया। पर नए खलीफ़ा सुलेमान के हुक्म पर उसे बैल की खाल में सिल कर मार डाला गया। राजा दाहिर की बेटियों को खलीफ़ा के पास गुलाम बना कर भेजने से पहले खुद उनका 'इस्तेमाल' करने के इल्ज़ाम में इस गाज़ी को कुत्ते की मौत मारा गया। और इसी तरह ना जाने कितने इस्लामी खलीफ़े ज़हर, खंजर और गुप्त बीमारियों से मारे गए। इस हमले के जवाब में हिंदुओं ने अरबों पर जवाबी हमला किया। इतना भयानक हमला कि अगले २५० साल तक फिर कोई मुस्लिम सुल्तान हिंदुस्तान पर आँख उठाने की हिम्मत नहीं कर सका।

ढाई सदियों बाद हिंदुस्तान पर दूसरा मुस्लिम हमला हुआ। नौ बीवियों और सैंकड़ों गुलाम लौंडियों वाला महमूद राजनवी इस्लामी गाज़ियों में सोमनाथ तोड़ने वाला गाज़ी के नाम से मशहूर हुआ। बाप ने जब इसे गद्दी ना देकर इसके भाई को दे दी तो इसके गाज़ी दिल को ऐसी ठेस पहुँची कि भाई को गद्दी से उतार कर जेल में सड़ा कर मार डाला।

गाज़ी महमूद जैसे ही अल्लाह को प्यारा हुआ, उसके बेटे मसूद और मुहम्मद में अगला गाज़ी बनने के लिए जंग शुरू हो गयी। मसूद लड़ाई में इक्कीस निकला। इस गाज़ी ने अपने भाई मुहम्मद की आँखें निकाल लीं। पर मुहम्मद ने भी कच्ची गोलियाँ नहीं खेली थीं। इसने साज़िश करके मुहम्मद के ख़िलाफ़ बगावत करवा दी और उसे पकड़ लिया।

कहानी यहीं ख़त्म नहीं हुई। गाज़ी मुहम्मद ने भाई मसूद को एक दिन मौक़ा पाकर जन्नत पहुँचा दिया और सुल्तान की गद्दी पर बैठा। पर वक़््त को कुछ और ही मंज़ूर था। मसूद का बेटा मदूद एक दिन बदला लेने आ

पहुँचा। देखते ही देखते मदूद ने गाज़ी मुहम्मद सुल्तान को बंदी बना लिया और क़त्ल कर दिया। भाई भाई, बाप बेटे, चाचा भतीजे का यह लाजवाब प्यार किसके पत्थर दिल को मोम की तरह ना पिघल देगा?

सुल्तान महमूद ग़जनवी के हमलों के १४० साल बाद तक हिंदुस्तान पर गाज़ियों का हमला नहीं हुआ। सुल्तान के भतीजे की गाज़ियों की फ़ौज को हिंदू लड़ाकों ने पैरों तले रौंद डाला।

हिंदुस्तान पर अगला हमला गाज़ी सुल्तान मुहम्मद गौरी ने किया। लोमड़ी की तरह चालाक, ऊदबिलाव की तरह भेदे और छिपकली के समान भौंडी चपलता का मालिक ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती इसका गुरु था। इसी के कहने पर गौरी हिंदुस्तान पर हमलावर हुआ और बलात्कारों और लाशों के नए कीर्तिमान बनाए गए। लाखों लाशों से पटी धरती और औरतों की कभी ना ख़त्म होने वाली चीखें इस मोईनुद्दीन चिश्ती का चमत्कार समझी गयीं जिसके चलते लाखों काफ़िर अल्लाह के दीन में समा गए।

हज़ारों काफ़िर औरतों को उठा लाने की मर्दानगी दिखाने वाला सुल्तान गौरी अपनी बीवियों को कभी बच्चा नहीं दे पाया। इसके चलते आख़िरकार उसने अपने हरम के लौंडों कुतुबुद्दीन ऐबक, बख़्तियार ख़िलजी और कुछ और कमसिन लड़कों को अपना वारिस चुना। पर अल्लाह को कुछ और ही मंज़ूर था। सुल्तान गौरी के ही रिश्तेदार अली मर्दान ने बख़्तियार ख़िलजी की बोटी बोटी नुचवा डाली। उसका बेटा आराम शाह कुतुबुद्दीन ऐबक के बाद गद्दी पर बैठा ही था कि ऐबक के हरम के एक गुलाम लौंडे इल्तुमिश, जो इत्तेफ़ाक से सुल्तान का दामाद भी था, ने उसका क़त्ल

कर दिया। हर बार की तरह इस बार भी सुल्तान का करीबी हरमी लौंडा सुल्तान को बिस्तर में दगा देकर खुद सुल्तान बन चुका था।

इल्लुत्मिश ने अपनी बेटी रज़िया को मुस्लिम सल्तनत सौंपी मगर तभी उसके बेटे रूकनुद्दीन ने धावा बोला और गद्दी छीन ली। रज़िया ने गुस्से में अपने भाई और उसकी माँ (अपनी सैकड़ों सौतेली माँओं में से एक) का क़त्ल करवा दिया। इसी रज़िया ने बाद में एक गुलाम लौंडे के साथ जिस्मानी ताल्लुक कायम करके मुस्लिम सल्तनत की इज़्ज़त को चार चाँद लगाए। यही लौंडा रज़िया का मुख्य सलाहकार बनाया गया।

पर हाय री तक़दीर! ना जाने अल्लाह ने मुस्लिम सुल्तानों की जिंदगियों में इतने इम्तेहान क्यों लिखे थे? पंजाब के गवर्नर अल्लूनिया ने बगावत बुलंद कर दी। सुल्तान रज़िया और उसके लौंडे आशिक़ को बंदी बना लिया गया। आशिक़ बेदर्दी से क़त्ल कर दिया गया और सुल्तान रज़िया को नए सुल्तान के बिस्तर पर इन्तेज़ार करने का फ़रमान मिला। इसी बीच रज़िया के एक और भाई बहरम शाह ने दिल्ली का तख़्त हथिया लिया। अल्लूनिया और रज़िया ने विरोध किया मगर वो काट डाले गए।

वक़््त बीता मगर मुस्लिम सुल्तानों की शांति और भाईचारे की फ़ितरत नहीं। बहरम शाह क़त्ल कर दिया गया और मसूद शाह नया सुल्तान समझा गया। मगर कुछ ही दिनों में यह सुल्तान भी अपने भाई नसीरुद्दीन और उसके दामाद बल्बन (अपने वक़््त का मशहूर बलात्कारी और सुल्तान इल्लुत्मिश का मशहूर मर्द महबूब) के हाथों ज़लील होकर गद्दी से एक खटमल की तरह उतार कर मसल दिया गया।

मुस्लिम सुल्तानों का इस्लामी भाईचारा यहीं नहीं थमा। दामाद बल्बन

ने ससुर नसीरुद्दीन को ज़हर देकर जन्नत पहुँचा दिया और तख्त पर क़ब्ज़ा किया। इसके बाद इसने अपने भाई शेरखान सीकर को १२७० में मार डाला। १२८७ में इसने खुसरो को अपना वारिस घोषित किया जिसके मरने के बाद बल्बन का पोता कैकाबाद सुल्तान के तख्त पर बैठा। पर इस्लामी ग़ाज़ी सेनापति जलालुद्दीन ख़िलजी ने सुल्तान और उसके तीन साल के बच्चे को ज़मीन में दफ़न कर दिया। और इस तरह मुस्लिम सुल्तानों के एक सुनहरे दौर - गुलाम वंश का ख़ात्मा हुआ। वक्रत भाईचारे के एक और नए अध्याय - ख़िलजी वंश की तरफ़ बढ़ गया।

अलाउद्दीन ख़िलजी सुल्तान जलालुद्दीन का भतीजा था। अल्लाह के फ़ज़ल से वह सुल्तान का दामाद भी बना। छिपकली के जैसी तेज़ी और तिलचट्टे जैसी एकाग्रता का मालिक अलाउद्दीन बहुत वक्रत तक अपनी ग़ैर इंसानी फ़ितरतों पर लगाम नहीं लगा सका। १२९६ में इसने अपने चाचा और ससुर अलाउद्दीन का सर धड़ से जुदा कर दिया। कटे सर को भाले की नोक पर उठाकर यह दिल्ली शहर में दाख़िल हुआ। अल्लाहु अकबर के नारों के बीच एक मुस्लिम सुल्तान का सर दूसरे मुस्लिम सुल्तान के भाले पर लटकता हुआ मानों इस्लामी भाईचारे और इंसानियत की नयी कहानी कह रहा था। इस बीच जलालुद्दीन की बीवी मलिकजहां ने अपने बेटे को अगला सुल्तान घोषित किया। जिस पर अलाउद्दीन ने मलिकजहां को क्रैद कर लिया और उसके बेटों की आँखें फोड़ दीं। जो बीच में आया उसको क़त्ल कर दिया गया। उनकी दौलत छीन ली गयी और इनकी औरतों को शाही हरम में लौंडी बना कर बलात्कार किया गया। ग़ाज़ी सुल्तान अला-उद्दीन अन्याय और पक्षपात का घोर विरोधी था। इसलिए जब इसने बाहर वालों को क़त्ल किया तो खुद की बीवी और बच्चों को भी जेल में डाल दिया। अपने एक बच्चे को अपने ही हाथों से क़त्ल कर दिया।

गाज़ी अलाउद्दीन एक अब्बल दर्जे का लौंडेबाज था। इसके हरम के मर्द गुलामों में से एक मलिक काफूर था जो इसका अज़ीज़ था। यह एक हिंदू बच्चा था जिसे इस्लाम कुबूल करवा कर मुस्लिम सुल्तान ने लौंडेबाज़ी की अज़ीम रिवायत के लिए तैयार किया था। यही मलिक काफूर आगे चलकर अलाउद्दीन की फ़ौज का सेनापति बनाया गया। फिर एक दिन काफूर ने अलाउद्दीन ख़िलजी को मौत के घाट उतार दिया। उसके बच्चों की आँखें निकाल लीं और फिर उन्हें क़त्ल कर दिया। फिर मशहूर मुस्लिम सुल्तानी रिवायत के अनुसार काफूर ने ख़िलजी की बीवी को अपनी बीवी बनाया। इसी बीच ख़िलजी का एक बेटा मुबारक शाह काफूर की क़ैद से भाग निकला और यही काफूर की मौत साबित हुई। मुबारक ने काफूर को क़त्ल किया और उसके छह साल के भाई शियाबुद्दीन को अंधा करके मार डाला।

इसी के साथ मुबारक शाह ने कुतुबुद्दीन की पदवी अपने नाम में जोड़ ली और फिर शुरू किया वो नंगा नाच जिसने अब तक के सारे बेशर्म मुस्लिम सुल्तानों को भी शर्म से लजा दिया। इसके महल में चारों तरफ़ औरतें खड़ी की जाती थीं जिन्हें कुछ भी पहनने की इजाज़त नहीं थी। यह जहाँ जाता था, ये बेबस औरतें इसके साथ साथ इसी हालत में चलती थीं। उनके बेबस चेहरों और आँसुओं को देखकर इसकी मर्दानगी सातवें आसमान को पार कर जाती थी। अक्सर यह नामर्द मुस्लिम सुल्तान औरतों के लिबास पहन कर महलों के चक्कर काटता था और अति उत्साह और जोश में पगलाए हुए सुअर की तरह ज़मीन में लोटता था। औरतों के लिबास में इसके चिनौने काम शैतान को भी मात देते थे। सैकड़ों औरतों की ज़िंदगी अपनी हवस की आग में जला देने वाले इस मुस्लिम सुल्तान ने अपने ही भाई का क़त्ल करके उसकी बीवी देवल से निकाह किया। किसी भी बगावत

को रोकने के लिए इसने अपने सभी रिश्तेदारों की या तो हत्या कर दी या आँखें निकाल लीं। फिर एक दिन अपने ही एक मर्द महबूब खुसरो के हाथों से मुबारक अल्लाह को प्यारा हो गया। देवल खुसरो की बीवी बन चुकी थी। हमेशा की तरह सब कुछ प्यार मुहब्बत से चल ही रहा था कि खुसरो को एक गुलाम लौंडे गयासुद्दीन तुगलक के हाथों जन्नत रवाना होना पड़ा। और इस तरह तुगलक वंश का सुनहरा दौर शुरू हुआ।

सुल्तान गयासुद्दीन के होनहार बेटों में बाप का सिर काटकर इस्लामी सल्तनत की सुनहरी रिवायत को बरकरार रखने की होड़ लगी थी। आखिर में बाज़ी बेटे मुहम्मद बिन तुगलक के हाथ लगी। अपने बाप और भाइयों की बोटी बोटी काटने के बाद यह गाज़ी इस्लाम की खिदमत करने सुल्तान की गद्दी पर बैठा। बगावत कुचलने के लिए बहुत से रिश्तेदारों को घिनौने तरीकों से क़त्ल किया गया। अपने भतीजे के बदन से खाल को नुचवाकर उसकी बीवियों के मुँह में ठूस दिया गया।

काफ़िर हिंदू के खिलाफ़ जिहाद की मर्दानगी रखने वाला यह गाज़ी मुहम्मद जिस्म से नामर्द था। इसके मरने के बाद मुस्लिम सल्तनत फ़िरोज़शाह नाम के शख्स के पास आयी जो कि गयासुद्दीन के बाप की एक नाजायज़ औलाद का बेटा था। इसने कल्लेआम की एक नयी लहर चला कर बगावत को ठंडा किया। अस्सी साल के एक बुजुर्ग ख्वाजा जहाँ को उस वक़्त क़त्ल किया गया जब वह नमाज़ पढ़ रहा था। इसके बाद इसने अपनी सारी ज़िंदगी शाही हरम में लड़कों, लड़कियों और जानवरों के बीच गुज़ारी।

फ़िरोज़शाह के बेटे मुहम्मद ने उसके वज़ीर का क़त्ल कर दिया पर फिर

भी तख़्त पर नहीं बैठ सका। फ़िरोज़शाह के मरने के बाद उसके पोते ने पाँच महीने तक गद्दी सम्भाली। और फिर हर बार की तरह उसे क़त्ल कर दिया गया और क़ातिल फ़िरोज़शाह का एक बेटा ही था। मगर फ़िरोज़शाह के बेटे मुहम्मद के हाथों वह क़त्ल हुआ।

मुहम्मद के बाद उसकी गद्दी उसके बेटे सिकंदर ने सम्भाली। कुछ ही दिनों में वह क़त्ल कर दिया गया। फ़िरोज़शाह का एक और बेटा नुसरत दिल्ली के एक दूसरे हिस्से का मुस्लिम सुल्तान बना हुआ था। ४ साल तक इन मसख़रों ने अपने खेल दिखाए। और फिर एक दिन हिंदुस्तान पर आदमख़ोर गाज़ी तैमूर का हमला हुआ। बाबर और अकबर जैसे बला-त्कारी मुग़ल हैवान इसी गाज़ी के बीज थे।

अकबर महान के इस पड़दादे ने दुनिया की आबादी के करीब ५% हिस्से (१.७ करोड़ लोग) को क़त्ल किया। निहत्थे बच्चों, औरतों, बूढ़ों और इंसानों के आगे इसकी तलवार रोके नहीं रुकती थी मगर जब हिंदू जाटों से इसका सामना हुआ, इसकी तलवार मानों एक बेवफ़ा सनम की तरह रुठी रही। जाटों ने इसकी फ़ौजों को घेर कर कुत्तों की तरह मारा। इसके गाज़ियों के सीनों में से कलेजे निकाल के उनके हलक में ठूस दिए गए।

‘इस्लाम’ का यह गाज़ी आज हिंदुस्तान के बहुत से मुसलमानों का हीरो है। अपने हिंदू और मूर्ति पूजा के विरोध में अंधे हो चुके जिहादी यह नहीं जानते कि हिंदुस्तान के राजवा से पहले यह नीच अपने सगे रिश्तेदारों का राजवा कर चुका था। बहुत से इतिहासकारों के मुताबिक़ अपनी माँ को क़त्ल करके अपने गाज़ी के रुतबे को क़ायम करने की इस्लामी रिवायत

इसी हैवान ने शुरू की। क्या माँ और क्या भाई, इसने हर एक के सीने में खंजर उतारे। बात चल निकली है तो जान लीजिए, अपने हिंदुस्तान के दिनों को याद करते हुए अपनी डायरी में तैमूर लिखता है कि जामा मस्जिद उसके वक़्त में वजूद में थी और हिन्दू उस जगह पर इकट्ठे हुए थे। इससे साफ़ है कि जामा मस्जिद एक हिंदू मंदिर है जिसे शाहजहाँ नामी मुग़ल ने अपने जिहादी मंसूबों के तहत बाक़ी मंदिरों की तरह मस्जिद में बदला था।

तैमूर के हमलावर होते ही दिल्ली के वो दो गाज़ी सुल्तान दुम दबा के भाग निकले। उसके मरते ही उसके बेटों में खून खराबा हुआ जैसा कि खलीफ़ाओं के वक़्त से आज तलक होता आया था। आख़िर में इसके एक बेटे ने बाक़ी बेटों के ऊपर फ़तह पाई और तख़्त सम्भाला। यदि आपको आज भी इस बात पर ताज्जुब है कि हिंदुस्तान पर हुकूमत करने वाले 'महान' मुग़लों ने महानता कहाँ से पाई थी तो जवाब यहाँ है। यही तैमूर आगे जाकर मुग़लों का महान पूर्वज बना।

तैमूर हिंदुस्तान में क़त्ल ए आम करके वापस लौट चुका था। दो भगौड़े सुल्तान वापस आ चुके थे। और एक दिन एक ने दूसरे को जन्नत की राह दिखाई। इस वक़्त तक दिल्ली की सल्तनत आज के एन सी आर (NCR) तक सिमट चुकी थी। सुल्तान भी एक दिन चल बसा। एक साल तक उसके वज़ीर ने गद्दी सम्भाली। फिर एक दिन उसे कैद कर लिया गया। तैमूर के ही एक जोड़ीदार ख़िज़्र खान ने इस वारदात को अंजाम दिया। इसे वैसे भी तैमूर के साथ मिलकर हिंदुस्तान को लूटने और तहस नहस करने का अच्छा अनुभव था। अब इसने सैय्यद वंश की नींव डाली।

मुसलमानों में अपनी भक्ति पैदा करने के लिए इसने खुद को पैग़म्बर

मुहम्मद का वंशज प्रसिद्ध किया। पर इतना सब करने पर भी एक छोटे से ज़मीन के टुकड़े से बाहर इसकी सल्तनत न पनपी। इसकी हैसियत आज के सोमालिया के डाकुओं से बढ़कर न थी। इसके बाद इसकी सल्तनत मुबारक शाह ने सम्भाली जो जल्द ही क़त्ल कर दिया गया। फिर मुबारक शाह गद्दी पर बैठा। दस साल तक राज करने के बाद अपने ही सेनापति बहलोल लोदी के हाथों क़त्ल कर दिया गया।

बहलोल लोदी के मरते ही उसके भाई और बेटे पागल कुत्तों की तरह एक दूसरे पर टूट पड़े। आख़िर में तीसरे बेटे निज़ाम खान ने बाक़ी सब पर फ़तह पाई और अगला सुल्तान बना। यही आगे चलकर सिकंदर लोदी की पदवी से नवाज़ा गया। गले के कैंसर की वजह से एक दिन वह चल बसा और इब्राहिम लोदी तख़्त पर बैठा। इब्राहिम के लिए सफ़र इतना आसान न था। इसे अपने भाई जलाल खान, चाचा आज़म खान और चचेरे भाई फ़तह खान को भी हराना था। जलाल मार डाला गया और बाक़ी दो गुलाम बना लिए गए। आज़म के दूसरे बेटे इस्लाम खान ने विद्रोह किया। एक ख़ूँखार लड़ाई के बाद बाप-बेटे क़त्ल कर दिए गए।

पर हर बार की तरह, शिकारी को भी एक दिन शिकार बनना था। लोदी के रिश्तेदारों के न्योते पर बाबर लोदी की गर्दन उतारने हिंदुस्तान आया और अपने काम को अंजाम दिया। और इस तरह बाबर के साथ मुग़ल वंश की शुरुआत हुई।

भारत के महानतम शासक वंश के नाम से मशहूर मुग़ल वंश की स्थापना बाबर ने की। पिता की तरफ़ से तैमूर का खून, माँ की तरफ़ से चंगेज़ खान का खून! फिर महानता में क्या संदेह हो सकता था? अपने

जीवन में हज़ारों हिंदू मुसलमानों के सिरो को काटकर उनसे मीनारें बनाकर शहरों में घुमाने वाला यह महान आज के हिंदुस्तान के कुछ जिहादी और धर्मनिरपेक्ष (सेक्युलर) जमात का पैगम्बर बना हुआ है। वजह एक है। राम मंदिर से नफ़रत। राम मंदिर तोड़कर बनाई गई इस जिहादी दहश-तगर्द के नाम की मस्जिद (?) से इस जमात की मुहब्बत कुछ यूँ है कि जिसके आगे एक महबूबा भी शरमा जाए। क्या हुआ जो इसने लाखों क़ल्ल और बलात्कार किए? क्या इस 'छोटी सी वजह' के चलते इसकी मस्जिद (?) गिरा दी जाएगी?

खैर, बाबर ख़ुद को हिंदुस्तान का बादशाह समझने लगा। उसके पड़दादे के पड़दादे तैमूर ने ख़िज़्र खान को सल्तनत सौंपी थी, इस बात ने उसकी खुशफ़हमी को और हवा दी। दूसरी तरफ़, फरगना में ख़ुद के चचाओं और मामाओं के हाथों पिटकर बाबर किसी बिलबिलाए कुत्ते की तरह दुम दबाकर भागा था। हिंदुस्तान पर हमलावर होने पर अपने परिवार के प्यार का बदला उसने हिंदुस्तान के ख़ून से लिया।

अपने रिश्तेदार मेहदी ख्वाजा को सल्तनत सौंप कर बाबर अल्लाह को प्यारा हुआ। मरने के पहले अपनी ज़मीन को चार हिस्सों में बाँट कर बेटों कामरान, अस्करी, हिंदाल और हुमायूँ के नाम किया। पर हर बार की तरह इस बार भी बाप का लिहाज़ न किया गया। उसके मरते ही उसकी क़ब्र पर चारों भाई तिलचट्टों की तरह लड़ बैठे। हुमायूँ ने बाज़ी मार ली और अगला सुल्तान बन बैठा।

कन्नौज की लड़ाई में लुटने पिटने के बाद हुमायूँ भागकर लाहौर पहुँचा जहाँ उसके सौतेले भाईयों कामरान और अस्करी की हुकूमत थी। जिन

भाईयों को धोखा देकर सुल्तान बना था, आज उन्हीं भाईयों को एक बाप की दुहाई दी। पर भाईयों ने भी कच्ची गोली न खेली थीं। आखिर वे भी उसी बाप के बीज थे। घायल भाई को बचाना तो एक तरफ़ रहा, उसके दुश्मन शेरशाह के साथ मिलकर हमले का मंसूबा बाँध लिया।

भाईयों से धोखा खाकर हुमायूँ ईरान की तरफ़ भाग निकला। इधर भाई कामरान ने ईरान के शाह के नाम संदेश भेजा। हुमायूँ दो, काबुल लो। इस तरह बाप की गद्दी के लिए फिर से भाईयों में एक खूँरेज जंग हुई। आखिर में जीत हुमायूँ की हुई। इस्लाम शाह ने कामरान को हुमायूँ के हवाले किया। प्यारे भाई हुमायूँ ने कामरान की आँखों को अपने हाथों से फोड़ा। खंजर घोंप कर आँखें बाहर निकालीं। फिर फूटी हुई आँखों के रिसते हुए ज़ख्मों में नमक और नींबू का रस भर दिया गया। मज़हबी रिवायत में कोई कमी न रहे इसलिए अंधे कामरान को पाक हज के लिए रवाना कर दिया गया जहाँ उसे गुमनामी की मौत मरने के लिए अकेला छोड़ दिया गया।

अब बारी बाबर के दूसरे बेटे अस्करी की थी। इसको कैद कर लिया गया और बाद में क़त्ल। अपने इसी भाई की बेटी के साथ अपने बेटे जलाल का निकाह करवाकर भाई बहन के रिश्ते को एक नया नाम दिया।

हुमायूँ को हराकर शेरशाह सूरी ने अगले ५ साल के लिए हिंदुस्तान में जिहादी क़त्ल ए आम की बागडोर सम्भाली। फिर एक दिन अपनी ही बंदूक/तोप फट जाने की वजह से वह अल्लाह को प्यारा हुआ और उसका दूसरा बेटा इस्लाम शाह सूरी तख़्त पर बैठा। बड़े भाई आदिल खान ने भी गद्दी हथियाने की कोशिश की लेकिन भाई इस्लाम शाह के हाथों वह क़त्ल

कर दिया गया।

इस्लाम शाह किसी मूल रोग के चलते दुनिया से रुखसत हुआ और १२ साल का फ़िरोज़ शाह गद्दी पर बैठा। पर यह बालक सुल्तान अपने ही चचा मुहम्मद आदिल शाह के हाथों मौत के घाट उतार दिया गया।

सुल्तान मुहम्मद की लड़ाई अपने ही रिश्तेदारों इब्राहिम खान और अहमद खान से छिड़ गयी। देखते ही देखते उसके दिलेर सेनापति हेमचंद्र विक्रमादित्य (हेमू) ने मौके का फ़ायदा उठाया और एक फ़ैसलाकुन लड़ाई में इन सब को हराकर दिल्ली पर क़ब्ज़ा किया।

सूरियों की आपस की फूट का फ़ायदा उठाकर हुमायूँ ने एक बार फिर दिल्ली पर हमला बोला। पर यह साल उसके लिए नेक साबित ना हुआ। शराब के नशे में धुत होकर एक दिन राजवा ए हिंद का सपना देखते देखते वह सीढ़ियों से गिरा और अल्लाह को प्यारा हुआ।

उसके बाद उसके १३ साल के बेटे अकबर ने हुमायूँ के वफ़ादार बैरम खान की देखरेख में गद्दी सम्भाली। एक नामुमकिन लड़ाई में ताक़तवर राजा हेमू को पकड़ लिया गया। बेहोशी की हालत में उसे अकबर के सामने पेश किया गया। अपनी महानता के लिए मशहूर सुल्तान अकबर ने फ़ौरन अपनी तलवार निकाल कर हेमू का सर क़लम करने की नाकाम कोशिश की। कई बार की कोशिश के बावजूद हेमू का फ़ौलादी सर सुल्तान अकबर के नरम हाथों की तलवार से न कट सका। सुल्तान गुस्से से लाल पीला हुआ जाता था। फिर आख़िर में उस्ताद बैरम खान ने सुल्तान के कली समान मसले हुए दिल की लाज रखी। उसने बेहोश पड़े हेमू का सर काटकर अकबर महान को गाज़ी के रुतबे से नवाज़ा।

पर तक्रदीर को कुछ और ही मंज़ूर था। कुछ ही वक़्त बाद सुल्तान अकबर ने उस्ताद बैरम को मक्का भागने पर मजबूर कर दिया और रास्ते में ही उसे क़त्ल कर दिया गया। उस्ताद बैरम को क़त्ल करके माँ समान उसकी बीवी के साथ अकबर महान ने निकाह रचाया। जिससे आज तक माँ का प्यार मिला, आज के बाद उससे बीवी का प्यार भी मिला। अकबर सुल्तान को महान यूँ ही नहीं कहा जाता !

इस्लामी सल्तनत की रिवायत को क़ायम रखते हुए अकबर महान ने अपने चचेरे भाइयों को यातनायें देकर क़त्ल किया। वक़्त बदला मगर इस्लामी इतिहास नहीं। अकबर दक्कन में अपने जंगी अभियान पर था तभी उसके खिलाफ़ एक बगावत हुई। बगावत करने वाला कोई और नहीं, प्यारा बेटा जहांगीर निकला। बाप की ग़ैर हाज़िरी का फ़ायदा उठा कर जहांगीर खुद को सुल्तान घोषित करने के मंसूबे लेकर आगरा की तरफ़ बढ़ा। बाप अकबर को पता चला तो दक्कन का मोर्चा बीच में छोड़ कर आगरा भागा भागा आया और अनहोनी को टाला।

बॉलीवुड फ़िल्मों में प्यार के लिए पूरी दुनिया से लड़ जाने का जज़्बा रखने वाला शहज़ादा सलीम उर्फ़ जहांगीर असल में दुनिया की सल्तनत पाने के लिए अपने प्यारे बाप से लड़ जाने के लिए मशहूर था। सलीम ने दो बार अकबर को ज़हर देकर मारने की कोशिश की। बाप बेटे की यह रंजिश इस्लामी इतिहास की उस शर्मनाक रिवायत की बानगी है जिसको लेकर आज भी इंसानियत का सर शर्म से झुक जाता है। कई इतिहास-कारों के मुताबिक़ लड़ाई मनभावती के ऊपर हक़ को लेकर थी। दोनों ही मनभावती को चाहते थे। इतिहासकार आज तक भी इस बात पर एक मत नहीं हैं कि असल में मनभावती किसकी बीवी थी। बॉलीवुड की मनघड़ंत

कहानियों और चकाचौंध के परे मनभावती जोधा की सच्चाई दो हवसी बाप बेटों के बीच फँसी एक लाचार लड़की से बढ़कर कुछ नहीं थी। इसकी झलक आगे आने वाले अध्याय में आपको मिलेगी।

खैर, अकबर बादशाह किसी संभावित ज़हर के असर से अल्लाह को प्यारा हुआ। मरने के पहले ही बेटा जहांगीर बाप के सर पर पैर रख कर अपनी अलग सल्तनत चलाने लगा। अल्लाहाबाद के इस सुल्तान ने अपने नाम के अलग सिक्के भी चलाए। अपने बाप पर एक बड़ी सेना लेकर चढ़ाई की और उसके एक नवरत्न अबुल फ़ज़ल को क़त्ल किया।

अकबर के मरते ही जहांगीर सुल्तान बना। पर मुग़लिया रिवायत के चलते उसके बड़े बेटे खुसरो ने उसके खिलाफ़ बगावत कर दी। खुसरो को पकड़ लिया गया। बाप जहांगीर ने बगावती बेटे की आँखें नुचवा डालीं। तड़पते हुए अंधे बेटे को उसके घर में नज़रबंद करके फेंक दिया गया। जहांगीर ने अपनी हिंदू बीवी मानबाई, जो कि मान सिंह की बहन भी थी, को क़त्ल किया। इस जिहादी सुल्तान ने हिंदुओं और सिखों के गुरु श्री अर्जन देव जी और उनके सैकड़ों शिष्यों को बेरहमी से क़त्ल किया। गुरु का अपराध केवल यह था कि उन्होंने जहांगीर के बेटे खुसरो के माथे पर 'हिंदू' तिलक लगा दिया था जब वह अपने बाप से बगावत करके उनकी शरण में आया था।

जहांगीर ने मिर्ज़ा बेग को क़त्ल किया और उसकी बीवी को अपने हरम में खींच लिया। यही नूरजहां के नाम से मशहूर हुई। इसी नूरजहां की भतीजी का निकाह जहांगीर ने अपने बेटे ख़ुर्रम (शाहजहाँ के नाम से मशहूर) से किया। नूरजहां के पहले शौहर से हुई बेटी का निकाह

जहांगीर ने शाहजहाँ के भाई शहरयार से करवाया। इस तरह माँ की बेटी का निकाह बाप के बेटे से हुआ। गाली गलौच में सुनी जाने वाली घटिया क्रिस्म की रिश्तेदारियाँ असल में कैसी दिखती हैं, यह दुनिया को मुगलों से पता चला।

इस तरह के पाक सम्बंध क्रायम करवाने के बाद वही हुआ जो होता है। जानवरों की तरह शादी में भाई, बहन, माँ और बाप जैसे रिश्ते ना देखने वाले मुगल कुत्ते बिल्लियों की तरह सल्तनत के लिए लड़ते रहे। नूरजहाँ ने जहांगीर के नशे की लत को अच्छे से भुनाया। अकबर महान का यह शहज़ादा सलीम असल में अपने अब्बूजान के जैसा ही अव्वल दर्जे का अफ़ीमची था। हर वक़्त नशे में रहने की वजह से इसका दिमाग़ घोंघे की चाल से चलता था। नूरजहाँ ने सल्तनत की लड़ाई में पहले शाहजहाँ का साथ दिया। पर फिर पाला कर शहरयार के पाले में चली गयी। शाहजहाँ ने विद्रोह किया। परिवार के कई लोगों को ३ साल के अंदर अंदर क़त्ल किया। उधर लाचार जहांगीर अफ़ीम के नशे में एक दिन अल्लाह को प्यारा हुआ।

शाहजहाँ दिल्ली से बाहर था कि नूरजहाँ ने उसके भाई असफ़ खान को उसकी मदद करने के जुर्म में अगवा करवाने की कोशिश की। इसी बीच शाहजहाँ ने अपने अंधे बड़े भाई को (जिसे अब्बूजान जहांगीर अपने हाथों से अंधा कर गए थे) को ज़हर देकर दुनिया से रुखसत किया। इधर असफ़ खान अपने बेटे को सुल्तान घोषित कर चुका था। दूसरी तरफ़ नूरजहाँ ने शहरयार को सुल्तान घोषित कर दिया। एक गली में दो कुत्ते तो फिर भी साथ रह सकते थे मगर एक मुगलिया सल्तनत में दो सुल्तान कैसे रहते? लड़ाई छिड़ गयी। शहरयार को पकड़ कर अंधा कर दिया गया। इसी

बीच शाहजहाँ दिल्ली लौट आया। इसने सारे शहज़ादों और सब घोषित अघोषित सुल्तानों को पूरे परिवारों समेत मौत के घाट उतार दिया। और इस तरह अपने ही परिवार के कल्लेआम के बाद बॉलीवुड का यह प्यारा मुगल शहज़ादा १६२८ में सुल्तान बना।

ज़िंदगी भर अपनी माँ, भाइयों, भतीजों और बेटों के ख़िलाफ़ साज़िश करने वाला, उन्हें सोते हुए खंजर घोंपने वाला, ज़हर देने वाला, उनका बीज नाश करने वाला यही शाहजहाँ बॉलीवुड में एक बेमिसाल आशिक़, प्रेमी, और प्यार के लिए सब कुछ लुटाने वाला समझा गया। जिस बीवी के नाम पर ताजमहल की कहानियाँ घड़ी गर्यीं, उसकी मौत की मिसाल भी नहीं मिलती। बहुत कम लोग यह बात जानते हैं कि इसका आशिक़ शौहर कुछ इस क्रूर इससे मुहब्बत करता था कि हर दिन और रात इसको उसके तंबू में हाज़िर रहना पड़ता था। यहाँ तक कि शाहजहाँ के सारे जंगी अभियानों में इसकी बीवी मुमताज़ महल को घसीटा गया। सुल्तान की हवस जाने कब जाग जाए, इस बात का ख़याल हर वक़्त रखा जाता। यही वजह है कि जंग के कई मौक़ों पर जब कि मुमताज़ हामला (गर्भवती) थी, तब भी इसकी डोली शाहजहाँ के कारवाँ में उसके पीछे पीछे चलती थी। इस आशिक़ और प्यार के पुतले की बेपनाह मुहब्बत का नतीजा यह निकला कि केवल ३७ साल की छोटी उम्र में ही बीवी मुमताज़ को १४ बच्चों की सौगात मिल चुकी थी। मगर आख़िरी बार की मुहब्बत जानलेवा साबित हुई। आख़िरी बच्चा होने को था मगर आशिक़ अपनी आशिक़ी से बाज़ ना आया। इसके चलते १४ वें बच्चे को जनते जनते मुमताज़ चल बसी।

पर मुहब्बत तो मुहब्बत थी। बीवी नहीं तो बेटी ही सही! कई इतिहासकारों के मुताबिक़ इस बीमार और हैवान मुगल सुल्तान के मुहब्बत की

अगली शिकार इसकी अपनी बेटी बनी। इस सुल्तान के मुताबिक़ बगीचे के फल को चखने का सबसे पहला हक़ माली का ही होता है।

बॉलीवुड से प्रभावित इतिहासकार अक्सर ताजमहल बनाने का श्रेय इस 'महान' आशिक़ को देते हैं। मगर इसी आशिक़ के पड़दादे बाबर ने सवा सौ साल पहले 'बाबरनामा' में ताजमहल में ठहरने की बात लिख कर इस कहानी की फ़ज़ीहत कर रखी है। पूरी ज़िंदगी परिवार का कल्लेआम कराने वाले और बीवी को किसी लाश की तरह अपनी 'मुहब्बत' में दिन रात इस्तेमाल करने वाला जानवर उसी बीवी के मरने के बाद रातों रात दुनिया का सबसे बड़ा शिल्पकार बन गया। चंद टकों के लिए कपड़े ढीले कर देने वाले बॉलीवुड के कलाकार 'इतिहासकारों' और उनके जैसे 'धर्म-निरपेक्ष' इतिहासकारों की ताजमहल की कहानी उतनी ही सच्ची है जितनी कि ग़लीसरीन लगा कर बहाए गए उनके आँसू। कुछ बेवकूफ़ उन्हें देख कर रो भी सकते हैं लेकिन थोड़ी सी भी समझ रखने वाले इंसान सच और झूठ में फ़र्क़ कर सकते हैं।

ख़ैर, वक़्त का पहिया घूमा। आशिक़ शाहजहाँ बूढ़ा हो चुका था। उसके हरमज़ादों (माला का विशेष ध्यान रखें) में सलतनत को लेकर ख़ूरेज जंग हुई। औरंगज़ेब उन सब में सबसे क़ाबिल निकला। इसने अपने भाइयों दारा, शुजा और मुराद को क़त्ल करके इस्लामी मुग़लिया रिवायत को ज़िंदा रखा। अपने बाप शाहजहाँ को कैद करके जेलखाने में फेंक दिया। उसके सबसे चहेते बेटे और अपने बड़े भाई दारा शिकोह का सर काट कर थाल में सज़ा कर अब्बाहुज़ूर की ख़िदमत में पेश किया। यही औरंगज़ेब आज के हिंदुस्तान-पाकिस्तान में बहुत से मुसलमानों का वली (अल्लाह का दोस्त) है।

पर एक बात यहाँ बतानी ज़रूरी है। औरंगज़ेब को सब मुग़लों में सबसे हैवान और दरिंदा बता कर पेश किया जाता है। यह बात ग़लत है। असल में उसके पहले आने वाले सभी सुल्तान एक से बढ़कर एक थे। उसने ऐसा कुछ नया नहीं किया था जो मुस्लिम सुल्तानों ने पहले नहीं किया था। बेटे औरंगज़ेब ने दारा को क़त्ल किया। मगर यह उसने अपने अब्बूजान जहांगीर से ही सीखा था जिसने यह सब अपने अब्बूजान अकबर से सीखा था और उसने अब्बूजान हुमायूँ से और उसने अपने...

औरंगज़ेब की तक्रदीर भी कुछ अलग न थी। उसके बेटे अकबर ने बगावत कर दी और ख़ुद को सुल्तान मशहूर कर दिया। बाप बेटे में लड़ाई हुई और जीत बाप की हुई। अकबर ईरान भाग गया। ख़ैर, वक्रत बीता, औरंगज़ेब मराठा ताक़त से टकराकर अल्लाह को प्यारा हो चुका था। उसका साम्राज्य तहस नहस किया जा चुका था। गुरु गोबिन्द सिंह, शिवाजी महाराज, बंदा वैरागी, छत्रसाल, दुर्गादास राठौर जैसे योद्धाओं की तलवारें मुग़लों के सीनों में बेदर्दी से उतर रही थीं। इस ढलती मुग़ल सल्तनत में फिर से जूतम पैजार हुई। बाप, दादा और पड़दादा की तरह औरंगज़ेब के बेटों में भी तख़्त के लिए ख़ूँरेज जंग हुई। इस बार बाज़ी बहादुर शाह ने जीत ली। उसने अपने भाइयों का क़त्ल करके बाप की विरासत सम्भाली।

बहादुर शाह के मरते ही उसके चारों बेटों में घमासान जंग हुई। हर एक भाई अपने बाक़ी तीन भाइयों के ख़ून का प्यासा था। आख़िर में जहानदार शाह इक्कीस साबित हुआ और बाक़ी सारे भाई मार डाले गए। इसने बचा खुचा मुग़ल तख़्त सम्भाला। मगर इसी बीच जहानदार के भतीजे फ़ारूख़ सियार ने तख़्त पर अपना हक़ जता दिया। अपने नाम को सही

साबित करते हुए इसने ताक़तवर सईद भाइयों के साथ मिलकर चचाजान जहानदार को क़त्ल किया। मगर यह नाम का ही सुल्तान रहा। असली ताक़त सईद भाइयों के पास ही थी। उनके चंगुल से निकलने की जुगत में यह लगा ही था कि सईद भाइयों को भनक लग गयी। इन्होंने सुल्तान पर हमला करके उसकी आँखें निकाल लीं। सुल्तान जेल की कोठरी में बंद हुआ। और एक दिन इसका गला घोट दिया गया।

इस बीच जहानदार के बेटे मुहम्मद शाह रंगीला सईद भाइयों के आशीर्वाद से सुल्तान की गद्दी पर बैठा। मगर यह होशियार निकला। इसने सईदों को चकमा दिया और क़त्ल कर दिया। इसी रंगीले के दौर में नादिर शाह नामी कसाई ने हिंदुस्तान पर हमला किया। नादिर ने ईरान के शाह के बेटे अब्बास को क़त्ल करके गद्दी सम्भाली थी। १७४३ में इस सुल्तान ने खुद अपने बेटे की आँखें अपने हाथों से नोच डाली थीं। बुतपरस्त हिंदू और शिया दोनों ही दीन के लिहाज़ से इसके दुश्मन थे।

ख़ैर, नादिर शाह और उसके १३ बेटों और पोतों को उसी के भतीजे अली कुली खान ने बेरहमी से क़त्ल किया। एक पोता जैसे तैसे करके जान बचाकर ऑस्ट्रिया भाग गया और वहाँ के राजा की चाकरी में लग गया।

नादिर शाह के बाद अहमद शाह ने कमान सम्भाली जो हैवानियत में उससे भी पहुँचा हुआ था। इसने हिंदुस्तान पर बार बार हमले किए। इन हमलों से मुग़ल और कमज़ोर हुए। सिखों और मराठों ने इसकी जम कर ख़बर ली। इसके बाद इसकी गद्दी तैमूर ने सम्भाली। इसके बेटों में गद्दी के लिए खूँखार जंग हुई। इसके पाँचवे बेटे ज़मान ने सल्तनत सम्भाली लेकिन अपने ही भाई बंधुओं के हाथों इसे अंधा करके ४० साल तक कालकोठरी

में सड़ाया गया जहाँ इसने दम तोड़ दिया। इसके मरते ही बाक्री के भाई भतीजों ने एक दूसरे पर खूँरेज हमले किए और अपने छोटे छोटे राज्यों को बढ़ाने की नाकाम कोशिश में पूरे खानदान का खात्मा किया।

खैर, मुगलों पर लौट कर आते हैं। रंगीले के मरने पर बेटे अहमद शाह ने नाम की कमान सम्भाली। मराठों ने इसे गद्दी से उतार दिया। जहानदार के दूसरे बेटे आलमगीर II ने गद्दी सम्भाली। इस नए आलमगीर ने ७ दिन के अंदर अंदर ही अहमद शाह और उसकी माँ की आँखें निकाल लीं।

हालाँकि आलमगीर की आलमगीरी ज़्यादा दिन नहीं चली। इसके दरबारियों ने ही १७५९ में इसे जन्नत रवाना किया। इस वक़्त मुग़ल राज अपनी आखिरी सांसें ले रहा था। अगले १०० साल मुग़ल राज अंग्रेज़ों की पेंशन और लाल क़िले की चारदीवारों से बढ़कर कुछ ना था। आलमगीर के बाद उसके हरम की सबसे कामयाब पैदाइश शाहजहाँ III ने मुग़ल साम्राज्य (लाल क़िले) की गद्दी सम्भाली। पर जल्दी ही अफ़ग़ानियों ने उसे गद्दी से उतार फेंका। इसके बाद इसका क्या हुआ किसी को नहीं पता।

इसके बाद आलमगीर II के साहबजादे शाह आलम II ने १७६१ में गद्दी सम्भाली। १७८८ में इसके वज़ीर के बेटे गुलाम क़ादिर के हाथों इसके खानदान का बुरा अंत हुआ। सुल्तान का परिवार सड़क पर आ गया। शाही हरम की औरतों की इज़्ज़त रौंदी गयी। सुल्तान की छाती पर बैठ कर इसने अपने हाथों से उसकी आँखें निकालीं। इतना ही नहीं, एक कलाकार को बुलाकर आँखें निकालने वाली घटना की दूबहू चित्रकारी करवाई गयी। क़ादिर का कहना था यह सब इसलिए था क्योंकि सुल्तान ने उसके परिवार के साथ यही किया था।

आख़िर में मराठों ने क़ादिर को बंदी बनाया और मुग़लों को सौंप दिया। मुग़लों ने कई दिन तक इसकी बोटी बोटी बाज़ार में नुचवाई। आख़िर में कई दिन बाद इसे ज़िंदा ही कुत्तों को डाल दिया गया। अंधे शाह आलम II की खोई इज़्ज़त को फिर से वापस लाया गया। इसे फिर से मुग़ल सल्तनत (लाल क़िले) का सुल्तान घोषित किया गया।

१८०६ में सुल्तान अल्लाह को प्यारा हुआ। इसके बाद इसका बेटा अकबर अंग्रेज़ों की पेंशन पर पलने वाला अगला लाल क़िले का सुल्तान बना। फिर ६२ साल के बहादुर शाह ज़फ़र सुल्तान हुआ। शायद पहला और आख़िरी मुग़ल सुल्तान जो बिना किसी क़त्लो ग़ारत के सुल्तान हुआ। अंग्रेज़ की पेंशन छिन जाने का डर मुग़ल वंश में वह कमाल कर गया जो आज तक कोई ना कर सका था!

मुग़ल तख़्त ज़मीन में दफ़न हो चुका था। मगर इनका नाम आज भी ज़िंदा है। मुग़लिया हरम के कई वंशज आज भी मुग़लसराय रेलवे स्टेशन पर भीख माँगते हुए मिल जाते हैं जो मुग़ल वंश की गौरव गाथा का विस्तार से वर्णन करते हैं। आते जाते यात्रियों का मनोरंजन करते हैं और अपना पेट पालते हैं।

ख़ैर! कहानी साफ़ है। हिंदुस्तान के इतिहास की किताबों में महान मुग़ल साम्राज्य के महान सुल्तान के तौर पर दर्ज, आशिक़ी और मुहब्बत में हृद से गुज़र जाने वाले, बीवी की याद में ताज महल बनाने वाले, हिंदुस्तान के प्यार में इसे एक करने वाले मुग़ल असल में मज़हबी आतंकवादियों से बढ़ कर कुछ न थे। इसका सबसे बड़ा सबूत यह है कि जब इनकी एक भी पीढ़ी बिना अपने बाप, भाइयों और बेटों के क़त्ल किए बिना नहीं

बीती तो बाक़ी हिंदुस्तान और इसकी जनता किस हाल में होगी?

बुतशिकनी की आग में हज़ारों मन्दिरों को मिट्टी में मिलाने वाले, करोड़ों मूर्तिपूजकों के क़त्ल और धर्म परिवर्तन करने वाले, लाखों औरतों के बलात्कार के अपराधी ये मुग़ल जिहादी हिंदुस्तान के इतिहास की किताबों में महान राजा बन कर कैसे बैठे हैं? और जो हिंदुस्तान में बैठ कर इन जानवरों की हिमायत करते हैं वो आतंकवादी क्यों नहीं हैं?

हम वो नहीं जो मुग़लों को इतिहास से मिटाने की वकालत करें। बिलकुल नहीं। मुग़ल हिंदुस्तान के इतिहास का अभिन्न हिस्सा हैं। ठीक उसी तरह जैसे अजमल कसाब मुम्बई के इतिहास का हिस्सा है या मौलाना मसूद अज़हर कश्मीर के इतिहास का हिस्सा है। अगर हमलावर घर पर क़ाबिज़ हो जाएँ तो भी वो हमलावर ही होते हैं, अब्बूजान नहीं बन जाते। हिंदुस्तान में सबको यह बात याद रखनी चाहिए।

अध्याय ३

बाबर - एक लौंडेबाज अफ़ीमची

बाबरी मस्जिद क्या है? केवल हिन्दुओं के भगवान राम के मन्दिर को तोड़ कर बनाई जाने वाली हराम इबादतगाह? नहीं। अग्निवीर ने सन २०१० में ही तथ्यों और प्रमाणों से साबित किया था कि बात बस इतनी नहीं है। बाबर केवल भगवान राम या हिन्दुओं से ही नफरत नहीं करता था। उसकी नफरत अल्लाह और मुहम्मद से भी उतनी ही थी। हिंदुस्तान के मुसलमानों ने ऐसे शैतान को अपना खैरख्वाह माने रखा। अग्निवीर आज हिंदुस्तान के करोड़ों मुसलमानों को इस गुनाह से आज़ाद कराएगा।

कौन कहता है कि ताज महल मुगलिया मुहब्बत की पहली निशानी है? बाबरी मस्जिद, जिसे मुसलमान अल्लाह का घर समझते रहे, वो असल में बाबर के हवस की निशानी थी। बाबर और उसके मुन्ने की उम्र के

बालक-मिल बाबरी के सम्भोग की निशानी ।

हिंदुस्तान के मुसलमान शुक्रगुज़ार हैं उन रामभक्तों के, जिन्होंने इस्लाम के नाम पर लगी लौंडेबाजी की इस कालिख को अपने खून से धो दिया । इस तरह एक लौंडेबाज हत्यारे की निशानी मिट्टी में दफ़न हुई और साथ ही सदियों की निदामत भी जिसने मुसलमानों को कहीं का नहीं छोड़ा था ।

दिन में हिन्दुओं के कटे सरो की मीनारें बनाने वाला बाबर रात को जब अपने पुरुष-मिल (मर्द आशिक़) बाबरी के साथ रुमानी पल बिताने जाता था तब ना जाने कितने फ़रिश्ते आसमान में आंसू बहाते होंगे ! पैगम्बरों का नाजुक दिल भी इस्लाम के इस जवाल पर दो लख्त हो जाता होगा ।

बात चल ही निकली है तो बताते चलें, बाबरी १४ साल का एक लड़का था जिसकी मर्दानगी ने बाबर के कली समान कोमल दिल को खिला कर फूल बना दिया था ।

दिक्कत थी तो बस ये कि जब यह कोमल कली अफीम और गाँजे के कुछ दम लगा लेती थी तो फिर ये अंगारा बन जाती । आस पास के बच्चों के लिए उसकी ये हालत दर्दनाक रात लेकर आती थी । बच्चों को देख कर इस लौण्डेबाज की हवस बेकाबू हो जाती थी और फिर किसी मासूम की जिंदगी खराब करके ही ठण्डी होती थी ।

हैरानगी इस बात की है कि जिस आदमी को शरीयत की रूह से संगसार (पत्थरों से कुचल कर मारना) कर देना चाहिए था, उसको सदियों हिंदु-स्तानी मुसलमानों ने अपना वली (हीरो) बनाए रखा ।

जिनको इस बात यकीन नहीं, अल्लाह का नाम लें और चलें सच की

खोज में! आओ देखें कि खुद बाबर अपने बाबरनामा में अपनी कैसी तारीफ़ लिखता है। इस किताब का अंग्रेजी अनुवाद इस लिंक से देखा जा सकता है।

<http://www.archive.org/details/babur-nama017152mbp>

बाबर – एक समलैंगिक लौंडेबाज और अफीमची

बाबर की खुद की लिखी बाबरनामा का हर पन्ना उसकी लौंडेबाजी और उसकी ऐय्याशी का नमूना है। इस पर भी अगर किसी को बाबरी मस्जिद वापस चाहिए तो पहले साफ़ करें, क्या इस्लाम की नजर में समलैंगिकता और लौंडेबाजी जायज है? अगर नहीं तो एक लौंडेबाज के साथी के नाम पर बनी किसी चारदीवारी का नाम मस्जिद कैसे हुआ?

१. पेज १२०-१२१, बाबर लिखता है कि उसकी अपनी बीवी में कोई दिलचस्पी नहीं थी। उसके दिलो दिमाग पर तो बस १४ साल का चिकना लड़का बाबरी ही छाया था। वो लिखता है कि उसने किसी से टूट कर ऐसी मुहब्बत नहीं की जैसी बाबरी के साथ किया। उसने लौंडे बाबरी हुस्र की शान में शायरी भी फ़रमाई। गौर कीजिये

करते हो बेइज्जत तुम मुझ अकेले आशिक़ को
हाय बेदर्दी सैंयां होगा मुझ सा आशिक भी कहीं?

२. वो आगे लिखता है कि जब जब बाबरी उसके करीब आता था तब तब उत्तेजना के दौर ऐसे बढ़ते थे कि मुँह से आवाज भी नहीं निकलती थी!

उस पर अफीम के दम ऐसे कि लौण्डे आशिक्र बाबरी को रंगीन रात के लिए शुक्रिया भी नहीं दे पता था !

३. वो आगे लिखता है – एक बार यार दोस्तों के साथ घूमते घूमते लौंडा बाबरी अचानक सामने आ गया । ऐसा समां बंधा कि जबान हलक में अटक गयी । खून के ऐसे दौर बहे कि आँख में आँख डालने की हिम्मत ना हुई ! ऊपर-नीचे बस नमी और गीलापन । और उस पल एकदम एक शेर छूटा

नम कर जाता है तू अपनी निगाहों से ऐ आशिक्र
निगाहें मुझ पर हैं सब और मेरी मगर हैं तुझ पर

खुलासा ये है कि बाबर और उसके हवसी भेड़िये दलबंदी करके कई बच्चों के बचपन से खेलते थे । उन्हीं मासूम बच्चों में से एक बाबरी था जिसके यौन-शोषण के नाम की मस्जिद बाबर ने बनवाई ।

४. लौंडे बाबरी की चाहत इसकी खोपड़ी में इस तरह तारी थी कि उसकी याद में वो ऊद बिलाव की तरह कूदता था । नंगे सर, नंगे पैर, नंगे धड़ वो लौंडे बाबरी के ही सपने देखा करता था ।

५. बाबरी की याद में वो लिखता है –

तेरी तमन्ना मुझे कहीं का ना छोड़ेगी
हाय आशिक्रों की यही तक्रदीर क्यों है
ना दूर तुझे कर सकूँ ना पास तेरे आ सकूँ
कैसी ये हवस है या है मुहब्बत तेरी
पागल मुझे क्यों किया ऐ मेरे मर्द-महबूब

क. इन शेरों के लफ़्ज़ लफ़्ज़ बाबर की हवस, लौंडेबाजी, बच्चों के लिए उसके घिनौने इरादों की कहानी बयां करते हैं। **क्या बच्चे, क्या बड़े, क्या मर्द क्या औरत ! इस नामर्द नीच से कोई नहीं बचा**। किसी भी इस्लामिक मुल्क में इन सब कारनामों के लिए बोटी बोटी काटने की सजा के दावे किये जाते हैं।

सबसे बड़ा लतीफ़ा ये है कि जो इस्लामिक स्टेट हिंदुस्तान से बाबरी मस्जिद का बदला लेगा वही इराक में लोगों को छतों से फेंक रहा है क्योंकि वो समलैंगिक हैं!

ख. बाबरी मस्जिद कोई मस्जिद थी ही नहीं। वो हुस्र, हवस और हरा-मखोरी की एक मण्डी थी जिसने बच्चों, औरतों, मानवता और इस्लाम सबको शर्मसार किया। नेक थे वो बन्दे जिन्होंने इसे नेस्तोनाबूत किया और इंसानियत का परचम फिर से बुलन्द किया।

ग. जिसे अभी भी बाबरी मस्जिद का गम है, वो जवाब दे, क्या इस्लाम किसी लौंडेबाज के नाम में बनाई गई इमारत को मस्जिद मान सकता है? अगर कोई कहे कि जो कुछ भी हो, बाबर था तो मुसलमान, फिर ऐसा कौन है जो मुसलमान नहीं है? **बच्चों के साथ घिनौने काम करने वाला, औरतों पर जबर करने वाला, गैर मुसलमानों के गले काटकर उनके सिरों की मीनारें बनाने वाला सूवर अगर मुसलमान है तो ऐसा इस्लाम हमें कुबूल नहीं।** अयोध्या में नहीं। हिन्दुस्तान में नहीं। दुनिया में कहीं नहीं।

घ. अगर इस्लाम अमन शान्ति का मजहब है तो मुसलमानों को फ़ौरन ही ऐसे दहशतगर्द गुंडों से अपना पीछा छुड़ाना होगा। अब दोगली बात नहीं चलेंगी। बाबर अगर आपका है तो हिंदुस्तान आपका नहीं है। बाबर

अगर आपका नहीं है तो, बाबर अगर इस्लाम का नहीं है तो उसकी निशानी पर आँसू बहाने का सिलसिला अब बंद होना पड़ेगा। सीधी बात – या तो रंगों में राम, कृष्ण, प्रताप, शिवाजी, गुरु गोबिंद का खून है, या फिर बाबर का।

च. मुसलमान दोस्तों को सड़क पर आना होगा। कमलेश तिवारी की मौत माँगने नहीं बल्कि खुद को बाबर से अलग करने के लिए। इस लौंडेबाज का नाम इतिहास की किताबों में खूनी के तौर पर लिखवाने के लिए। इसका नाम इस्लाम से अलग करवाने के लिए। इसकी बनाई गयी लौंडेबाजी की निशानी को मसजिद कहने पर रोक लगवाने के लिए। इसके तोड़े हुए राम मंदिर को फिर से बनवाने के लिए। इसमें और देरी ठीक नहीं। जिस तरह मुम्बई के छल्लपति शिवाजी टर्मिनल्स का नाम अजमल कसाब टर्मिनल्स नहीं हो सकता उसी तरह राम जन्मभूमि पर, हिंदुस्तान में कहीं भी बाबर के नाम की मस्जिद नहीं हो सकती।

छ. मुसलमानों को अपने हाथों से इस दहशतगर्द लौण्डेबाज की बची खुची निशानी तोड़नी चाहिए। और फिर राम जन्मभूमि मंदिर के नींव का पत्थर खुद ही रखना चाहिए।

ज. ६ दिसंबर को राम भक्तों के साथ मिलकर शौर्य दिवस या यौम ए फख्र मनाना चाहिए। क्योंकि इसी दिन रामलला के भक्तों ने इस्लाम के सबसे बड़े दुश्मन की निशानी को जमींदोज़ किया था। साथ ही, हिन्दू भगवान् राम के जनम स्थान पर दोबारा इंसानियत का परचम फैलाया, इस वजह से इस दिन को सांप्रदायिक सौहार्द दिवस या यौम ए भाईचारा मनाना चाहिए।

अगले कदम

१. अब बारी मथुरा और काशी की होनी चाहिए। जितनी भी मस्जिद मंदिरों को तोड़ कर बनाई गयी हैं, उन सबको हिन्दू-मुसलमान साथ मिलकर जमीन में दफ़न करें। हर एक वो जगह जो दूसरे के मंदिर तोड़ कर बनाई गयी है, उसे इस्लाम के शांतिप्रिय सिद्धांत के उलट होने की वजह से गैर इस्लामिक करार दिया जाए और फिर ख़तम किया जाए।

२. अब वक़्त आ गया है कि अयोध्या मुद्दे को सदा सदा के लिए बंद कर दिया जाए। मसला ये नहीं कि किसके कितने मानने वाले हैं। सवाल तो अब इस बात पर होना है कि बच्चों से बलात्कार करने वाले दरिंदे की निशानी सरकारी खर्चें पर नेस्तोनाबूत क्यों नहीं हुई? हिंदू भगवान् राम और इस्लाम दोनों के अपमान को इतने वक़्त क्यों बर्दाश्त किया गया?

इस्लाम और हिंदू दोनों धर्मों की रक्षा करने के लिए अग्निवीर १९९२ के रामभक्तों का शुक्रगुजार है। उम्मीद है कि अग्निवीर के इस खुलासे के बाद सब हिंदू, मुसलमान और कोर्ट मिलकर एक भव्य राम मंदिर का निर्माण करेंगे।

अध्याय ४

अकबर और कटे सरो की मीनार

हमारे पाठकों को अपने विद्यालय के दिनों में पढ़े इतिहास में अकबर का नाम और काम बखूबी याद होगा। रियासतों के रूप में टुकड़ों टुकड़ों में टूटे हुए भारत को एक बनाने की बात हो, या हिन्दू मुस्लिम झगड़े मिटाने को दीन ए इलाही चलाने की बात, सब मजहब की दीवारें तोड़कर हिन्दू लड़कियों को अपने साथ शादी करने का सम्मान देने की बात हो, या हिन्दुओं के पवित्र स्थानों पर जाकर सजदा करने की, हिन्दुओं पर से जजिया कर हटाने की बात हो या फिर हिन्दुओं को अपने दरबार में जगह देने की, अकबर ही अकबर सब ओर दिखाई देता है। सच है कि हमारे इतिहासकार किसी को महान यूँ ही नहीं कह देते। इस महानता को पाने के लिए राम, कृष्ण, विक्रमादित्य, पृथ्वीराज, राणा प्रताप, शिवाजी और

न जाने ऐसे कितने ही महापुरुषों के नाम तरसते रहे, पर इनके साथ “महान” शब्द न लग सका।

हमें याद है कि इतिहास की किताबों में अकबर पर पूरे अध्याय के अन्दर दो पंक्तियाँ महाराणा प्रताप पर भी होती थीं। मसलन वो कब पैदा हुए, कब मरे, कैसे विद्रोह किया, और कैसे उनके ही राजपूत उनके खिलाफ थे। इतिहासकार महाराणा प्रताप को कभी महान न कह सके। ठीक ही तो है! अकबर और राणा का मुकाबला क्या है? कहाँ अकबर पूरे भारत का सम्राट, अपने हरम में पांच हज़ार से भी ज्यादा औरतों की जिन्दगी रोशन करने वाला, उनसे दिल्लगी कर उन्हें शान बख्शने वाला, बीसियों राजपूत राजाओं को अपने दरबार में रखने वाला, और कहाँ राणा प्रताप, क्षुद्र क्षत्रिय, अपने राज्य के लिए लड़ने वाला, सत्ता का भूखा, सत्ता के लिए वन वन भटककर पत्तलों पर घास की रोटियाँ खाने वाला, जिसका कोई हरम ही नहीं इस तरह का छोटा और निष्ठुर हृदय, सब राजपूतों से केवल इसलिए लड़ने वाला कि उन्होंने अपनी लड़कियाँ, पत्नियाँ, बहनें अकबर को भेजीं, अकबर “महान” का संधि प्रस्ताव कई बार ठुकराने वाला घमंडी, और मुसलमान राजाओं से रोटी बेटी का सम्बन्ध भी न रखने वाला दकियानूसी, इत्यादि। कहाँ अकबर जैसा त्यागी जो अपने देश को उसके हाल पर छोड़ कर दूसरे देश भारत का भला करने पूरा जीवन यहीं पर रहा, और कहाँ राणा प्रताप जो अपनी जमीन भी ऐसे त्यागी के लिए खाली न कर पाया और इस आशा में कि एक दिन फिर से अपने राज्य पर कब्ज़ा कर लेगा, वनों में धूल फांकता, पत्नी और बच्चों को जंगलों के कष्ट देता सत्ता का भूखा!

अकबर “महान” की महानता बताने से पहले उसके महान पूर्वजों

के बारे में थोड़ा जान लेना जरूरी है। भारत में पिछले तेरह सौ सालों से इस्लाम के मानने वालों ने लगातार आक्रमण किये। मुहम्मद बिन कासिम और उसके बाद आने वाले गाजियों ने एक के बाद एक हमला करके, यहाँ लूटमार, बलात्कार, नरसंहार और इन सबसे बढ़कर यहाँ रहने वाले काफिरों को अल्लाह और उसके रसूल की इच्छानुसार मुसलमान बनाने का पवित्र किया। आज के अफगानिस्तान तक पश्चिम में फैला उस समय का भारत धीरे धीरे इस्लाम के शिकंजे में आने लगा। आज के अफगानिस्तान में उस समय अहिंसक बौद्धों की निष्क्रियता ने बहुत नुकसान पहुंचाया क्योंकि इसी के चलते मुहम्मद के गाजियों के लश्कर भारत के अंदर घुस पाए। जहाँ जहाँ तक बौद्धों का प्रभाव था, वहाँ पूरी की पूरी आबादी या तो मुसलमान बना दी गयी या काट दी गयी। जहाँ हिंदुओं ने प्रतिरोध किया, वहाँ न तो गाजियों की अधिक चली और न अल्लाह की। यही कारण है कि सिंध के पूर्व भाग में आज भी हिंदू बहुसंख्यक हैं क्योंकि सिंध के पूर्व में राजपूत, जाट, आदि वीर जातियों ने इस्लाम को उस रूप में बढ़ने से रोक दिया जिस रूप में वह इराक, ईरान, मिस्र, अफगानिस्तान और सिंध के पश्चिम तक फैला था अर्थात् वहाँ की पुरानी संस्कृति को मिटा कर केवल इस्लाम में ही रंग दिया गया पर भारत में ऐसा नहीं हो सका।

पर बीच बीच में लुटेरे आते गए और देश को लूटते गए। तैमूरलंग ने कल्लेआम करने के नए आयाम स्थापित किये और अपनी इस पशुता को बड़ी ढिटाई से अपनी डायरी में भी लिखता गया। इसके बाद मुगल आये जो हमारे इतिहास में इस देश से प्यार करने वाले लिखे गए हैं! बताते चलें कि ये देशभक्त और प्रेमपुजारी मुगल, तैमूर और चंगेज खान के कुलों के आपस के विवाह संबंधों का ही परिणाम थे। इनमें बाबर हुआ जो अकबर “महान” का दादा था। यह वही बाबर है जिसने अपने काल में न

जाने कितने मंदिर तोड़े, कितने ही हिंदुओं को मुसलमान बनाया, कितने ही हिंदुओं के सिर उतारे और उनसे मीनारें बनार्यीं। यह सब पवित् कर्म करके वह उनको अपनी डायरी में लिखता भी रहता था ताकि आने वाली उसकी नस्ल इमान की पक्की हो और इसी नेक राह पर चले। क्योंकि मूर्तिपूजा दुनिया की सबसे बड़ी बुराई है और अल्लाह को वह बर्दाश्त नहीं। इस देशभक्त प्रेमपुजारी बाबर ने प्रसिद्ध राम मंदिर भी तुड़वाया और उस जगह पर अपने नाम की मस्जिद बनवाई। यह बात अलग है कि वह अपने समय का प्रसिद्ध नशाखोर, शराबी, हत्यारा, समलैंगिक (पुरुषों से भोग करने वाला), छोटे बच्चों के साथ भी बिस्मिल्लाह पढ़कर भोग करने वाला था। पर वह था पक्का मुसलमान! तभी तो हमारे देश के मुसलमान भाई अपने असली पूर्वजों को भुला कर इस सच्चे मुसलमान के नाम की मस्जिद बनवाने के लिए दिन रात एक किये हुए हैं। खैर यह वो “महान” अकबर का महान दादा था जो अपने पोते के कारनामों से इस्लामी इतिहास में अपना नाम सुनहरे अक्षरों से लिखवा गया।

ऐसे महान दादा के पोते स्वनामधन्य अकबर “महान” के जीवन के कुछ दृश्य आपके सामने रखते हैं। इस काम में हम किसी हिन्दुवादी इतिहासकार के प्रमाण नहीं देंगे क्योंकि वे तो खामखाह अकबर “महान” से चिढ़ते हैं! हम देंगे प्रमाण अबुल फज़ल (अकबर का खास दरबारी) की आइन ए अकबरी और अकबरनामा से। और साथ ही अकबर के जीवन पर सबसे ज्यादा प्रामाणिक इतिहासकार विन्सेंट स्मिथ की अंग्रेजी की किताब “अकबर- द ग्रेट मुगल” से। हम दोनों किताबों के प्रमाणों को हिंदी में देंगे ताकि सबको पढ़ने में आसानी रहे। यहाँ याद रहे कि ये दोनों लेखक सदा इस बात के लिए निशाने पर रहे हैं कि इन्होंने अकबर की प्रशंसा करते करते बहुत झूठ बातें लिखी हैं, इन्होंने बहुत सी उसकी

कमियां छुपाई हैं। पर हम यहाँ यह दिखाएँगे कि अकबर के कर्मों का प्रताप ही कुछ ऐसा था कि सच्चाई सौ परदे फाड़ कर उसी तरह सामने आ जाती है जैसे कि अँधेरे को चीर कर उजाला।

तो अब नजर डालते हैं अकबर महान से जुड़ी कुछ बातों पर-

अकबर महान का आगाज़

१. विन्सेंट स्मिथ ने किताब यहाँ से शुरू की है कि “अकबर भारत में एक विदेशी था। उसकी नसों में एक बूँद खून भी भारतीय नहीं था...। अकबर मुगल से ज्यादा एक तुर्क था” पर देखिये! हमारे इतिहासकारों और कहानीकारों ने अकबर को एक भारतीय के रूप में पेश किया है। जबकि हकीकत यह है कि अकबर के सभी पूर्वज बाबर, हुमायूँ, से लेकर तैमूर तक सब भारत में लूट, बलात्कार, धर्म परिवर्तन, मंदिर विध्वंस, आदि कामों में लगे रहे। वे कभी एक भारतीय नहीं थे और इसी तरह अकबर भी नहीं था। और इस पर भी हमारी हिंदू जाति अकबर को हिन्दुस्तान की शान समझती रही!

अकबर महान की सुंदरता और अच्छी आदतें

२. बाबर शराब का शौकीन था, इतना कि अधिकतर समय धुत रहता था [बाबरनामा]। हुमायूँ अफीम का शौकीन था और इस वजह से बहुत लाचार भी हो गया। अकबर ने ये दोनों आदतें अपने पिता और दादा से विरासत में लीं। अकबर के दो बच्चे नशाखोरी की आदत के चलते अल्लाह को प्यारे हुए। पर इतने पर भी इस बात पर तो किसी मुसलमान भाई को शक ही नहीं कि ये सब सच्चे मुसलमान थे।

३. कई इतिहासकार अकबर को सबसे सुन्दर आदमी घोषित करते हैं। विन्सेंट स्मिथ इस सुंदरता का वर्णन यूँ करते हैं-

“अकबर एक औसत दर्जे की लम्बाई का था। उसके बाएं पैर में लंगड़ापन था। उसका सिर अपने दायें कंधे की तरफ झुका रहता था। उसकी नाक छोटी थी जिसकी हड्डी बाहर को निकली हुई थी। उसके नाक के नथुने ऐसे दीखते थे जैसे वो गुस्से में हो। आधे मटर के दाने के बराबर एक मस्सा उसके होंठ और नथुनों को मिलाता था। वह गहरे रंग का था”

४. जहाँगीर ने लिखा है कि अकबर उसे सदा शेख ही बुलाता था भले ही वह नशे की हालत में हो या चुस्ती की हालत में। इसका मतलब यह है कि अकबर काफी बार नशे की हालत में रहता था।

५. अकबर का दरबारी लिखता है कि अकबर ने इतनी ज्यादा पीनी शुरू कर दी थी कि वह मेहमानों से बात करता करता भी नींद में गिर पड़ता था। वह अक्सर ताड़ी पीता था। वह जब ज्यादा पी लेता था तो आपे से बाहर हो जाता था और पागलो के जैसे हरकत करने लगता।

अकबर महान की शिक्षा

६. जहाँगीर ने लिखा है कि अकबर कुछ भी लिखना पढ़ना नहीं जानता था पर यह दिखाता था कि वह बड़ा भारी विद्वान है।

अकबर महान का मातृशक्ति (स्त्रियों) के लिए आदर

७. अबुल फज़ल ने लिखा है कि अपने राजा बनने के शुरूआती सालों में अकबर परदे के पीछे ही रहा! परदे के पीछे वो किस बेशर्मी को बेपर्दा

कर रहा था उसकी जानकारी आगे पढ़िए।

८. अबुल फज़ल ने अकबर के हरम को इस तरह वर्णित किया है- “अकबर के हरम में पांच हजार औरतें थीं और हर एक का अपना अलग घर था।” ये पांच हजार औरतें उसकी ३६ पत्नियों से अलग थीं।

९. आइन ए अकबरी में अबुल फज़ल ने लिखा है- “शहंशाह के महल के पास ही एक शराबखाना बनाया गया था। वहाँ इतनी वेश्याएं इकट्ठी हो गयीं कि उनकी गिनती करनी भी मुश्किल हो गयी। दरबारी नर्तकियों को अपने घर ले जाते थे। अगर कोई दरबारी किसी नयी लड़की को घर ले जाना चाहे तो उसको अकबर से आज्ञा लेनी पड़ती थी। कई बार जवान लोगों में लड़ाई झगडा भी हो जाता था। एक बार अकबर ने खुद कुछ वेश्याओं को बुलाया और उनसे पूछा कि उनसे सबसे पहले भोग किसने किया”।

अब यहाँ सवाल पैदा होता है कि ये वेश्याएं इतनी बड़ी संख्या में कहाँ से आयीं और कौन थीं? आप सब जानते ही होंगे कि इस्लाम में स्त्रियाँ परदे में रहती हैं, बाहर नहीं। और फिर अकबर जैसे नेक मुसलमान को इतना तो ख्याल होगा ही कि मुसलमान औरतों से वेश्यावृत्ति कराना गलत है। तो अब यह सोचना कठिन नहीं है कि ये स्त्रियाँ कौन थीं। ये वो स्त्रियाँ थीं जो लूट के माल में अल्लाह द्वारा मोमिनों के भोगने के लिए दी जाती हैं, अर्थात् काफिरों की हत्या करके उनकी लड़कियाँ, पत्नियाँ आदि। अकबर की सेनाओं के हाथ युद्ध में जो भी हिंदू स्त्रियाँ लगती थीं, ये उसी की भीड़ मदिरालय में लगती थी।

१०. अबुल फज़ल ने अकबरनामा में लिखा है- “जब भी कभी कोई

रानी, दरबारियों की पत्नियाँ, या नयी लड़कियाँ शहंशाह की सेवा (यह साधारण सेवा नहीं है) में जाना चाहती थी तो पहले उसे अपना आवेदन पत्र हरम प्रबंधक के पास भेजना पड़ता था। फिर यह पत्र महल के अधिकारियों तक पहुँचता था और फिर जाकर उन्हें हरम के अंदर जाने दिया जाता जहाँ वे एक महीने तक रखी जाती थीं।”

अब यहाँ देखना चाहिए कि चाटुकार अबुल फजल भी इस बात को छुपा नहीं सका कि अकबर अपने हरम में दरबारियों, राजाओं और लड़कियों तक को भी महीने के लिए रख लेता था। पूरी प्रक्रिया को संवैधानिक बनाने के लिए इस धूर्त चाटुकार ने चाल चली है कि स्त्रियाँ खुद अकबर की सेवा में पत्र भेज कर जाती थीं! इस मूर्ख को इतनी बुद्धि भी नहीं थी कि ऐसी कौन सी स्त्री होगी जो पति के सामने ही खुल्लम खुल्ला किसी और पुरुष की सेवा में जाने का आवेदन पत्र दे दे? मतलब यह है कि वास्तव में अकबर महान खुद ही आदेश देकर जबरदस्ती किसी को भी अपने हरम में रख लेता था और उनका सतीत्व नष्ट करता था।

११. रणथंभोर की संधि में अकबर महान की पहली शर्त यह थी कि राजपूत अपनी स्त्रियों की डोलियों को अकबर के शाही हरम के लिए रवाना कर दें यदि वे अपने सिपाही वापस चाहते हैं।

१२. बैरम खान जो अकबर के पिता तुल्य और संरक्षक था, उसकी हत्या करके इसने उसकी पत्नी अर्थात् अपनी माता के तुल्य स्त्री से शादी की।

१३. ग्रीमन के अनुसार अकबर अपनी रखैलों को अपने दरबारियों में बाँट देता था। औरतों को एक वस्तु की तरह बांटना और खरीदना अकबर

महान बखूबी करता था ।

१४. मीना बाजार जो हर नए साल की पहली शाम को लगता था, इसमें सब स्त्रियों को सज धज कर आने के आदेश दिए जाते थे और फिर अकबर महान उनमें से किसी को चुन लेते थे ।

नेक दिल अकबर महान

१५. ६ नवम्बर १५५६ को १४ साल की आयु में अकबर महान पानीपत की लड़ाई में भाग ले रहा था । हिंदू राजा हेमू की सेना मुगल सेना को खदेड़ रही थी कि अचानक हेमू को आँख में तीर लगा और वह बेहोश हो गया । उसे मरा सोचकर उसकी सेना में भगदड़ मच गयी । तब हेमू को बेहोशी की हालत में अकबर महान के सामने लाया गया और इसने बहादुरी से हेमू का सिर काट लिया और तब इसे गाजी के खिताब से नवाजा गया । (गाजी की पदवी इस्लाम में उसे मिलती है जिसने किसी काफिर को कतल किया हो । ऐसे गाजी को जन्नत नसीब होती है और वहाँ सबसे सुन्दर दूरें इनके लिए बुक होती हैं) । हेमू के सिर को काबुल भिजा दिया गया एवं उसके धड़ को दिल्ली के दरवाजे से लटका दिया गया ताकि नए आतंकवादी बादशाह की रहमदिली सब को पता चल सके ।

१६. इसके तुरंत बाद जब अकबर महान की सेना दिल्ली आई तो कटे हुए काफिरों के सिरों से मीनार बनायी गयी जो जीत के जश्र का प्रतीक है और यह तरीका अकबर महान के पूर्वजों से ही चला आ रहा है ।

१७. हेमू के बूढ़े पिता को भी अकबर महान ने कटवा डाला । और औरतों को उनकी सही जगह अर्थात शाही हरम में भिजवा दिया गया ।

१८. अबुल फजल लिखता है कि खान जमन के विद्रोह को दबाने के लिए उसके साथी मोहम्मद मिराक को हथकड़ियां लगा कर हाथी के सामने छोड़ दिया गया। हाथी ने उसे सूंड से उठाकर फैंक दिया। ऐसा पांच दिनों तक चला और उसके बाद उसको मार डाला गया।

१९. चित्तौड़ पर कब्ज़ा करने के बाद अकबर महान ने तीस हजार नागरिकों का क़त्ल करवाया।

२०. अकबर ने मुजफ्फर शाह को हाथी से कुचलवाया। हमजबान की जबान ही कटवा डाली। मसूद हुसैन मिर्ज़ा की आँखें सीकर बंद कर दी गयीं। उसके ३०० साथी उसके सामने लाये गए और उनके चेहरे पर गधों, भेड़ों और कुत्तों की खालें डाल कर काट डाला गया। विन्सेंट स्मिथ ने यह लिखा है कि अकबर महान फांसी देना, सिर कटवाना, शरीर के अंग कटवाना, आदि सजाएं भी देते थे।

२१. २ सितम्बर १५७३ के दिन अहमदाबाद में उसने २००० दुश्मनों के सिर काटकर अब तक की सबसे ऊंची सिरों की मीनार बनायी। वैसे इसके पहले सबसे ऊंची मीनार बनाने का सौभाग्य भी अकबर महान के दादा बाबर का ही था। अर्थात् कीर्तिमान घर के घर में ही रहा!

२२. अकबरनामा के अनुसार जब बंगाल का दाउद खान हारा, तो कटे सिरों के आठ मीनार बनाए गए थे। यह फिर से एक नया कीर्तिमान था। जब दाउद खान ने मरते समय पानी माँगा तो उसे जूतों में पानी पीने को दिया गया।

न्यायकारी अकबर महान

२३. थानेश्वर में दो संप्रदायों कुरु और पुरी के बीच पूजा की जगह को लेकर विवाद चल रहा था। अकबर ने आदेश दिया कि दोनों आपस में लड़ें और जीतने वाला जगह पर कब्ज़ा कर ले। उन मूर्ख आत्मघाती लोगों ने आपस में ही अस्त्र शस्त्रों से लड़ाई शुरू कर दी। जब पुरी पक्ष जीतने लगा तो अकबर ने अपने सैनिकों को कुरु पक्ष की तरफ से लड़ने का आदेश दिया। और अंत में इसने दोनों तरफ के लोगों को ही अपने सैनिकों से मरवा डाला। और फिर अकबर महान जोर से हंसा।

२४. हल्दीघाटी के युद्ध में अकबर की नीति यही थी कि राजपूत ही राजपूतों के विरोध में लड़ें। बादायुनी ने अकबर के सेनापति से बीच युद्ध में पूछा कि प्रताप के राजपूतों को हमारी तरफ से लड़ रहे राजपूतों से कैसे अलग पहचानेंगे? तब उसने कहा कि इसकी जरूरत नहीं है क्योंकि किसी भी हालत में मरेंगे तो राजपूत ही और फायदा इस्लाम का होगा।

२५. कर्नल टोड लिखते हैं कि अकबर ने एकलिंग की मूर्ति तोड़ी और उस स्थान पर नमाज पढ़ी।

२६. एक बार अकबर शाम के समय जल्दी सोकर उठ गया तो उसने देखा कि एक नौकर उसके बिस्तर के पास सो रहा है। इससे उसको इतना गुस्सा आया कि नौकर को इस बात के लिए एक मीनार से नीचे फेंकवा दिया।

२७. अगस्त १६०० में अकबर की सेना ने असीरगढ़ का किला घेर लिया पर मामला बराबरी का था। न तो वह किला टोड पाया और न ही

किले की सेना अकबर को हरा सकी। विन्सेंट स्मिथ ने लिखा है कि अकबर ने एक अद्भुत तरीका सोचा। उसने किले के राजा मीरां बहादुर को आमंत्रित किया और अपने सिर की कसम खाई कि उसे सुरक्षित वापस जाने देगा। तब मीरां शान्ति के नाम पर बाहर आया और अकबर के सामने सम्मान दिखाने के लिए तीन बार झुका। पर अचानक उसे जमीन पर धक्का दिया गया ताकि वह पूरा सजदा कर सके क्योंकि अकबर महान को यही पसंद था।

उसको अब पकड़ लिया गया और आज्ञा दी गयी कि अपने सेनापति को कहकर आत्मसमर्पण करवा दे। सेनापति ने मानने से मना कर दिया और अपने लड़के को अकबर के पास यह पूछने भेजा कि उसने अपनी प्रतिज्ञा क्यों तोड़ी? अकबर ने बच्चे से पूछा कि क्या तेरा पिता आत्मसमर्पण के लिए तैयार है? तब बालक ने कहा कि उसका पिता समर्पण नहीं करेगा चाहे राजा को मार ही क्यों न डाला जाए। यह सुनकर अकबर महान ने उस बालक को मार डालने का आदेश दिया। इस तरह झूठ के बल पर अकबर महान ने यह किला जीता।

यहाँ ध्यान देना चाहिए कि यह घटना अकबर की मृत्यु से पांच साल पहले की ही है। अतः कई लोगों का यह कहना कि अकबर बाद में बदल गया था, एक झूठ बात है।

२८. इसी तरह अपने ताकत के नशे में चूर अकबर ने बुंदेलखंड की प्रतिष्ठित रानी दुर्गावती से लड़ाई की और लोगों का क़त्ल किया।

अकबर महान और महाराणा प्रताप

२९. ऐसे इतिहासकार जिनका अकबर दुलारा और चहेता है, एक बात नहीं बताते कि कैसे एक ही समय पर राणा प्रताप और अकबर महान हो सकते थे जबकि दोनों एक दूसरे के घोर विरोधी थे?

३०. यहाँ तक कि विन्सेंट स्मिथ जैसे अकबर प्रेमी को भी यह बात माननी पड़ी कि चित्तौड़ पर हमले के पीछे केवल उसकी सब कुछ जीतने की हवस ही काम कर रही थी। वहाँ दूसरी तरफ महाराणा प्रताप अपने देश के लिए लड़ रहे थे और कोशिश की कि राजपूतों की इज्जत उनकी स्त्रियाँ मुगलों के हरम में न जा सकें। शायद इसी लिए अकबर प्रेमी इतिहासकारों ने राणा को लड़ाकू और अकबर को देश निर्माता के खिताब से नवाजा है!

अकबर महान अगर, राणा शैतान तो
शूकर है राजा, नहीं शेर वनराज है
अकबर आबाद और राणा बर्बाद है तो
हिजड़ों की झोली पुत्र, पौरुष बेकार है
अकबर महाबली और राणा बलहीन तो
कुत्ता चढ़ा है जैसे मस्तक गजराज है
अकबर सम्राट, राणा छिपता भयभीत तो
हिरण सोचे, सिंह दल उसका शिकार है
अकबर निर्माता, देश भारत है उसकी देन
कहना यह जिनका शत बार धिक्कार है
अकबर है प्यारा जिसे राणा स्वीकार नहीं
रगों में पिता का जैसे खून अस्वीकार है।

अकबर और इस्लाम

३१. हिन्दुस्तानी मुसलमानों को यह कह कर बेवकूफ बनाया जाता है कि अकबर ने इस्लाम की अच्छाइयों को पेश किया। असलियत यह है कि कुरआन के खिलाफ जाकर ३६ शादियाँ करना, शराब पीना, नशा करना, दूसरों से अपने आगे सजदा करवाना आदि करके भी इस्लाम को अपने दामन से बाँधे रखा ताकि राजनैतिक फायदा मिल सके। और सबसे मजेदार बात यह है कि वंदे मातरम में शिर्क दिखाने वाले मुल्ला मौलवी अकबर की शराब, अफीम, ३६ बीवियों, और अपने लिए करवाए सजदों में भी इस्लाम को महफूज़ पाते हैं! किसी मौलवी ने आज तक यह फतवा नहीं दिया कि अकबर या बाबर जैसे शराबी और समलैंगिक मुसलमान नहीं हैं और इनके नाम की मस्जिद हराम है।

३२. अकबर ने खुद को दिव्य आदमी के रूप में पेश किया। उसने लोगों को आदेश दिए कि आपस में “अल्लाह ओ अकबर” कह कर अभिवादन किया जाए। भोले भाले मुसलमान सोचते हैं कि वे यह कह कर अल्लाह को बड़ा बता रहे हैं पर अकबर ने अल्लाह के साथ अपना नाम जोड़कर अपनी दिव्यता फैलानी चाही। अबुल फज़ल के अनुसार अकबर खुद को सर्वज्ञ (सब कुछ जानने वाला) की तरह पेश करता था। ऐसा ही इसके लड़के जहांगीर ने लिखा है।

३३. अकबर ने अपना नया पंथ दीन ए इलाही चलाया जिसका केवल एक मकसद खुद की बड़ाई करवाना था। उसके चाटुकारों ने इस धूर्तता को भी उसकी उदारता की तरह पेश किया!

३४. अकबर को इतना महान बताए जाने का एक कारण ईसाई इति-

हासकारों का यह था कि क्योंकि इसने हिंदू धर्म और इस्लाम दोनों का ही जम कर अपमान किया और इस तरह भारत में अंग्रेजों के इसाईयत फैलाने के उद्देश्य में बड़ा कारण बना। विन्सेंट स्मिथ ने भी इस विषय पर अपनी राय दी है।

३५. अकबर भाषा बोलने में बड़ा चतुर था। विन्सेंट स्मिथ लिखता है कि मीठी भाषा के अलावा उसकी सबसे बड़ी खूबी अपने जीवन में दिखाई बर्बरता है!

३६. अकबर ने अपने को रूहानी ताकतों से भरपूर साबित करने के लिए कितने ही झूठ बोले। जैसे कि उसके पैरों की धुलाई करने से निकले गंदे पानी में अद्भुत ताकत है जो रोगों का इलाज कर सकता है। ये वैसे ही दावे हैं जैसे मुहम्मद साहब के बारे में हदीसों में किये गए हैं। अकबर के पैरों का पानी लेने के लिए लोगों की भीड़ लगवाई जाती थी। उसके दरबारियों को तो यह अकबर के नापाक पैर का चरणामृत पीना पड़ता था ताकि वह नाराज न हो जाए।

अकबर महान और जजिया कर

३७. इस्लामिक शरीयत के अनुसार किसी भी इस्लामी राज्य में रहने वाले गैर मुस्लिमों को अगर अपनी संपत्ति और स्त्रियों को छिनने से सुरक्षित रखना होता था तो उनको इसकी कीमत देनी पड़ती थी जिसे जजिया कहते थे। यानी इसे देकर फिर कोई अल्लाह व रसूल का गाजी आपकी संपत्ति, बेटी, बहन, पत्नी आदि को नहीं उठाएगा। कुछ अकबर प्रेमी कहते हैं कि अकबर ने जजिया खत्म कर दिया था। लेकिन इस बात का इतिहास में एक जगह भी उल्लेख नहीं! केवल इतना है कि यह जजिया रणथम्भौर

के लिए माफ करने की शर्त राखी गयी थी जिसके बदले वहाँ के हिंदुओं को अपनी स्त्रियों को अकबर के हरम में भिजवाना था! यही कारण बना की इन मुस्लिम सुल्तानों के काल में हिन्दू स्त्रियाँ जौहर में जलना अधिक पसंद करती थी।

३८. यह एक सफ़ेद झूठ है कि उसने जजिया खत्म कर दिया। आखिरकार अकबर जैसा सच्चा मुसलमान जजिया जैसे कुरआन के आदेश को कैसे हटा सकता था? इतिहास में कोई प्रमाण नहीं की उसने अपने राज्य में कभी जजिया बंद करवाया हो।

अकबर महान और उसका सपूत

३९. भारत में महान इस्लामिक शासन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि बादशाह के अपने बच्चे ही उसके खिलाफ बगावत कर बैठते थे! हुमायूँ बाबर से दुखी था और जहांगीर अकबर से, शाहजहां जहांगीर से दुखी था तो औरंगजेब शाहजहाँ से। जहांगीर (सलीम) ने १६०२ में खुद को बादशाह घोषित कर दिया और अपना दरबार इलाहबाद में लगाया। कुछ इतिहासकार कहते हैं की जोधा अकबर की पत्नी थी या जहाँगीर की, इस पर विवाद है। सच तो ये है कि जोधा नामक किसी व्यक्ति का ज़िक्र इतिहास के पन्नों में नहीं है। हाँ, एक मनभावती का ज़िक्र है जो इन दोनों के हवस की शिकार थी। संभवतः यही इनकी दुश्मनी का कारण बना, क्योंकि सल्तनत के तख़्त के लिए तो जहाँगीर के आलावा कोई और दावेदार था ही नहीं!

४०. ध्यान रहे कि इतिहासकारों के लाडले और सबसे उदारवादी राजा अकबर ने ही सबसे पहले “प्रयागराज” जैसे काफिर शब्द को

बदल कर इलाहबाद कर दिया था ।

४१. जहांगीर अपने अब्बूजान अकबर महान की मौत की ही दुआएं करने लगा । स्मिथ लिखता है कि अगर जहांगीर का विद्रोह कामयाब हो जाता तो वह अकबर को मार डालता । बाप को मारने की यह कोशिश यहाँ तो परवान न चढ़ी लेकिन आगे जाकर आखिरकार यह सफलता औरंगजेब को मिली जिसने अपने अब्बू को कष्ट दे दे कर मारा । वैसे कई इतिहासकार यह कहते हैं कि अकबर को जहांगीर ने ही जहर देकर मारा ।

अकबर महान और उसका शक्की दिमाग

४२. अकबर ने एक आदमी को केवल इसी काम पर रखा था कि वह उनको जहर दे सके जो लोग अकबर को पसंद नहीं !

४३. अकबर महान ने न केवल कम भरोसेमंद लोगों का कतल कराया बल्कि उनका भी कराया जो उसके भरोसे के आदमी थे जैसे- बैरम खान (अकबर का गुरु जिसे मारकर अकबर ने उसकी बीवी से निकाह कर लिया), जमन, असफ खान (इसका वित्त मंत्री), शाह मंसूर, मानसिंह, कामरान का बेटा, शेख अब्दुरनबी, मुइजुल मुल्क, हाजी इब्राहिम और बाकी सब मुल्ला जो इसे नापसंद थे । पूरी सूची स्मिथ की किताब में दी हुई है । और फिर जयमल जिसे मारने के बाद उसकी पत्नी को अपने हरम के लिए खींच लाया और लोगों से कहा कि उसने इसे सती होने से बचा लिया !

समाज सेवक अकबर महान

४४. अकबर के शासन में मरने वाले की संपत्ति बादशाह के नाम पर

जब्त कर ली जाती थी और मृतक के घर वालों का उस पर कोई अधिकार नहीं होता था ।

४५. अपनी माँ के मरने पर उसकी भी संपत्ति अपने कब्जे में ले ली जबकि उसकी माँ उसे सब परिवार में बांटना चाहती थी ।

अकबर महान और उसके नवरत्न

४६. अकबर के चाटुकारों ने राजा विक्रमादित्य के दरबार की कहानियों के आधार पर उसके दरबार और नौ रत्नों की कहानी घड़ी है । असलियत यह है कि अकबर अपने सब दरबारियों को मूर्ख समझता था । उसने कहा था कि वह अल्लाह का शुक्रगुजार है कि इसको योग्य दरबारी नहीं मिले वरना लोग सोचते कि अकबर का राज उसके दरबारी चलाते हैं वह खुद नहीं ।

४७. प्रसिद्ध नवरत्न टोडरमल अकबर की लूट का हिसाब करता था । इसका काम था जजिया न देने वालों की औरतों को हरम का रास्ता दिखाना ।

४८. एक और नवरत्न अबुल फजल अकबर का अव्वल दर्जे का चाटुकार था । बाद में जहाँगीर ने इसे मार डाला ।

४९. फैजी नामक रत्न असल में एक साधारण सा कवि था जिसकी कलम अपने शहंशाह को प्रसन्न करने के लिए ही चलती थी । कुछ इति-हासकार कहते हैं कि वह अपने समय का भारत का सबसे बड़ा कवि था । आश्चर्य इस बात का है कि यह सर्वश्रेष्ठ कवि एक अनपढ़ और जाहिल

शहंशाह की प्रशंसा का पाल था ! यह ऐसी ही बात है जैसे कोई अरब का मनुष्य किसी संस्कृत के कवि के भाषा सौंदर्य का गुणगान करता हो !

५०. बुद्धिमान बीरबल शर्मनाक तरीके से एक लड़ाई में मारा गया । बीरबल अकबर के किस्से असल में मन बहलाव की बातें हैं जिनका वास्तविकता से कोई सम्बन्ध नहीं । ध्यान रहे कि ऐसी कहानियाँ दक्षिण भारत में तेनालीराम के नाम से भी प्रचलित हैं.

५१. अगले रत्न शाह मंसूर दूसरे रत्न अबुल फजल के हाथों सबसे बड़े रत्न अकबर के आदेश पर मार डाले गए !

५२. मान सिंह जो देश में पैदा हुआ सबसे नीच गद्दार था, ने अपनी बहन जहांगीर को दी । और बाद में इसी जहांगीर ने मान सिंह की पोती को भी अपने हरम में खींच लिया । यही मानसिंह अकबर के आदेश पर जहर देकर मार डाला गया और इसके पिता भगवान दास ने आत्महत्या कर ली ।

५३. इन नवरत्नों को अपनी बीवियां, लडकियां, बहनें तो अकबर की खिदमत में भेजनी पड़ती ही थीं ताकि बादशाह सलामत उनको भी सलामत रखें । और साथ ही अकबर महान के पैरों पर डाला गया पानी भी इनको पीना पड़ता था जैसा कि ऊपर बताया गया है ।

५४. रत्न टोडरमल अकबर का वफादार था तो भी उसकी पूजा की मूर्तियां अकबर ने तुड़वा दीं । इससे टोडरमल को दुःख हुआ और इसने इस्तीफ़ा दे दिया और वाराणसी चला गया ।

अकबर और उसके गुलाम

५५. अकबर ने एक ईसाई पुजारी को एक रूसी गुलाम का पूरा परिवार भेंट में दिया। इससे पता चलता है कि अकबर गुलाम रखता था और उन्हें वस्तु की तरह भेंट में दिया और लिया करता था।

५६. कंधार में एक बार अकबर ने बहुत से लोगों को गुलाम बनाया क्योंकि उन्होंने १५८१-८२ में इसकी किसी नीति का विरोध किया था। बाद में इन गुलामों को मंडी में बेच कर घोड़े खरीदे गए।

५७. जब शाही दस्ते शहर से बाहर जाते थे तो अकबर के हरम की औरतें जानवरों की तरह सोने के पिंजरों में बंद कर दी जाती थीं।

५८. वैसे भी इस्लाम के नियमों के अनुसार युद्ध में पकड़े गए लोग और उनके बीवी बच्चे गुलाम समझे जाते हैं जिनको अपनी हवस मिटाने के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है। अल्लाह ने कुरान में यह व्यवस्था दे रखी है।

५९. अकबर बहुत नए तरीकों से गुलाम बनाता था। उसके आदमी किसी भी घोड़े के सिर पर एक फूल रख देते थे। फिर बादशाह की आज्ञा से उस घोड़े के मालिक के सामने दो विकल्प रखे जाते थे, या तो वह अपने घोड़े को भूल जाये, या अकबर की वित्तीय गुलामी कुबूल करे।

कुछ और तथ्य

६०. जब अकबर मरा था तो उसके पास दो करोड़ से ज्यादा अशर्फियाँ केवल आगरे के किले में थीं। इसी तरह के और खजाने छह और जगह

पर भी थे। इसके बावजूद भी उसने १५९५-१५९९ की भयानक भुखमरी के समय एक सिक्का भी देश की सहायता में खर्च नहीं किया।

६१. अकबर ने प्रयागराज (जिसे बाद में इसी धर्म निरपेक्ष महात्मा ने इलाहबाद नाम दिया था) में गंगा के तटों पर रहने वाली सारी आबादी का क़त्ल करवा दिया और सब इमारतें गिरा दीं क्योंकि जब उसने इस शहर को जीता तो लोग उसके इस्तकबाल करने की जगह घरों में छिप गए। यही कारण है कि प्रयागराज के तटों पर कोई पुरानी इमारत नहीं है।

६२. एक बहुत बड़ा झूठ यह है कि फतेहपुर सीकरी अकबर ने बनवाया था। इसका कोई विश्वसनीय प्रमाण नहीं है। बाकी दरिंदे लुटेरों की तरह इसने भी पहले सीकरी पर आक्रमण किया और फिर प्रचारित कर दिया कि यह मेरा है। इसी तरह इसके पोते और इसी की तरह दरिंदे शाहजहाँ ने यह ढोल पिटवाया था कि ताज महल इसने बनवाया है वह भी अपनी चौथी पत्नी की याद में जो इसके और अपने सत्तहवें बच्चे को पैदा करने के समय चल बसी थी!

तो ये कुछ उदाहरण थे अकबर “महान” के जीवन से ताकि आपको पता चले कि हमारे नपुंसक इतिहासकारों की नजरों में महान बनना क्यों हर किसी के बस की बात नहीं। क्या इतिहासकार और क्या फिल्मकार और क्या कलाकार, सब एक से एक मक्कार, देशद्रोही, कुल कलंक, नपुंसक हैं जिन्हें फिल्म बनाते हुए अकबर तो दीखता है पर महाराणा प्रताप कहीं नहीं दीखता। अब देखिये कि अकबर पर बनी फिल्मों में इस शराबी, नशाखोर, बलात्कारी, और लाखों हिंदुओं के हत्यारे अकबर के बारे में क्या दिखाया गया है और क्या छुपाया। बैरम खान की पत्नी, जो इसकी माता के सामान

थी, से इसकी शादी का जिक्र किसी ने नहीं किया। इस जानवर को इस तरह पेश किया गया है कि जैसे फरिश्ता! जोधाबाई से इसकी शादी की कहानी दिखा दी पर यह नहीं बताया कि जोधा असल में जहांगीर की पत्नी थी और शायद दोनों उसका उपभोग कर रहे थे। दिखाया यह गया कि इसने हिंदू लड़की से शादी करके उसका धर्म नहीं बदला, यहाँ तक कि उसके लिए उसके महल में मंदिर बनवाया! असलियत यह है कि बरसों पुराने वफादार टोडरमल की पूजा की मूर्ति भी जिस अकबर से सहन न हो सकी और उसे झट तोड़ दिया, ऐसे अकबर ने लाचार लड़की के लिए मंदिर बनवाया, यह दिखाना धूर्तता की पराकाष्ठा है। पूरी की पूरी कहानियाँ जैसे मुगलों ने हिन्दुस्तान को अपना घर समझा और इसे प्यार दिया, हेमू का सिर काटने से अकबर का इनकार, देश की शान्ति और सलामती के लिए जोधा से शादी, उसका धर्म परिवर्तन न करना, हिंदू रीति से शादी में आग के चारों तरफ फेरे लेना, राज महल में जोधा का कृष्ण मंदिर और अकबर का उसके साथ पूजा में खड़े होकर तिलक लगवाना, अकबर को हिंदुओं को जबरन इस्लाम कुबूल करवाने का विरोधी बताना, हिंदुओं पर से कर हटाना, उसके राज्य में हिंदुओं को भी उसका प्रशंसक बताना, आदि ऐसी हैं जो असलियत से कोसों दूर हैं जैसा कि अब आपको पता चल गयी होंगी। “हिन्दुस्तान मेरी जान तू जान ए हिन्दोस्तां” जैसे गाने अकबर जैसे बलात्कारी, और हत्यारे के लिए लिखने वालों और उन्हें दिखाने वालों को उसी के सामान झूठा और दरिंदा समझा जाना चाहिए।

चित्तौड़ में तीस हजार लोगों का कत्लेआम करने वाला, हिंदू स्त्रियों को एक के बाद एक अपनी पत्नी या रखैल बनने पर विवश करने वाला, नगरों और गाँवों में जाकर नरसंहार कराकर लोगों के कटे सिरों से मीनार बनाने वाला, जिस देश के इतिहास में महान, सम्राट, “शान ए हिन्दोस्तां” लिखा

जाए और उसे देश का निर्माता कहा जाए कि भारत को एक छत्र के नीचे उसने खड़ा कर दिया, उस देश का विनाश ही होना चाहिए। वहीं दूसरी तरफ जो ऐसे दरिंदे, नपुंसक के विरुद्ध धर्म और देश की रक्षा करता हुआ अपने से कई गुना अधिक सेनाओं से लड़ा, जंगल जंगल मारा मारा फिरता रहा, अपना राज्य छोड़ा, सब साथियों को छोड़ा, पत्तल पर घास की रोटी खाकर भी जिसने वैदिक धर्म की अग्नि को तुर्की आंधी से कभी बुझने नहीं दिया, वह महाराणा प्रताप इन इतिहासकारों और फिल्मकारों की दृष्टि में “जान ए हिन्दुस्तान” तो दूर “जान ए राजस्थान” भी नहीं था! उसे सदा अपने राज्य मेवाड़ की सत्ता के लिए लड़ने वाला एक लड़ाका ही बताया गया जिसके लिए इतिहास की किताबों में चार पंक्तियाँ ही पर्याप्त हैं। ऐसी मानसिकता और विचारधारा, जिसने हमें अपने असली गौरवशाली इतिहास को आज तक नहीं पढ़ने दिया, हमारे कातिलों और लुटेरों को महापुरुष बताया और शिवाजी और राणा प्रताप जैसे धर्म रक्षकों को लुटेरा और स्वार्थी बताया, को आज अपने पैरों तले रौंदना है।

संकल्प कीजिये कि अब आपके घर में अकबर की जगह राणा प्रताप की चर्चा होगी। क्योंकि इतना सब पता होने पर यदि अब भी कोई अकबर के गीत गाना चाहता है तो उस देशद्रोही और धर्मद्रोही को कम से कम इस देश में रहने का अधिकार नहीं होना चाहिए।

अब तो न अकबर न बाबर से वहशी
दरिन्दे कभी पुज न पायें धरा पर
जो नाम इनका ले कोई अपनी जबाँ से
बता देना राणा की तलवार का बल

इस धूर्त दरिन्दे के पर्दाफाश के बाद, भारत के सच्चे सपूत को अग्निवीर
का शत शत नमन :

कोई पूछे कितना था राणा का भाला
तो कहना कि अकबर के जितना था भाला
जो पूछे कोई कैसे उठता था भाला
बता देना हाथों में ज्यों नाचे माला
चलाता था राणा जब रण में ये भाला
उठा देता पांवों को मुग़लों के भाला
जो पूछे कभी क्यों न अकबर लड़ा तो
बता देना कारण था राणा का भाला ।

अध्याय ५

जोधा अकबर - प्रेम कहानी या बेटी के बलात्कार की मज़हबी दास्ताँ?

मुगलिया महलों की ऊँची दीवारों के पीछे बहुत कुछ ऐसा हुआ जो ना तो बॉलीवुड के कलाकार, निर्माता और निर्देशक जानते हैं और ना ही आम हिंदुस्तानी। रात की खामोशी में हज़ारों चीखती औरतों, बच्चियों और लौंडों की आवाज़ें उठतीं, दबतीं और सुबह तक बंद हो जातीं। मुगल सुल्तानों ने कुछ ऐसा किया कि जैसा हिंदुस्तान की फ़िज़ाओं ने आज तक नहीं देखा था। अकबर पादशाह का समय आते आते हिंदुस्तान की औरतों और बच्चों के साथ वह सब हुआ जिसे सुनकर ज़मीन पैरों के नीचे से खिसक जाए। वह इतना भयानक है कि आज कोई भी उसकी बात करने को तैयार नहीं। डर और ख़ौफ़ हर मन में बैठा है। पता नहीं मुगलों

की कौन सी सच्चाई उजागर करने पर फ़तवे आ जाएँ। दोस्त साथ छोड़ जाएँ। या सरकार नाराज़ हो जाए। कहानी इतनी दर्दनाक है कि दिलीप कुमार की मुगल ए आज़म का ख़ुमार धुआँ हो जाएगा। जोधा अकबर पर बने नाटक और फ़िल्मों से पैदा हुआ रोमांस और रोमांच ताश के पत्तों की तरह बिखर जाएगा।

मुग़लों के सरताज अकबर महान की ज़िंदगी कुछ ऐसी है। प्यार हवस बन जाएगा। माँ के नरम हाथों में ममता का स्पर्श नहीं, बीवी का प्यार नज़र आएगा। बाप का हाथ बेटी के सर पर नहीं, पैरों पर नज़र आएगा। पत्नी के हाथों में हाथ नहीं, दूसरे मज़हब की औरतों को अपने हरम में खींच लाने और उन्हें बिस्तर में रखने का गुरु नज़र आएगा। बॉलीवुड कहानियों और हिंदुस्तानी स्कूलों में दिखाए/पढ़ाए गए झूठ के पुलिंदों से कोसों दूर, इतिहास अकबर महान की कुछ और ही कहानी बयान करता है। बाप समान बैरम खान को फ़ारिग़ करके उसकी बीवी जो रिश्ते में माँ से कम नहीं लगती थी, इस महान की बीवी बनायी गई। माँ-बेटे के रिश्ते को बहुत पहले कलंक लगा चुके बॉलीवुड के इस चहेते ने यहीं पर बस नहीं की। माँ के बाद बारी अब बेटी की थी। बाप और बेटी के रिश्ते को एक नया मतलब देने का श्रेय इसी महान को जाता है।

जोधा कौन?

इतिहास गवाह है कि ४० बीवियों और ५००० औरतों से भरे अकबर 'महान' के हरम में कोई भी औरत जोधा नाम की नहीं थी। अकबर की ज़िंदगी में उसके जीवन पर ४ इतिहास लिखे गए। ये चारों उसके टुकड़ों पर पालने वाले मशहूर चाटुकारों और प्रशंसकों ने लिखे हैं। अबुल फ़ज़ल

की आइन ए अकबरी और अकबरनामा। बदायूनी की मुतखाबू तवारीख और निज़ामुद्दीन की तबक्रात ए अकबरी। इन सब किताबों में अकबर महान के जंग से लेकर बिस्तर तक के सब क्रिस्से विस्तार से बयान हुए हैं। लेकिन किसी एक में भी जोधा का 'ज' भी नहीं मिलता। अकबर के हरम में जोधपुर से केवल एक ही लड़की थी।

इतिहासकारों के मुताबिक अकबर ने मानसिंह की बुआ से निकाह किया था। जी हाँ, मानसिंह वही मशहूर गद्दार जिसने अकबर के खिलाफ महाराणा प्रताप के स्वतंत्रता संग्राम में मुगलों का नेतृत्व किया। यह हीरा कुँवारी थी जिसे 'धर्मनिरपेक्ष' अकबर 'महान' ने इस्लाम कुबूल करवाया। यही हीरा कुँवारी अब मरियम उज़ ज़मानी के नाम से जानी गयी।

मनभावती - जहांगीर की बहन और बीवी

इतिहास बताता है कि अकबर मानसिंह और उसकी बहन मनभावती भाई का फूफा था। अकबर महान की तमन्ना थी कि मनभावती (जो कि अभी एक छोटी बच्ची ही थी) का निकाह उसके बेटे जहांगीर से हो जाए। जहांगीर और मनभावती भाई बहन भी थे क्योंकि मनभावती जहांगीर के मामा की बेटी ही थी। भाई बहन के प्यार को मियाँ बीवी के प्यार में बदलने में माहिर मुगल निकाह की तैयारियों में जुट गए। १५८५ में १६ साल के जहांगीर का निकाह एक मासूम छोटी सी सुंदर बच्ची मनभावती के साथ हो गया। कुछ इतिहासकारों का कहना है कि इसे जोधा कहा गया क्योंकि यह जोधपुर के राजा की बेटी थी। कुछ इतिहासकारों का यह भी कहना है कि अकबर असल में जोधा का मौसा था। लेकिन कुछ भी प्रामाणिक नहीं है।

खैर, भाई बहन अब मियाँ बीवी हो चुके थे। और फिर शुरू हुआ शाही मुगल हरम में छोटी बच्ची के साथ एक घिनौना खेल। २० साल तक बाप समान ससुर/ फूफा/ मौसा अकबर और मियाँ/ भाई जहांगीर के बीच जिस्म के खेल में पिसती रही इस बच्ची ने आखिरकार १६०५ में खुदकुशी कर ली।

मनभावती ने आत्महत्या क्यों की? मुगल और मुसलमान इतिहासकारों ने लड़की की मानसिक हालत ठीक नहीं होने पर ही इसका ठीकरा फोड़ा है। पर उसकी यह हालत किसने की, इस पर जिहादी जुबानों पर ताले पड़ जाते हैं। हकीकत यह है कि बालकपन से ही ३० साल के अफ्रीमची ससुर और १६ साल के अफ्रीमची शौहर के संयुक्त हरम में फ्रँसी लाचार बच्ची और ज़्यादा मानसिक और जिस्मानी यातना नहीं झेल सकती थी। वैसे भी जहांगीर से उसका निकाह महज़ एक दिखावा था।

सुन्नी मुसलमानों में मर्द की मौज मस्ती के लिए मिस्यार की एक रिवायत है जिसमें किसी औरत/बच्ची से थोड़े वक़्त का निकाह किया जा सकता है। शिया मुसलमानों में ऐसा ही कुछ मुताह नाम से प्रचलित है।

एक और बात जो अक्सर लोगों को पता नहीं होती। ग़ैर मुसलमान के साथ निकाह नाजायज़ है। इसलिए जब तक औरत/बच्ची इस्लाम कुबूल नहीं करती तब तक वह केवल एक लौंडी हो सकती है, बीवी नहीं। बीवी ४ तक ही मुमकिन हैं लेकिन लौंडी कितनी भी रखी जा सकती हैं।

मुगल बादशाहों की महानता के क्रिस्से सुनाते वक़्त भांड इतिहासकार ये बात अक्सर सुनाते हैं कि कैसे उन्होंने धर्म-मज़हब के बंधनों से ऊपर उठ कर हिंदू औरतों से निकाह किए। मक्कार इतिहास के दलाल यह बताना

भूल जाते हैं कि इस्लाम में निकाह तब तक माना ही नहीं जाता जब तक कि औरत इस्लाम कुबूल नहीं करती। तो अगर किसी हिंदू औरत का मज़हब नहीं बदला गया तो वह बादशाह की बीवी थी ही नहीं। बॉलीवुड के अधकचरे ज्ञानियों की नज़र में वो बीवी हो सकती थी लेकिन शाही हरम में उसकी औकात एक लौंडी से ज़्यादा नहीं थी।

तो इस तरह मुगल सुल्तान ऐय्याशी के लिए हिंदू लड़कियों को हरम में डालते थे। उनके लिए अलग महल बनवाते थे ताकि हमेशा उनके साथ रहने का झंझट ना रहे। इसके दो फ़ायदे थे। कभी भी अलग अलग रहने का हवाला देकर निकाह ख़त्म किया जा सकता था या उसे मिस्त्यार बताकर उससे पल्ला झाड़ा जा सकता था। दूसरा, काफ़िर औरत लौंडी बना कर भी अलग महल में रखी जा सकती थी। मगर थोड़े से राज्य और मन्सबदारी की चमक में अंधे हुए ग़द्दार हिंदू राजा इन अलग महलों में अपनी बहन बेटियों को भेज कर खुद को धन्य समझते रहे कि बादशाह उनकी औरतों का कितना ख़याल रखते हैं! भारत भूमि पर वास्तविक अत्याचार इन्हीं ग़द्दार हिंदू राजाओं ने किया। इनकी इस नीच हरकतों का ख़ामियाज़ा इनकी स्त्रियों ने भुगता और भारत आज तक भुगत रहा है।

किसी हिंदू औरत का इस्लाम कुबूल करना या ना करना मुगल सुल्तानों के लिए कोई ज़्यादा अहमियत नहीं रखता था। काफ़िर औरत इस्लाम कुबूल करे तो अल्लाह का सवाब मिलता था। नहीं करे तो उसे बीवी बनाने का झंझट ख़त्म। उसे हरम में जैसे चाहे वैसे इस्तेमाल करो। दोनों हाथों में लड्डू लेकर मुगल सुल्तानों की हैवानियत जारी थी जिसे कुछ ग़द्दार हिंदू राजाओं ने परवान चढ़ाया।

भांड इतिहासकार कहते हैं कि अकबर ने मनभावती का कभी मज़हब नहीं बदला। मानसिंह का परिवार इसी मुग़ालते में रहा कि उनकी मनभावती बादशाह सलामत की चहेती बीवी बन गई है। पर इस्लामी निकाह रिवायत से पूरी तरह बेख़बर उस मूर्ख राजपरिवार को यह पता ही नहीं था कि इस्लामिक मज़हब के अकीदों के हिसाब से वो एक हिन्दू औरत थी जो केवल और केवल किसी मुस्लिम सुल्तान की लौंडी बन सकती थी, पत्नी नहीं। कुछ घने सयाने तर्क देते हैं कि अकबर ने कभी अपनी हिंदू बीवियों का मज़हब नहीं बदला। यह बात एक ख़ुराफ़ात के सिवा कुछ भी नहीं। हीरा कुँवारी का मज़हब बदल कर उसे मरियम उज़ ज़मानी बनाया गया। जो लोग भोले लोगों की आँखों में धूल झोंकने के लिए कहते हैं कि यह केवल एक उपाधि थी, नाम नहीं तो वो एक काम करें। किसी भी मान्यता प्राप्त आज के मौलवी से जाकर पूछ लें, क्या कोई हिंदू औरत हिंदू होते हुए भी किसी मुसलमान की बीवी हो सकती है? बस जवाब मिल जाएगा।

ख़ैर, बात यह है कि मनभावती को बहू नहीं बल्कि लौंडी बना कर अकबर के हरम में पटक दिया गया। क्योंकि लौंडी के साथ एक से ज़्यादा मर्द भी हलाल थे, वह बाप और बेटे दोनों की हवस मिटाने के काम में लगाई गई। जो काम वो बीवी बनकर न कर सकती थी वह काम उसे लौंडी बना कर लिया गया। यही पाक किताब का भी फ़रमान था।

जहांगीर अभी कमसिन उम्र का छोकरा ही था। इसलिए उसके हरम की हर लौंडी पर अकबर महान का ही एकछल अधिकार था। मनभावती ने पहले दिन ही भांप लिया था कि उसका भविष्य क्या होगा। उसने २० साल तक सब कुछ सहा। इस बीच उसने शहज़ादा खुसरो को जन्म दिया। कुछ इतिहासकारों की नज़र में यह बात भी बहस का मुद्दा है कि खुसरो

असल में किसका बेटा था। अकबर का या जहांगीर का? क्योंकि बाप-बेटे की क़रीबी कुछ यूँ थी कि डीएनए टेस्ट भी होता तो भी काम नहीं आ सकता था।

बाप बेटे की इस ऐय्याशी ने मुग़लिया ख़ानदान में हलचल मचा दी। दोनों ने ही मनभावती को बदचलन करार दे दिया। जहांगीर अपने बाप से उलझ पड़ा। फिर एक दिन वो हुआ जो किसी ने नहीं सोचा था। इसने मनभावती के भाई मानसिंह और बाप का क़त्ल कर दिया। हिंदुओं के ग़द्दार जो आज तक मुग़लिया महानता के मुग़ालते में जीते थे, मुग़ल तलवार से ही छेद दिए गए। जहांगीर ने 'बदचलनी' का बदला अपनी बीवी से कुछ इस तरह से लिया। इस घटना के बाद जोधा लगभग पागल हो गई। रही सही कसर तब पूरी हुई जब उसके बेटे खुसरो को जहांगीर और अकबर दोनों की दुत्कार मिली। अपने बेटे की इस दुर्गति को देख कर जोधा ने आत्महत्या कर ली। बॉलीवुड के महान निर्माता निर्देशक क्या कभी इस पर कोई फ़िल्म बना सकेंगे?

अकबर महान और उसका हवसी मंसूबा - एक हैवानी आगाज़

१५८२ में मुस्लिम सुल्तान अकबर ने दीन ए इलाही नाम का एक अलग मज़हब बनाया जो हिंदुओं को बेवकूफ़ बनाकर मुसलमान बनाने का जिहादी मंसूबा ही था। इसके बेटों और चमचों ने फ़ौरन इस नए मज़हब की सच्चाई को कुबूल किया और इस नए पैग़म्बर/खुदा के मज़हब में भर्ती हुए।

सुल्तान का असली नाम जलालुद्दीन मोहम्मद था। इसने अपने नाम के आगे अकबर लगवाया क्योंकि अकबर अल्लाह का एक नाम/विशेषण

है। इसका असली खेल लोगों के बीच में नया खुदा या पैग़म्बर बनने का था। और इसी के चलते इसने अपने नए नए मुरीदों से अल्लाहो अकबर के नारे बुलंद करवाए। इसने मुनादी करवा दी कि इसके पास चमत्कारी ताक़तें हैं। किसी पैग़म्बर की तरह यह मूर्ख लोगों से अपने पैर धुलवाता था और फिर उसी गंदे पानी को चरणामृत बोलकर उन्हें पीने के लिए मजबूर करता था। इसका दावा था कि इसके पैरों के गंदे पानी को पीकर लोगों के मर्ज़ ठीक हो जाते हैं। और इस तरह इसने अपने आपको एक नया पैग़म्बर घोषित किया।

असली खेल

इस्लाम जैसे एक नए मज़हब का ही एक नया पैग़म्बर बनने के बाद इसने अपने चेलों और मुरीदों में बात फैला दी कि इसे भी वही सारे अधिकार और मौज मस्ती के सामान मिलने चाहिएँ जो इस्लाम के पैग़म्बर के पास थे। इसके मुताबिक़ अब अपने बेटे की बीवी (बेटी समान) इस पर हलाल थी और यह उसके साथ निकाह करके हमबिस्तरी कर सकता था।

जो पाठक नहीं जानते उन्हें बताते चलें कि अल-तबरी (पैग़म्बर की जीवनी के लेखक) के मुताबिक़, एक दिन पैग़म्बर ने अपनी बहू (बेटे की बीवी) को बिना कपड़ों के देख लिया था और पैग़म्बर के दिल की बात जानकर अल्लाह ने बहू की ख़ूबसूरती को पैग़म्बर के लिए हलाल करार दे दिया। अल्लाह के हुक्म पर पैग़म्बर ने अपने बेटे की बीवी को अपनी बीवी बनाया। यह सब इतना रूहानी था कि कई विद्वानों के मुताबिक़ इनका निकाह भी जन्नत में ही पढ़ दिया गया जिसे किसी ने नहीं देखा। तो इस तरह दुनिया के क़ानून और निकाहनामे की ज़रूरत ही नहीं रह गयी थी।

कुरान, हदीस और पैगम्बर की जीवनी इस बात का दावा करती हैं कि पैगम्बर ने आयशा नाम की एक छह साल की बच्ची से भी निकाह किया था और निकाह के जिस्मानी फ़र्ज़ सरअंजाम दिए जब वह केवल नौ साल की थी। यह सब पैगम्बर ने अल्लाहताला के हुक्म से ही किया था।

तो इस तरह यह बात साफ़ थी कि पैगम्बर पर कोई दुनिया के उसूल नहीं चलते। और उन्हें अल्लाह की मर्ज़ी से वो सब करने की आज्ञादी है जो अल्लाह चाहता है और जिसे अल्लाह केवल उसे ही बताता है जब कोई और तीसरा सामने नहीं होता। पैगम्बर जिससे चाहे उससे निकाह कर सकता है, जितनों से चाहे उतनों से कर सकता है, जिस उम्र की लड़की से चाहे उस उम्र की लड़की से कर सकता है और बिना निकाह के भी लौंडी बनाकर सब कुछ कर सकता है।

यह सब उन्हीं कुरान के अनुवाद/तर्जुमे/संस्करण थे जिनसे सीखकर आज इस्लामिक स्टेट या अल क़ायदा के आतंकवादी ग़ैर मुस्लिम औरतों और बच्चों के बलात्कार और क़त्ल करते हैं और उसे अल्लाह और पैगम्बर का नायाब काम समझते हैं। जब मज़हब ही हवस की आग में घी डालने का काम करे तब असली ईश्वर, किताब या महापुरुषों की बात कौन सुनेगा? हवस की आग में सुलगते मुस्लिम आक्रांता यह नहीं सोच पाए कि क्या ऐसी गंदी कहानियों से अल्लाह या पैगम्बर की शान बढ़ती है या उनकी पाकीजगी पर आँच आती है। अपने गंदे खेल के लिए हवस की कहानियाँ घड़ कर मज़हब की किताब में पैगम्बर/अल्लाह के नाम से बेचने वालों को इस खेल से क्या मिला?

ख़ैर, कुरान और हदीस की कहानियों से पैगम्बरी के पेच सीख कर

अकबर अपने नए मज़हब दीन ए इलाही का पैग़म्बर बन बैठा। और फिर शुरू हुआ बच्ची मनभावती और सैंकड़ों बाक़ी औरतों-बच्चों की जिस्मानी ज़्यादती का दौर जिसे पढ़ कर कलेजा फट जाता है, आत्मा सिहर जाती है। हिंदू और मुसलमान दोनों को अपने नए मज़हब में जोड़ने के लिए अनेक प्रपंच किए। हिंदुओं के आगे हिंदू बन कर उनकी औरतों को आसानी से हरम में लाना हो या कट्टर मुल्लाओं को हरम में काफ़िर हिंदू औरतें दिखाकर इस्लाम की जीत दिखाना, इसने मूर्ख हिंदुओं को और मूर्ख बनाया और कट्टर कठमुल्लों को और कट्टर बनाया। और इस सब के पीछे इस दरिंदे की हवस बेक्राबू हो रही थी।

पर इतने के बाद भी अकबर 'महान' बच्ची मनभावती को लेकर अपने पैग़म्बरी इरादों में कामयाब नहीं हो सका। अफ़्रीम के नशे और ५००० लौंडियों से भरे हरम की लत ने उसे कहीं का नहीं छोड़ा। ४० बीवियों की बाहें भी इसे तसल्ली ना दे सकीं। औरतों और बच्चियों को लेकर इसकी बीमारी की हद तक बढ़ी हुई जिस्मानी कुंठाएँ अब लोगों तक पहुँच रही थीं। इसके चेलों-मुरीदों ने पैग़म्बर और उनके बेटे की बीवी की कहानी सुनाकर लोगों को शांत करने की कोशिश की।

पर बहुत देर हो चुकी थी। मनभावती-अकबर की कहानी जब मन-भावती के असली शौहर - १६ साल के बच्चे जहांगीर तक पहुँची तो वह तिलमिला उठा। उसने विद्रोह कर दिया। अकबर ने सोचा था कि मामला बिगड़ने की हालत में वह पैग़म्बर और उनकी बहू की कहानी सामने रख देगा और अपनी पैग़म्बरी की आड़ में बेटे के गुस्से की आग से बच निकलेगा। पर जहांगीर खुद भी कोई पैग़म्बर पर यक़ीन करने वाला मुसलमान नहीं था। उसे भी अपने बाप की तरह अपनी हवस ही सबसे

ऊपर दीखती थी। बाप के साथ हरम की प्रतियोगिता में बेटा कम नहीं था और मुसलसल बीवियों और लौंडियों की खेप की खेप इसके हरम में भी आती रहीं। पैगम्बरी का यह खेल अब बेक्राबू हो चला था जिसके चलते बाप बेटे में तन गयी। कुछ ही सालों में इसने खुला विद्रोह किया और अपने पैगम्बरी बाप के हर करीबी को चुन चुन के क़त्ल किया। रह रह कर एक ही बात उसके मन में आती थी। क्या उसका बड़ा बेटा उसी का है या उसका सौतेला भाई जिसे उसके बाप ने उसी की बीवी/लौंडी से पैदा किया? यही वजह थी कि जिसके चलते जहांगीर ने खुसरो (उसका बेटा/सौतेला भाई) से ताउम्र नफ़रत की।

पैगम्बरी का यह खेल आखिर बड़ी बेदुर्दी से ख़त्म हुआ। बीवी और बाप की मौत के दो साल के अंदर ही शहज़ादे सलीम (जहांगीर) ने अपने बेटे (या सौतेले भाई?) खुसरो की आँखें अपने हाथों से नोच डालीं और उसे कैदख़ाने में फेंक दिया। १५ साल बाद अपने तीसरे बेटे शाहजहाँ (जी हाँ वही ताज महल वाले प्रेमी, जिनकी कहानी आगे मिलेगी) के साथ मिलकर अंधे बेटे (या सौतेले भाई?) के टुकड़े टुकड़े करके बेरहम मौत दी।

अपने बेटे (या सौतेले भाई?) में वह अपने बाप की हवस देखता था या अपनी कमसिन लाचार बीवी की बदचलनी, यह तो शोध का विषय है लेकिन उससे उसकी नफ़रत इतनी थी कि दुश्मन भी शरमा जाए। खुसरो को अंधा बनाने के लिए उसने बाक्रायदा एक शाही इन्तेज़ाम किया था जिसमें पूरी दिल्ली को न्योता भेजा गया। चाँदनी चौक में खुसरो को एक हाथी पर बाँध दिया गया। सड़क में दोनों तरफ़ ऊँचे ऊँचे लकड़ी के फट्टे लगाए गए जिन पर खुसरो के साथी बांधे गए थे। और फिर खुसरो के हाथी को छोड़ दिया गया। हाथी दोनों फट्टों के बीच जिस जिस साथी

के सामने से गुज़रता, उस उस का गला हलाल कर दिया जाता। गला रेत कर धीरे धीरे मरने के लिए छोड़ दिया जाता। पूरे दिन यह खूनी खेल चला। खुसरो के ४०० साथियों को हलाल कर दिया गया। और आखिर में शहज़ादा सलीम (जहांगीर) ने खुद अपने बेटे (या सौतेले भाई?) खुसरो की आँखों में हाथ डालकर उन्हें बाहर निकाला। जी हाँ, ये वही शहज़ादा सलीम हैं जिनकी मुहब्बत और इंसानियत के क्रिस्से बॉलीवुड के बड़े बड़े निर्देशकों और अभिनेताओं ने आपके सामने अपनी फ़िल्मों से बयान किए हैं। झूठ के इस कारोबार में फँस कर आम हिंदुस्तानी कैसे क्रातिलों को अपने दिलों का राजा बना लेते हैं, यह इसका बेहतरीन नमूना है।

ख़ैर, मनभावती ने बहुत पहले ही भविष्य भांप लिया था। २ साल पहले ही ज़हर खा कर उसने मुक्ति पा ली।

अकबर जान चुका था कि उसकी पैगम्बरी अब ढलान पर है। जहांगीर मुग़लिया सियासत में अब बाप से ज़्यादा ताक़त रखता था। पूँछकटी छिपकली के समान हर पल पैतरे बदलने वाले अकबर 'महान' ने झट बेटे जहांगीर से माफ़ी माँग ली। बाप बेटे की कलह घर में ही रहे इस कोशिश में हरम की औरतों ने बीच बचाव किया। उन्हें पता था कि बाप बेटे में कुछ ऐसा था कि जो दुनिया को बताने लायक न था। जहांगीर को इस बात पर क़ायल कर लिया गया कि वो अकबर का वफ़ादार रहेगा और खुसरो (जिसे अकबर अपना बेटा समझता था) को नुक़सान नहीं पहुँचाएगा। पर अफ़सोस। बाप की तरह बेटा भी रंग बदलने में माहिर था। बाप अकबर के अल्लाह को प्यारा होते ही जहांगीर ने चाँदनी चौक में खुसरो के लिए मैदान सजवा दिया जिसे ऊपर बयान किया जा चुका है। क्या इतने सब पर भी ये मुग़ल हिंदुस्तान के महान राजे बने रह सकते हैं? जिनके माँ, बेटी

और बहन के रिश्ते बिस्तर की चादरों की सलवटों में कुचल दिए जाते थे, जिनके लिए बाप, भाई और बेटे सब के सब गद्दी और हरम के प्रतिस्पर्धी मात्र थे, जो एक दूसरे के हाथों काट दिए जाते थे, इन मुगलों ने हिंदुओं और हिंदुस्तान के साथ क्या किया होगा? पर भाड़े के इतिहासकारों और बॉलीवुड के निर्माताओं को कीचड़ में ही कमल खिलाने की पुरानी आदत है। कमल कीचड़ में खेलता है, इस मुहावरे को चरितार्थ करने के लिए कीचड़ में ही मुँह डाल के बैठना इन लोगों ने अपना धंधा बना लिया है।

खैर, पैगम्बरी के अपने खेल में खुद को सबसे ऊँचा साबित करने के चक्कर में इसने एक ढोंग रचा। अपने नए मज़हब दीन ए इलाही के मानने वालों के लिए औरत, लम्पटता, हवस इन सबसे दूर रहने के फ़रमान जारी किए। ५००० लौंडियों और ४० बीवियों से घिरा यह नए मज़हब का नया पैगम्बर दूसरों के लिए ब्रह्मचर्य के गीत गुनगुनाने लगा। इसे लगा कि बाक़ी सबको संयम सिखा कर खुद मनमानी करेगा। मगर १३ साल की कमसिन उम्र में बाप के इस झूठे मज़हब में ज़बरदस्ती यक़ीं करवाए जाने की याद जहांगीर के मन में आज भी ताज़ी थी। जैसे उम्र बढ़ी तो समझ आया कि शैतान बाप कैसे उसे संयम सिखा कर खुद उसी की बीवी का शोषण कर रहा था। ५००० औरतों के हरम के बावजूद भी अपनी बीवी पर बाप की हरकतें उसका गला घोट रही थीं।

बाक़ी जो हुआ वह इतिहास है जो ऊपर बयान किया है। बाप बेटे के ये ख़ूनी खेल इस्लाम के हिंदुस्तान में आने से शुरू हुए जो उन्नीसवीं सदी तक बदस्तूर जारी रहे। मुग़ल शहज़ादों के जीवन आज से ज़्यादा सुखी कभी नहीं रहे क्योंकि आज बाराबंकी रेलवे स्टेशन के प्लैटफ़ॉर्म नम्बर २ पर कई मुग़ल शहज़ादे और शहज़ादियाँ शांति से अमरुद बेचते हुए पाए जाते हैं।

इतनी शांति और चैन मुगल परिवारों में पहले कभी नहीं देखी गयी।

खैर, हवस और खून के इस शर्मनाक इतिहास के पन्नों में आज भी उस निरपराध, बेबस और लाचार नन्ही बच्ची की चीखें दबी पड़ी हैं जिसकी झूठी कहानियों पर बॉलीवुड के भांड अरबों कमा चुके हैं। बचपन से लेकर मरने तक के ३४ साल के छोटे से सफ़र में शैतानी बाप-बेटे के बीच फ़ंसी इसी बच्ची की कहानी को जोधा अकबर का प्यार बना कर पेश कर दिया गया है। एक बच्ची की लाचारी के मनघड़ंत क्रिस्सों से करोड़ों अरबों बनाने वाले और उस पर ताली पीटने वाले केवल मुगलों के दास, गुलाम और चाटुकार हो सकते हैं, हिंदू नहीं।

सार

बॉलीवुड की फ़िल्मों से इतिहास जानने वाले इस सच्चाई से निश्चित रूप से निराश होंगे। बहुत से लोग इन बातों की सच्चाई का प्रमाण माँगेंगे! जिन्होंने कभी बॉलीवुड की फ़िल्मों पर सवाल नहीं किए, किताबें नहीं खोलीं, अब वे सब इतिहासकार बनेंगे। सस्ते मनोरंजन से इतिहास सीखने वाले दो कौड़ी के भांड सुकरात बन कर सवाल मढ़ेंगे। ३०,००० हिंदू औरतों और बच्चों का चित्तौड़ में एक दिन में बड़े फ़क्र से कल्लेआम करवाने वाले अकबर को महान क्यों कहा गया, ऐसा सवाल भी पूछने की हिम्मत जिनकी नहीं, वे सब अब हमारे सत्य का प्रमाण माँगेंगे! ऐसे निर्वीर्य नपुंसकों से हमें कुछ नहीं कहना। जो सत्यान्वेषी हैं वे सुनें। यहाँ दिए गए तथ्य और विश्लेषण तार्किक हैं। कोई बाप अपने बेटे की आँखें अपने हाथ से कैसे निकालता है? कोई बेटा बाप पर सेना लेकर कैसे चढ़ जाता है? कैसे वो बेटा अपनी माँ का लाड़ला है, दादा का लाड़ला है पर

बाप का जानी दुश्मन है? कैसे दादा अपने पोते की जान की ज़मानत उसी के बाप से चाहता है? अपने बेटे और शौहर के झगड़े से तंग आकर कैसे वो माँ पागल हुई? क्यों ज़हर खाकर उसने जान दी जिसे हिंदुस्तान की मलिका होना था? बाप समान बैरम खान की बीवी जो अकबर की माँ का दर्जा रखती थी, कैसे उसे अकबर ने अपने हरम में घसीटा? कैसे माँ समान औरत को बीवी बनाया? इस सब के बाद क्या कहानी बनती है? अपने उस्ताद और दरबारियों की भी बीवियों, लौंडियों को पहले खुद 'चखने' वाले दरिंदे जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर के लिए नाबालिग बेटे की नाबालिग बीवी का शोषण करना क्या बड़ी बात है?

सच्चाई यह है कि सदियों पहले के मुस्लिम सुल्तान आज के इस्लामिक स्टेट (ISIS) से भी कहीं ज़्यादा बर्बर और हैवान थे। अगर जोधा अकबर की कहानी में ज़रा सी भी सच्चाई है तो वो यही है जो इस अध्याय में बयान की गई है। हिंदू संस्कृति और बाक़ी सभी सभ्य समाजों में बेटे की पत्नी/बहू बेटे का दर्जा रखती है। किसी दूसरे की बहू, पड़ोसी की बहू, रिश्तेदार की बहू या दोस्त की बहू बेटे ही मानी जाती है। पर यह निराली रीत जिहादियों के यहाँ ही प्रचलित है जिसमें पैग़म्बर पर ही बहू से शादी करने की कहानियाँ लिख कर उनका अपमान किया जाता है और अगर कोई इस पर सवाल करे तो उसे ख़ामोश कर दिया जाता है। जिन्होंने अपनी हवस की आग में पैग़म्बरों के पाक जीवन को भी नहीं छोड़ा, उनसे बाक़ी क्या उम्मीद है?

शर्म की बात है कि मुग़ल पिशाचों के बौद्धिक वंशज आज तक भी औरतों और बच्चों के साथ बलात्कार और शोषण करते आ रहे हैं। लव जिहाद हिंदुस्तान और यूरोप में मज़हबी आतंकवाद का एक नया चेहरा

बनकर उभरा है। लाखों गैर-मुस्लिम लड़कियों को प्यार के जाल में फँसाया जा रहा है। फिर उनका धर्म बदल कर, शोषण करके, बच्चे पैदा करके, मार पीट कर या तो घर से निकाल दिया जाता है या इस्लामिक स्टेट के आतंकवादियों के लिए बेच दिया जाता है। लाखों की संख्या में ऐसी लड़कियाँ हैं जिन्होंने अपने धर्म बदले हैं केवल इसलिए ताकि वो अपने मुस्लिम प्रेमी को खुश कर सकें। एक बार धर्म बदलने और शादी हो जाने के बाद इनका असली चेहरा सामने आ जाता है। इस विषय पर अलीशा चोपड़ा की लिखी किताब 'When Aamir Met Anushka' पढ़ने वाली है। अलीशा चोपड़ा खुद लव जिहाद का शिकार बनी और बहुत मुश्किल से इसने अपनी जान बचाई।

लव/रेप जिहाद सदियों से हिंदुस्तान में मुस्लिम संस्कृति का हिस्सा रहा है। इस अध्याय में अगर एक भी बात गलत या इस्लाम के उलट हो तो हमारी मौलवी और इस्लाम के आलिमों को खुली चुनौती है :

कोई है यहाँ जो खुली घोषणा कर सके कि जो भी अपनी बहू (बेटे की बीवी या गोद लिए हुए बेटे की बीवी या दोस्त की बहू या रिश्तेदार की बहू या पड़ोसी की बहू) से निकाह या जिस्माना ताल्लुक करना चाहता है या जिसने ये काम कभी किया है वह एक हवसी दरिंदा है/था?

कोई है जो खुली घोषणा कर सके कि छोटी बच्चियों से शादी या जिस्मानी ताल्लुक हराम है और जो ऐसा करता है वह एक दरिंदा है जिसे सूली पर लटका दिया जाना चाहिए?

कोई है ऐसा जो कह सके कि जो भी पैगम्बर के बारे में ये सब बातें कुरान/हदीस में लिखी हैं वो सब गलत हैं? और इन गलत बातों में किसी

मुसलमान को यक्रीं नहीं करना चाहिए? इन्हें मानने वाला इस्लाम और इंसानियत का दुश्मन है? है कोई जो पैग़म्बर का अपमान करने वाली इन किताबों पर पाबंदी लगाने की पहल करे?

हिंदू-विरोध को अपनी रोज़ी रोटी समझने वाले वामपंथी ग़द्दारों और किसी मुसलमान की टोपी दिखते ही घर में दुबक जाने वाले उदारवादियों के लिखे मन घड़ंत मुस्लिम-परस्त क्रिस्से कहानियों को इतिहास बताकर हिंदुस्तान की तीन नस्लें बर्बाद की जा चुकी हैं। जब तक एक बालक बड़ा होता है, उसे दो ही चीज़ें इतिहास की याद होती हैं - १ मुसलमान ने १००० साल हिंदुस्तान पर राज किया २ हिंदुस्तान को हिंदुस्तान मुग़लों ने बनाया। जिन नीच जानवरों की हैसियत ओसामा बिन लादेन और हाफ़िज़ सईद जैसे जिहादी पिल्लों से बढ़कर कुछ नहीं थी, उन्हें हिंदुस्तान का कर्ता-धर्ता, सुल्तान और ना जाने क्या कहा और समझा गया। जिन पर थूकना चाहिए था उनके जन्म और मरण की तिथि याद करते हुए स्कूल के बच्चों के दिन बीतते हैं। जिनको समय रहते इतिहास में आतंकवादी घोषित कर देना चाहिए था जब उन्हें हीरो बनाकर परोसा गया तो नतीजा यही होना था। हिंदू और नरम होता गया। मुसलमान और गरम होता गया। हिंदू क़ानून के आगे झुकता गया, मुसलमान क़ानून अलग बनाता गया। आज हालत यह है कि हिंदुस्तान में समान नागरिक क़ानून की माँग करने वाले को हिंदू चरमपंथी कह कर गालियाँ दी जाती हैं, वन्दे मातरम की रैली निकालने वालों को गणतंत्र दिवस पर सरेआम गोलियाँ मारी जाती हैं और किसी मुसलमान औरत से शादी की बात करने को लेकर हिंदू आदमी के गले सड़क पर काट दिए जाते हैं। मतलब साफ़ है, शैतानों को किताबों में पालोगे, सड़क पर शैतान पलेंगे।

मनभावती ने अपने पिता की मातृभूमि से की गई गद्दारी का परिणाम भुगता। मनभावती ने बाप समान ससुर की हैवानियत और शौहर के शोषण के बीच खुद को स्वाहा कर लिया। मनभावती की हालत आज की किसी यज़ीदी दासी से अलग नहीं थी जिसे इस्लामिक स्टेट के किसी कैम्प में रोज़ कुचला जाता है। उसकी कहानी को प्रेम सम्बंध कहना पूरी स्त्री जाति का अपमान है। और सम्भवतः हिंदुस्तान के पतन के कारणों में से एक कारण भी।

अध्याय ६

शाहजहाँ - माली और बगीचे के फूल !

बॉलीवुड के निर्माता निर्देशकों का महबूब यह बादशाह सम्भवतः अपने दादा का हरमी (हरम सम्बंधित, कृपया हराम से सम्बंध ना जोड़ें) बेटा था। अपने घर की औरतों से ही दिल लगा बैठना इसके मुगल खून में शामिल था। और खून बोल उठा। शाहजहाँ की अपनी बेटी ही हवसी बाप की दरिंदगी की पहली शिकार बनी। वो खूबसूरती और यौवन में अपनी माँ से बढ़कर थी और यही उसकी सबसे बड़ी ग़लती थी। लोगों की नज़र में ताजमहल बनाने वाला यह शिल्पकार असल में एक माली था जो अपने ही बगीचे के फलों को पहले खुद 'चखने' में यकीन रखता था।

मुरालों की हर नस्ल जिस्मानी हवस के किसी नए विकृत रूप का कीर्तिमान बनाती थी। मसलन, बाबर ने लौंडेबाज़ी में अपने जौहर दिखाए।

१४ साल के बाबरी नाम के अपने लौंडे आशिक़ का महबूब (या महबूबा?) बाबर आज भी अयोध्या में उसके नाम की मस्जिद बनवाने के लिए बहुत से जिहादियों के लिए महबूब का दर्जा रखता है। हुमायूँ ने जिस्म की मंडी में बाली उमर में ही क़दम धर दिया था। महज़ १४ साल की बच्ची को ख़रीद कर उससे निकाह करके अगले ही बरस उसकी गोद अपने पापों से भर दी जिससे अकबर जैसा पूत पैदा हुआ।

मुग़लों के इस 'महान' पूत ने जिस्मफ़रोशी के सारे कीर्तिमान तोड़े। इस्लाम से अलग एक नया मज़हब बनाकर यह उसका पैग़म्बर बना। पैग़म्बर बनने के साथ ही किसी भी औरत, लड़की या बच्ची के जिस्म पर यह अपना खुदाई हक़ समझता था। देश भर से काफ़िर हिंदुओं की ५००० औरतों को गुलाम बनाकर उससे अपने हरम सजाने वाला अकबर 'महान' फिर भी छोटी बच्चियों को लेकर अपनी जिस्माना बीमारी को क़ाबू नहीं रख सकता था। पैग़म्बरी की आड़ में इसने अपने बेटे जहांगीर की बीवी जोधाबाई को भी नहीं छोड़ा जिसकी कहानी आप पहले देख चुके हैं।

शाहजहाँ - एक हरमज़ादा (माला का ध्यान रखें, हरम सम्बंधित)

दूध में से पानी तो एक बार को फिर भी अलग किया जा सकता है लेकिन बादशाह अकबर के ५००० औरतों से भरे हरम में कौन किसका बाप बना और कौन किसकी माँ, यह पता लगाना नामुमकिन था। यही वजह है कि इतिहासकारों में आज तक भी मुस्लिम शहज़ादों के माँ और बापों के अलग अलग वर्णन किए जाते हैं। सुल्तानों के हरम (इस्लामिक वेश्यालय) में पैदा हुए हर मुस्लिम शहज़ादे या शहज़ादी का इतिहास

अनिश्चितता के इसी अंधेरे में डूबा है। अनिश्चितता के इस दलदल और घोर बेइज़्जती से मुस्लिम सुल्तानों को बचाने के लिए 'इतिहास' में किसी एक माँ और बाप के नाम पर इत्तेफ़ाक करके सच्चाई पर मिट्टी डालने की कोशिश की जाती है। पर सच के खोज करने वाले सच्चाई को खोद निकालते हैं।

तो हुआ यूँ कि पुरानी मुस्लिम रिवायत के ऐन मुताबिक़ ५००० औरतों से भरे इस्लामी वेश्यालय में औरतों पर नज़र रखने के लिए अकबर ने इस्लामी हिजड़े और शाही औरतें नियुक्त किए। हरम की हर औरत भले वो लौंडी हो या किसी की बीवी, अकबर की दौलत ही समझी जाती थी। जैसे ही अकबर के बेटे जहांगीर ने होश सम्भाला, उसी बाली उमर में उसका निकाह करवा दिया गया। और फिर बादशाह का असली खेल शुरू हुआ। जहांगीर को जंगी दस्तों के साथ दूर जंग के लिए रवाना कर दिया जाता। और फिर उसकी बीवी - जो हरम का हिस्सा होने से अकबर की लौंडी ही तसव्वुर होती थी - को अकबर अपनी हवस का शिकार बनाता। शहज़ादा जहांगीर बाली उमर में कुछ समझ ना सका पर जब अपने बाप की पैगम्बरी समझ आई तो पैरों तले ज़मीन खिसक गई। शहज़ादा बागी हो गया। उसने अपने ही एक बेटे खुसरो को केवल इसलिए क़त्ल किया क्योंकि उसे डर था कि असल में वो उसका बेटा नहीं भाई है! इस बात ने जहांगीर को अंदर से तोड़ दिया। बाप अकबर की ऐय्याशी ने उसके ख़ुद के जीवन में भूचाल ला दिया था। एक चोरनी भी ७ घर छोड़ के चोरी करती है लेकिन यहाँ तो बाप ने बेटे की बीवियों को भी नहीं छोड़ा। रात में बिस्तर पर अंगड़ाई लेती बीवियों में जहांगीर की बदनसीब आँखें सौतेली माँ को ढूँढा करती थीं। उसकी बेचैन आँखें अब अपने सब बेटों में अपने सौतेले भाई ढूँढा करती थीं। उनमें से ही एक बदनसीब बेटा ख़ुर्रम था जो आगे

जाकर शाहजहाँ नाम से मशहूर हुआ। हालात इतने ख़राब थे कि डीएनए टेस्ट भी जहांगीर के किसी काम नहीं आ सकता था !

सुनते हैं घर को घर के चिराग़ से भी आग लग जाती है। पर यहाँ तो घर के चिराग़ को घर से ही आग लग गई ! और इस तरह जहांगीर किसी पगलाए कुत्ते की तरह जीवन भर अपने ही बेटों (या भाइयों?) से लड़ता रहा। बाप अकबर के हरम के अंधेरो ने जहांगीर के अमन-चैन को सदा सदा के लिए डस लिया।

अकबर - शाहजहाँ का असली बाप ?

जहांगीर अपने बेटे शाहजहाँ को काटने को दौड़ता था। पर अकबर उसे सीने से चिपकाए रखता। मामला तब और संगीन हो गया जब बेटे को सुल्तान की गद्दी सौंपने की रिवायत तोड़कर जहांगीर की बजाए अकबर ने शाहजहाँ को गद्दी देने का मन बनाया।

शाहजहाँ की माँ कौन थी, इस बात को लेकर इतिहासकारों में तीखे मतभेद हैं। कोई जोधा तो कोई जगत गोसाईनी तो कोई किसी और नाम पर अड़ा है। यह कहानी केवल शाहजहाँ की नहीं, बाबर से लेकर बहादुर शाह ज़फ़र तक सारे मुग़लों की है। ख़ैर, शाहजहाँ की माँ कोई भी हो, वो अकबर की हवस की पहुँच से दूर नहीं थी।

इतिहास गवाह है कि जहांगीर अपने बाप से वैसी ही नफ़रत करता था जैसी एक औरत अपनी सौतन से करती है। यही नहीं, उसकी नफ़रत अपने बेटों से भी वैसी थी जैसी किसी औरत की अपने सौतन के बच्चों से होती है। लेकिन दूसरी तरफ़, अकबर अपने पोतों पर ज़रूरत से ज़्यादा ही

मेहरबान था। सौतनों की सी इस लड़ाई में जहांगीर की बीवी ने खुदकुशी कर ली या वो जहांगीर के द्वारा क़त्ल की गई।

जहांगीर - शाहजहाँ का असली बाप?

शाहजहाँ उसका बेटा था या भाई? इसी कश्मकश में बॉलीवुड का प्यारा शहज़ादा सलीम उर्फ़ जहांगीर अल्लाह मियाँ को प्यारा हुआ। पर मौत पर भी सच्चाई सामने ना आ सकी। सुल्तान दिल पर बोझ लेकर ही क़ब्र में दाख़िल हुआ। बाप-बेटे (या भाई-भाई?) में एक दबी जंग चल रही थी जो जहांगीर के आखिरी दिनों में बेटे शाहजहाँ के विद्रोह और फिर सुल्तान की गद्दी हथियाने पर ख़त्म हुई। गद्दी पर बैठते ही शाहजहाँ ने अपनी सौतेली माँ नूरजहाँ को बंदी बना लिया और फिर अपने दादा (या बाप?) अकबर 'महान' के नक्शेक़दम पर चल कर परिवार की औरतों/बच्चियों से ही मुँह काला करने में लग गया।

शाहजहाँ - बेटी का आशिक़

शाहजहाँ अपनी बीवी मुमताज़ महल से कुछ ख़ास मुहब्बत करता था इस बात का कोई ठोस सबूत इतिहास में नहीं मिलता। हाँ, बॉलीवुड की बात अलग है। उसके अपने अलग 'मसाला' इतिहासकार हैं। बीवी मुमताज़ के मरने के गम में उसके लिए ताजमहल बनाने की कहानी भी किसी प्रामाणिक इतिहास में नहीं मिलती। मगर बीवी के साथ इसके रिश्ते की सच्चाई सुनकर कलेजे दहल जाते हैं। खुद पढ़ने वाले फ़ैसला कर लें कि ताजमहल और खुद इस मुग़ल आशिक़ की सच्चाई क्या है।

शाहजहाँ की सगाई मुमताज़ महल (अर्जुमंद बानू बेगम) से १६०७ में

हुई। पर ना जाने क्यों आशिक़ शाहजहाँ अपनी प्यारी मुमताज़ से ब्याह नहीं करता था। मुमताज़ महल के इस आशिक़ ने सगाई मुमताज़ से की लेकिन १६१० में निकाह ईरान की शहज़ादी से कर लिया। शहज़ादी से एक बच्ची भी पैदा कर ली। तब कहीं जाकर १६१२ में ५ साल के बाद आशिक़ को अपने महबूब की याद आई और मुमताज़ आशिक़ शाहजहाँ से निकाह कर उसके हरम में लाई गई।

किसी ने सच ही कहा है, मुहब्बत हो तो शाहजहाँ जैसी। ७ बीवियों और हज़ारों लौंडियों से भरा हरम शहज़ादे शाहजहाँ की मुहब्बत का सबूत ही तो था! ख़ैर, अगर आप बॉलीवुड की फ़िल्मों में दिखाए गए एक बीवी वाले शहज़ादे शाहजहाँ से दिल लगा बैठे हैं तो असली इतिहास से आपको मायूसी हो सकती है। शाहजहाँ ने मुमताज़ से जी लगाकर प्यार किया। इतना प्यार कि जब तक महबूबा ३६ साल की उमर तक पहुँची, उसे महबूब की तरफ़ से मुहब्बत के १३ तोहफ़े मिल चुके थे। १४वें बच्चे को पैदा करते वक़्त आगरा से १००० किमी दूर बुरहानपुर में मुमताज़ अल्लाह को प्यारी हो गई। शाहजहाँ की मुहब्बत मुमताज़ के मरने पर भी जारी रही। एक के बाद दूसरा निकाह और दूसरे के बाद तीसरा, ऐसे मिलाकर अपनी महबूबा के मरने के बाद इस आशिक़ ने ७ निकाह किए। पर मुहब्बत थी, कोई खेल ना था, इसलिए अपने दादा अकबर के समान ५००० औरतों/लौंडियों से भी बड़ा एक हरम बनाया। वो मुहब्बत ही क्या जो दम तोड़ दे? मुमताज़ के मरने के बाद निकाह और लौंडियों की संख्या में ज़बरदस्त बढ़ोतरी हुई। मुहब्बत का इससे बढ़कर और क्या सबूत हो सकता है?

मुमताज़ की मौत का खेल

मुमताज़ की मौत पर आशिक़ शाहजहाँ किसी पगलाए चूहे की तरह बैठा रहा। पागलपन का यह खेल ज़्यादा नहीं चला। बचपन की ग़लतियों का शिकार आशिक़ आख़िर कब तक जोगी का भेस धार सकता था? बीवी मुमताज़ की कमी को अब हरम की हर औरत/लौंडी/बच्ची से पूरा करने की कोशिश करता। पर हवस की भी अपनी तासीर है। कुछ ही दिनों में सब कुछ से मन ऊब गया। शहज़ादे की रातें करवटों में ही कटती थीं। जिस्म को गरमाने के लिए कुछ नया सूझता ही नहीं था।

उन्हीं दिनों जहाँ आरा ने अपने १७ बरस पूरे किए। अपनी माँ मुमताज़ महल की हूबहू शक्ल लिए जहाँ आरा ने जवानी की दुनिया में अपने क़दम धर दिए थे। हुस्र अपने चढ़ाव पर था। इतिहासकारों और यूरोपियन यात्रियों के मुताबिक़ शहज़ादी के हुस्र का कोई मुक़ाबला न था। ख़ूबसूरती और जिस्म में हरम की कोई औरत उसके पास भी नहीं फटकती थी। अल्लाह की बनाई सबसे ख़ूबसूरत चीज़ों में से एक। जिस्म किसी कली की तरह मुलायम और नाज़ुक था। कोमल कली जवानी की बहार में फूल बन कर खेलने को ही थी कि एक दिन शाहजहाँ की नज़र उस पर पड़ी। बेटी बड़ी हो गई थी। बाप होश खो चुका था। कहते हैं कि शाहजहाँ को अपनी बेटी में मुमताज़ के दीदार हुए। और फिर कुछ ऐसा हुआ कि इंसानियत, बाप बेटी का रिश्ता और शर्म सब पर हवस की कालिख़ पुत गई।

बाप शाहजहाँ के मुँह से कुछ ऐसा निकला कि इंसानियत शरमा गई। मुस्लिम मुग़ल इतिहास में शर्मनाक घटनाएँ बहुत हैं। पर वो दिन ही कुछ अलग था। शाहजहाँ ने कहा - “बगीचे के फल पर सबसे पहला हक़ तो

माली का ही है!” मुहावरे की आड़ में अपनी ही बेटी को बिस्तर में खींच लेने के शर्मनाक मंसूबे बाँध लिए गए थे। बीवी को खोने के ‘ग़म’ में डूबे शाहजहाँ को उसी के जैसी किसी की ज़रूरत थी। और जहाँ आरा से बढ़ कर माँ की कमी कौन पूरा कर सकती थी? बेटी ने इस नीच मुग़ल के लिए अपनी माँ के फ़र्ज़ भी अदा किए जिनको लिखते हुए कलम हाथ से छूट जाती है। काश कि कोई महाराणा प्रताप इसके राज्य में होता जो इसके ऐय्याश बाप की गर्दन तलवार से नाप देता और फिर इसको एक सच्चे पिता की तरह हरम के बिस्तरों से उठा कर आज़ाद करता।

ख़ैर, क्योंकि जहाँ आरा अपने बाप की ख़ास ख़िदमत में थी, किसी और मर्द को इसके करीब जाने की इजाज़त नहीं थी। जो ग़लती से भी इसके पास गया, जान से मार दिया गया। जहाँ आरा को शाही हरम की कमान सौंपी गई। बीवी के ग़म में घुले शाहजहाँ को ग़म से निकलते निकलते २ साल लग गए और इस वक़्त तक जहाँ आरा उसके चंगुल में थी।

बेटी के आशिक़ों का क़ातिल - शाहजहाँ

बाप की ऐय्याशी और इस्लामपरस्ती के ढोंग से तंग आकर जहाँ आरा एक खुले विचारों वाली औरत बनी। विचार कुछ ज़्यादा ही खुले। इस्लामी हरम में शहज़ादी जहाँ आरा शराब की महफ़िलें सजाती और ख़ूबसूरत मर्दों के साथ रात गुज़ारती। एक बार कुछ शक पड़ने पर शाहजहाँ बेटी के कमरे में चुपके से दाख़िल हुआ। बेटी का आशिक़ गुसलखाने में दुबक गया। सुल्तान ने हरम के वफ़ादार किन्नरों को इशारा किया। आशिक़ मौत के घाट उतार दिया गया। एक और मौक़े पर किसी दूसरे आशिक़ ने जहाँ आरा से मुहब्बत का इज़हार किया। शाहजहाँ ने उसे प्यार से गले लगाया

और खाने के लिए एक पान दिया। महल से निकलते ही आशिक़ फ़ना हो चुका था। पान का ज़हर काम कर चुका था।

बेबस जहाँ आरा

बेटी अब बड़ी हो चली थी। उसने समझ लिया था कि बाप की ख़िदमत में बेटी और बीवी दोनों के फ़र्ज़ निभाने के अलावा उसके पास और कोई चारा नहीं है। इसी बीच इस्लामी रिवायत के मुताबिक़ सल्तनत की गद्दी के लिए उसके भाइयों में चौतरफ़ी जंग शुरू हो चुकी थी। जहाँ आरा ने दारा शिकोह का साथ दिया जो सब भाइयों में सबसे खुले दिमाग़ का था। उसे लगा कि वही एक भाई है जो उसको बाप की मक्कारि से निजात दिल सकता है। पर उसका दिल टूट गया जब औरंगज़ेब ने भाई दारा का बेरहम क़त्ल कर दिया। शाहजहाँ के साथ ही जहाँ आरा को भी बंदी बना लिया गया। बेटी के साथ मुँह काला करने वाले शाहजहाँ को ज़िंदगी के आख़िरी दिनों में अपने बेटे की ग़द्दारी का सामना करना पड़ा। सपूत औरंगज़ेब ने बड़े भाई दारा का सिर काट कर थाली में सज़ा कर बाप के पास बंदीघर में भेजा। ज़िंदगी के इस आख़िरी पड़ाव पर भी बेटी उसके साथ ही थी जिसमें सुल्तान अब भी मुमताज़ महल को देखा करता था।

और फिर

शाहजहाँ अल्लाह को प्यारा हुआ। पर जहाँ आरा के दुखों का कोई अंत नहीं था। बगीचे के फूल को अब माली से नहीं लेकिन बगीचे के काँटों से ही ख़तरा था। हवसी बाप के बाद बेबस औरत ने हवसी भाई के आगे घुटने टेके। ज़िंदगी भर बूढ़े बाप से मिले मन और जिस्म के घाव अब उसका मुक़द्दर थे। तो अब भाई से क्या पर्दा था? उम्र के इस पड़ाव पर

कोई मुनासिब मर्द मिलना भी मुश्किल था जो ज़ालिम भाई से बचा कर उसे कहीं दूर ले जा सकता। आखिर बहन ने भाई के साथ भी 'समझौता' कर लिया। अपने बाप पर भी बाप नहीं होने का शक करने वाला औरंगज़ेब कोई कच्चा खिलाड़ी नहीं था। बहन की वफ़ादारी का इम्तहान हुआ। पहले बाप और अब भाई के इम्तहान में जहाँ आरा फिर से कामयाब हुई। औरंगज़ेब बहन की सेवा से खुश हुआ। दुश्मन भाई द्वारा का साथ देने वाली बहन ने औरंगज़ेब को इतना खुश किया कि शाही हरम की चाबी फिर से पा ली। पहले बाप और अब भाई की हवस मिटाने के लिए कमसिन औरतों को अपने हाथों से चुनकर लाने का सबसे ज़रूरी काम प्यारी बहन के हाथों से ही पूरा होता था। आखिर वही एक थी जो भाई के 'स्वाद' को बख़ूबी जानती थी।

जहाँ आरा का अब खुद का महल था। भाई औरंगज़ेब को जब भी उसकी ज़रूरत महसूस होती, उसे बुलवा लिया जाता। हकीकत में जहाँ आरा एक ज़िंदा लाश थी जिसे पवित्र रिश्तों के नाम पर बार बार छलनी किया गया। बाप और भाई की दरिंदगी की शिकार जहाँ आरा ने कभी निकाह नहीं किया। अपने ज़माने की सबसे खूबसूरत औरत बिना बीवी और माँ बने दुनिया से रुखसत हुई।

समाजवादी पार्टी के नेता मुहम्मद इक़बाल के बयान - 'बाप-बेटी के बीच तो ये सब आम बात है' से हमें जहाँ आरा याद आई। साथ ही लाखों-करोड़ों जहाँ आरा जो मुग़लिया दौर से ही अपने बाप-भाइयों की हवस की शिकार बनती आई हैं केवल इसलिए क्योंकि ये मुगल दरिंदे उनके मज़हब में ऊँची जगह रखते हैं। करोड़ों जहाँ आरा आज भी बेबस हैं, चुप हैं। और हिंदुस्तान चुप है! मुग़लों से मुहब्बत जो है!

औरंगज़ेब - वली या वहशी दरिंदा ?

बॉलीवुड के भांड दाऊद इब्राहिम के पैसे या डर से फ़िल्मों में चाहे जो दिखाएँ, इतिहास गवाह है कि बाबर से लेकर औरंगज़ेब तक का कोई मुग़ल सुल्तान दरिंदगी में लादेन, बगदादी या हाफ़िज़ सईद से काम नहीं था। अगर अल क़ायदा, इस्लामिक स्टेट या लश्कर ए तैयबा थोड़े लम्बे समय तक दुनिया के किसी हिस्से पर राज कर लें तो हिंदुस्तान के इतिहास की किताबों में महानों की फ़ेहरिस्त में शामिल हो जाएँगे। दरिंदों के तलवे चाटने की आदत से मजबूर हिंदुस्तान के 'उदारवादी' इतिहासकार (या उपन्यासकार?) जिहादियों को देखते ही दुम हिलाने लगेंगे। फिर नपुंसक राजनीति में अपनी सड़कों के नाम इन दरिंदों के नाम पर रखने की होड़ लगेगी। जब कोई हम जैसा इंसान इन आतंकवादियों को आतंकवादी कह

कर विरोध करेगा तो जिहादियों के यही पालतू पिल्ले हमें ‘भगवा आतंक-वादी’ कह कर अपनी झोंप मिटाएँगे।

भारत ने हाल ही में औरंगज़ेब रोड का नाम बदल कर ए पी जे अब्दुल कलाम रोड किया। सदियों से इस जिहादी लोमड़ी के नाम पर चली आ रही सड़क हमारे माथे पर कालिख थी। पर इसके मिटते ही सेक्युलर मेंढक और जिहादी गिरगिट एक सुर में टरने लगे। कहने लगे - ‘इतिहास से छेड़छाड़ बर्दाश्त नहीं’! माँ-बाप के बलात्कारियों और क्रातिलों को अपना बाप कहने की प्रथा हिंदुस्तान के जिहादियों में बड़ी विचित्र है। क्रातिल को क्रातिल कहने से इतिहास खराब हो जाता है? क्रातिल को बाप कहो, इसी से इतिहास ज़िंदा रहता है? जिहादियों की तो फिर भी चलो आदत है, सेक्युलर हिंदुओं को क्या हो जाता है? मुसलमान नाम सामने आते ही इनके हलक क्यों सूख जाते हैं? ऐसे लोगों की मिसाल एक ही जंतु से दी जा सकती है - तिलचट्टा!

तिलचट्टा एक ज़बरदस्त जंतु है। वे सदा ज़िंदा रहते हैं। जब से दुनिया बनी और जब तक दुनिया क़ायम रहेगी, तिलचट्टे क़ायम रहेंगे। क्या माँस, क्या मिठाई और क्या मल-मूत्र, इनको सब कुछ पचता है। ख़ूबसूरत लाल रंग, मिली हुई आँखें और सर पर एंटीने, ये बड़े बुद्धिजीवी और सब कुछ भांप लेने वाले होते हैं। पर फैला कर आधा फ़ीट तक उड़ भी सकते हैं। किसी भी जगह रेंग सकते हैं। इन्हें अंधेरी दुनिया के बेताज बादशाह कहो तो ग़लत ना होगा। क्या गरमी, क्या सर्दी, क्या भूख और क्या कीटनाशक दवाई, ये सब कुछ सह जाते हैं। ऊपर वाले ने बड़ा समय लेकर ऐसा महान जंतु बनाया होगा!

हमारे महान लड़ाके और योद्धा जो धर्म की रक्षा के लिए लड़े, वो इस तिलचट्टे जाति को कभी समझ ना सके। वो खुद भी मरे, अपने परिवार के परिवार कटवा दिए पर धर्म पर सौदा नहीं किया। ज़िंदा रहना जैसे उनके लिए कोई ज़रूरी पहलू ही नहीं था। बलात्कार, लूट, मंदिरों के टूटने और बेइज्जती से बढ़कर उन्होंने लड़ना स्वीकार किया, अंजाम चाहे जो हो।

पर तिलचट्टे एकदम उलट हैं। ये गैंग बनाकर आतंकवादी याकूब मेमन के जनाज़े में छाती पीटने जाते हैं। ये इतिहास के क्रातिलों और बलात्कारियों को महान बताकर जिहादियों की आँखों के तारे बनना चाहते हैं। गुंडों से अपनी माँ का सौदा करके उन्हीं गुंडों के पालतू बन कर फ़ख़र करने वाले ये तिलचट्टे भले १०० साल की ज़िंदगी जिएँ, एक धर्मभक्त की ज़िंदगी के एक पल जितनी इज़्ज़त भी दुनिया में इनकी नहीं हो सकती। अभी कुछ समय से जिहादी दरिंदे औरंगज़ेब में इन तिलचट्टों ने 'वली' (अल्लाह का दोस्त) ढूँढ लिया है। हज़ारों औरतों के हरम में ऐय्याशी करने वाले को टोपी सिल कर अपना गुज़ारा करने वाला एक फ़क़ीर-दरवेश सुल्तान बताया है। तो ज़रा इन तिलचट्टों को असली इतिहास से रूबरू करवाते हैं।

औरत की इज़्ज़त

अपने हर मुग़ल पूर्वज की तरह औरंगज़ेब ने भी अपनी नामर्दानगी छुपाने के लिए दुनिया में मर्द मशहूर होने की हसरत लिए एक हरम बनवाया। मुसलमानों के बड़े तबके और सेक्युलर तिलचट्टों में अपनी सादगी के लिए मशहूर, मुसलमानी टोपी सिल कर अपनी दो वक्त्र की रोटी कमाने के लिए मशहूर, कुरान को लिख कर उससे अपने खर्चे पूरे करने के लिए मशहूर यह लपट लोमड़ा असल में १,००० औरतों से भरा हरम रखता

था। इतने बड़े हरम/चकले के करोड़ों के खर्चे दिन में २ इस्लामी टोपी सिलकर कैसे पूरे होते थे, इस सवाल पर इसके पालतू जिहादी/तिलचट्टे दुम दबाकर भाग लेते हैं। वैसे, अकबर ने ५,००० औरतों का हरम बनाया, जहांगीर ने ६,००० का, और इसने केवल १,००० का, इसको देखते हुए इस लपट लोमड़ी औरंगज़ेब को मुगल इतिहास का फ़कीर कहना ग़लत ना होगा। इसके बापों और दादाओं की तरह हरम में खींच कर लाई गई अधिकतर औरतें हिन्दू थीं जिनको उनके बाप, भाई और पतियों के क़त्ल/इस्लाम कुबूल करने के बाद ख़रीद फ़रोख़्त के लिए इस्लामी मंडियों में बेचा गया था। इस्लामिक स्टेट की सजाई गई यज़ीदी औरतों और बच्चियों की मंडियाँ देख कर अगर आपकी आँखों में खून उतर आया हो तो याद रहे, ये मंडियाँ औरंगज़ेब की मंडियों के आगे कुछ नहीं थीं जो उसने हिंदुस्तान की काफ़िर औरतों से सजाई थीं।

कुरान की जिन आयतों को पढ़ कर ग़ैर-मुस्लिम औरतों से इस्लामिक स्टेट के २०-२० नामर्द मोमिन बलात्कार करते हैं और उसे अल्लाह की ख़िदमत करार देते हैं, वही आयतें औरंगज़ेब की रहनुमा बनीं। दिन में हिंदू औरतों को घात लगा कर उठवाने वाला औरंगज़ेब जब सुबह सुबह ४ बजे उठ कर अल्लाह के सजदे में नमाज़ के लिए बैठता था तो पूरी मुसलमानी सभ्यता वाह वाह कर उठती थी। आख़िर जब दुनिया में काफ़िर औरतों के जिस्म नोचने से अल्लाह (?) खुश होता हो और बदले में जन्नत में ७०-७० हूरेँ मुफ़्त देता हो तो दोनों हाथों में ऐसे लड्डू से किस हवसी जानवर को इंकार होगा?

लौंडियों की अदला बदली

औरंगज़ेब जैनब महल को अपने हरम में चाहता था। जैनब एक हिंदू लड़की हीरा बाई थी जिसको ज़बरन इस्लाम कुबूल करवाया गया। यह औरंगज़ेब के चाचा सैफ़ खान (गवर्नर - बुरहानपुर) की एक लौंडी थी। क्या किया जाए? तब खुद चाची ने आकर पूरे इस्लामी तौर तरीक़े से चाचा-भतीजे में लौंडी का सौदा कराया। हीरा बाई औरंगज़ेब की एक और हिंदू लौंडी छतर बाई के बदले हरम में लाई गई। इस अदला बदली ने औरतों की इज़्ज़त के इस्लामी दावे में चार चाँद लगाए। साथ ही चाचा भतीजे के पाक रिश्ते को एक नई ऊँचाई दी।

ऐसे घिनौने काम करने के बाद लम्पट लोमड़ी औरंगज़ेब अल्लाह का सिज़्दा करना नहीं भूलता था। वो सदा इस बात को दोहराता रहता था कि काफ़िर औरतों को इस्लामी हरम में लाना, उनको इस्लाम कुबूल करवा के ४-४ बीवियाँ बनाना, ४ के बाद जितनी मर्ज़ी उतनी बिना निकाह के लौंडियाँ बना कर रख लेना, ये सब कुरान और इस्लाम की रिवायत के ऐन मुताबिक़ है। साथ ही बीवियों/लौंडियों की ख़रीद फ़रोख़्त, बाप/चाचा/मामा के साथ उनकी औरतों की अदला बदली, पैसों/ऊँटों के बदले औरतों की सौदेबाज़ी ये सब कुछ उसके इस्लाम में जायज़ था जिसे आज तक हिंदुस्तान के बहुत से मुसलमान अपना ईमान समझते हैं। कुरान की उन आयतों को छोड़ने के बजाए उन पर फ़ख़्र महसूस करते हैं। यही वजह है कि अब्दुल कलाम जैसे वैज्ञानिक जिन्होंने काफ़िर औरतों को उठाने के बजाए देश की सेवा करना ज़्यादा ठीक समझा, उन्हें इस्लामी दुनिया में मुसलमान भी नहीं समझा जाता। उनके मरने पर जनाज़े में एक भी मुस्लिम नेता, अभिनेता या आदमी दिखाई नहीं दिया ठीक उसी दिन जब

आतंकवादी याक़ूब मेमन के जनाज़े में लाखों टोपियाँ आँसू टपका रही थीं।

परिवार का क़ातिल - औरंगज़ेब

सदियों पुरानी इस्लामी रिवायत को बरकरार रखते हुए औरंगज़ेब ने भी अपने बाप और तीन भाइयों का क़त्ल किया। भाई दारा का सिर काटकर उसे थाली में सज़ा कर बाप शाहजहाँ के पास कैदख़ाने में भिजवाया। और इस तरह मुग़लों को उनका अगला मुस्लिम सुल्तान मिला। विरासत में मिले गंदे ख़ून में मिली इस राहदारी को यह लोमड़ी के समान चालाक सुल्तान ख़ूब समझता था। इसके चलते इसने अपने बेटे को बंदी बना लिया। बाक्रायदा अपनी वसीयत में लिखा - “कभी बेटों का ऐतबार (विश्वास) मत करो!”

मंदिरों - मूर्तियों - गुरुद्वारों को तोड़ने वाला - औरंगज़ेब

मुसलमान हमलावरों द्वारा हिंदू मंदिरों और मूर्तियों को तोड़ने के पुराने सारे शर्मनाक कारनामे इस जिहादी औरंगज़ेब के आगे छोटे पड़ गए। कुरान ९८/६ आयत का हवाला देकर इसने मूर्तिपूजक/बुतपरस्त हिंदुओं को दुनिया में सबसे नीच जानवर घोषित किया। फिर हज़ारों मन्दिरों को ज़मीन में मिलाने का घिनौना काम अल्लाह के नाम पर किया। काशी विश्वनाथ, केशव देव मंदिर (भगवान कृष्ण का जन्म स्थान) मथुरा, सोमनाथ मंदिर, हज़ारों साल पुराने दुर्लभ भीमकाय मंदिर, गुरुकुल एक एक करके इसके हुक्म पर मिट्टी में मिलाए गए। जो भी बीच में आया, तलवार से काट दिया गया। राम मंदिर पहले ही इसके पूर्वज जिहादी बाबर ने अपने सम-लैंगिक यार १४ साल के लौंडे आशिक़ बाबरी की याद में तोड़ दिया था।

गुरु तेग बहादुर का क्रातिल - औरंगज़ेब

९वें सिख गुरु महाराज तेग बहादुर को इस्लाम नहीं कुबूल करने पर उनके साथियों समेत बेरहमी से क़त्ल किया। गुरु के साथियों में से किसी के बदन को आरे से आधा आधा काटा गया। किसी को रुई में लपेट कर आग लगा दी गई। किसी को जलते तेल के कढ़ाव में भून दिया गया। गुरु महाराज को दिल्ली में यातना देकर सिर काट लिया गया।

तलवार के ज़ोर पर कश्मीर का इस्लामीकरण

औरंगज़ेब का ध्यान कश्मीर पर सबसे ज़्यादा था। पूरे कश्मीर को मुसलमान बनाना इसका मक़सद था क्योंकि कश्मीर हिंदू धर्म के बहुत महत्त्वपूर्ण और पुराने गढ़ के रूप में मशहूर हुआ जहाँ से शैव विचारधारा निकली जो धर्म के एक प्रमुख स्तम्भों में से एक है। इस जिहादी सुल्तान ने ऐलान कर दिया। हिंदुओं को जान प्यारी है तो इस्लाम कुबूल करें। नहीं तो औरतों की मंडियों और मर्दों के शमशान सजाने के लिए तैयार रहें। कश्मीरी पंडितों का घाटी से पलायन कोई आज की बात नहीं। यह सदियों से चली आ रही एक शर्मनाक दास्तान है। गुरु तेग बहादुर को अपने धर्म पर यह वार स्वीकार न था। जिहादी दरिंदे औरंगज़ेब ने गुरु को धर्म छोड़ कर इस्लाम कुबूल करने का फ़रमान जारी किया। गुरु ने फ़रमान पर थूक दिया और धर्म पर अपना बलिदान कर दिया। उनके बलिदान ने मुग़ल सल्तनत के अंत की शुरुआत की। गुरु के बाद उनके बेटे गुरु गोबिन्द सिंह जी ने हिंदुओं की खालसा सेना बनाकर मुग़लों के घमंड चकनाचूर किए। खालसा हिंदुओं ने पंजाब और पेशावर-खैबर तक, दुर्गादास राठौर के राजपूतों ने राजपूताना में और मराठी हिंदुओं ने महाराष्ट्र, दक्षिण

और फिर दिल्ली तक भगवा ध्वज फिर से लहराया। मुगलों को सड़क के किसी भिखारी की स्थिति में पहुँचाया और अपने पूर्वजों के खून का बदला लिया। आज भी मुगलों के क़ानूनी वंशज - पोते पड़पोते लखनऊ/हावड़ा रेलवे स्टेशन पर अकबर/औरंगज़ेब की असली फ़ोटो कटोरे में लिए भीख माँगते देखे जा सकते हैं।

हिंदुओं पर जज़िया कर

अपनी इस्लामी रिवायत को क़ायम रखते हुए इसने क़ुरान ९/२९ के हुक्म के मुताबिक़ काफ़िर हिंदुओं पर जज़िया कर लगाया जिसके नहीं चुकाने पर हिंदू मर्द को क़त्ल किया जा सकता है और उसकी औरतों को लौंडी बनाकर मुस्लिम मर्दों के यहाँ रखा जा सकता है। जब कुछ बेबस हिंदुओं ने जज़िया हटाने की माँग की तो उनको हाथियों के पैरों तले ज़िंदा रौंद दिया गया।

दीपावली पर पाबंदी

अल्लाह के इस वली ने फ़रमान दिया कि कोई भी हिंदू-सिख दीपावली पर पटाखे नहीं चलाएगा। त्यौहार मनाने वाले के लिए सज़ा तय थी।

हिंदुओं को ख़त्म करने का फ़रमान

जिहादी औरंगज़ेब के राज में कोई हिंदू घोड़े पर नहीं चढ़ सकता था। पालकी और हाथी दोनों ही हिंदुओं के लिए प्रतिबंधित थे क्योंकि काफ़िर हिंदू मुसलमान के बराबर के दर्जे पर नहीं रखे जा सकते थे। साथ ही इसने इस्लाम क़बूल करने वाले हिंदुओं के लिए ईनाम की घोषणा की। मक़सद

साफ़ था, हर तरह हिंदुओं का बीज हिंदुस्तान की धरती से नाश करना ।

जिहादी औरंगज़ेब की दरिंदगी पर हज़ारों पन्ने लिखे जा सकते हैं पर इसके १० चुनिंदा आदेश/काम यहाँ रखते हैं ताकि इसके जिहादी चले और सेक्युलर तिलचट्टे इसकी महानता की बकवास ना कर सकें

१. “इस्लाम में मंदिर की तरफ़ देखना भी गुनाह है। “ - १३ अक्टूबर १६६६

२. “दारा शिकोह इस्लाम के नाम पर धब्बा है।” (क्योंकि इसके भाई दारा ने कभी कृष्ण मंदिर के लिए कुछ तोहफ़ा दिया था)

३. “दिल्ली के कालका मंदिर को नेस्तो नाबूत कर दो।” - ३ और १२ सितम्बर १६६७

४. “सल्तनत के सारे मंदिरों और स्कूलों को तबाह कर दो। खुले में हिंदुओं की प्रार्थना ख़त्म कर दो।” - ९ अप्रैल १६६९

५. “कृष्ण मंदिर तोड़ा जा चुका है और उसकी जगह मस्जिद बनाई जा चुकी है।” - जनवरी १६७०

६. “काशी विश्वनाथ मंदिर तोड़ा जा चुका है और उसकी जगह मस्जिद बनाई जा चुकी है।” - फ़रवरी १६७०

७. “राजस्थान में सैंकड़ों मंदिर ज़मीन में दफ़न।” - २३ दिसम्बर १६७९

८. चित्तौड़ के सारे मंदिरों का विध्वंस

९. टूटी हुई हिंदू मूर्तियों के चूरे को जमा मस्जिद की सीढ़ियों में लगाया गया ताकि सदा सदा के लिए वो मुसलमानों के पैरों तले कुचली जाएँ।

१०. हिंदुस्तान में सैकड़ों मंदिरों का विध्वंस (इस तरह के बहुत से आदेश इस जिहादी ने दिए थे जो पत्नों के रूप में आज भी सुरक्षित हैं)

इस पर भी अगर किसी को इस वहशी जानवर को वली/ अल्लाह का दोस्त समझना है तो वह आतंकवादी से कम कैसे है?

अध्याय ८

टीपू सुल्तान - खूनी तलवार

अब बात टीपू सुल्तान की जिसकी अंग्रेज़ों के खिलाफ़ लड़ाई की कहानियाँ बचपन में हम सबको रटाई गईं। जिसको स्कूल में इतिहास की किताबों और फिर संजय खान के नाटक - “Sword of Tipu Sultan” (टीपू सुल्तान की तलवार) ने बच्चे बच्चे तक पहुँचाया और अंग्रेज़ों के खिलाफ़ ‘हिंदू-मुस्लिम एकता की एक निशानी’ के तौर पर पूजा। टीपू जैसे स्वतंत्रता सेनानी के बारे में पढ़ कर बचपन में एक भक्ति सी पैदा हुई। चलो कोई मुस्लिम सुल्तान तो था जिसने हिंदुओं से ना लड़ कर अंग्रेज़ों से लड़ाई की। इस महान आत्मा के बारे में और जानने के लिए मन तड़प उठा। पता किया तो मालूम हुआ कि इस महान सुल्तान की ज़िंदगी की दो जीवनी मिलती हैं जिनके बारे में अंदेशा है कि खुद टीपू ने

इन्हें लिखा था। टीपू पर लिखी जाने वाली हर किताब इन दो किताबों के इर्द गिर्द घूमती है।

- सुल्तान उत तवारीख
- तारीख ए खुदादादी

मशहूर इतिहासकार के एम पणिक्कर ने सुल्तान टीपू के पल खोज निकाले जो कि इंडियन ऑफिस लाइब्रेरी में सुरक्षित हैं। इन सब को पढ़कर कलेजा मुँह को आ गया। कुत्ते की दुम कभी सीधी नहीं हो सकती और जिहादी कभी अपने बाप और मुल्क का नहीं हो सकता। जिसे हिंदु-स्तान का रक्षक बना कर हिंदू बच्चों के सामने पेश किया गया, दरअसल वो एक और जिहादी आतंकवादी निकला जिसने हिंदुओं और ईसाइयों के कल्लेआम और इस्लाम में ज़बरन क़बूलियत करवाने के नए कीर्तिमान बनाए जिन्होंने औरंगज़ेब जैसे दरिंदे के काले कारनामों को भी कहीं पीछे छोड़ दिया।

२२ मार्च १७८८ को अब्दुल खदर को लिखी चिट्ठी में टीपू लिखता है-

“१२,००० से ज़्यादा हिंदुओं को इस्लाम क़बूल करवाया गया। तुम्हारी जगह के हिंदुओं को तुम्हारे पास आना होगा और इस्लाम क़बूल करना होगा। कोई नम्बूदरी बचना नहीं चाहिए।”

१४ दिसम्बर १७८८ को कालीकट में अपनी फ़ौज के सेनापति को लिखी एक दूसरी चिट्ठी में जिहादी टीपू लिखता है -

“सारे हिंदुओं को बंदी बनाओ और क़त्ल करो। २० साल से छोटे हिंदू

बंदीघर में रखे जाएँ। बचे हुआओं में से ५,००० को पेड़ों से लटकाकर फाँसी दी जाए।”

१९ जनवरी, १७९० को बदरूस समन खान को लिखी चिट्ठी में टीपू ने फ़रमाया -

“मालाबार में मुझे बहुत बड़ी कामयाबी हुई है। ४ लाख हिंदुओं को इस्लाम कुबूल करवाया है। अब बस नीच रमन नायर पर चढ़ाई करनी है।”

टीपू ने मालाबार के इलाकों में अपने लोगों में ऐलान करवाया - **“सच, झूठ, धोखा, ताक़त, सब कुछ इस्तेमाल करो, हिंदुओं को सब तरफ़ इस्लाम कुबूल करवाओ।”** (Historical Sketches of the South of India in an attempt to trace the History of Mysore, Mark Wilks Vol II, page 120).

टीपू सुल्तान ने अफ़ग़ानिस्तान के सुल्तान और अहमद शाह अब्दाली के पोते ज़मान शाह को मैसूर की तीसरी लड़ाई के पहले कई ख़त लिखे। ये सिलसिला १७९८ तक जारी रहा। इन ख़तों का अनुवाद कबीर कौसर ने किया। एक जगह टीपू ने लिखा - **“मेरी दिली तमन्ना है कि काफ़िरोँ पर जिहाद का ऐलान करूँ। इस ज़मीन पर अल्लाह मुसलमानी सल्तनत की हिफ़ाज़त करता है और काफ़िर के रास्ते तंग करता है।”**

एक और ख़त जो कि ५ फ़रवरी १७९७ को लिखा गया, टीपू कहता है - **“हमें अपने मज़हब के दुश्मन काफ़िरोँ पर जिहाद करने के लिए एक होना चाहिए। अल्लाह की फ़ौजें हमें फ़तह देंगी।”**

पुर्तगाली यात्री और समकालीन इतिहासकार फ्रा बरतोलमाको ने १७९० में मालाबार में क्या देखा, यह उसने “Voyage to East Indies” संकलित किया है। वह लिखता है - “कालीकट में अधिकतर मर्द और औरतों को फाँसी पर लटका दिया गया था। उस दरिंदे टीपू सुल्तान ने हिंदू और ईसाइयों को नंगा करके हाथियों के पैरों से बांधा और उनके चिथड़े उड़ा दिए। मंदिर और चर्च आग में झोंक दिए गए, तोड़ दिए गए, चकनाचूर कर दिए गए। मैंने खुद बहुत से मज़लूमों की मदद की और उन्हें वरप्पुझा नदी पार कराई।” (पृष्ठ १४१-१४२)

टीपू सुल्तान की तलवार पर पारसी भाषा में लिखा है - “मेरी शमशीर काफ़िरो के खात्मे के लिए बिजली सी चलती है। या अल्लाह! जो भी मुहम्मद के मज़हब को फैलाए, तू उसे फ़तह दे। जो मुहम्मद में यक़ीन नहीं लाता, तू उसे पागल कर दे। काफ़िरो से हमें दूर रख।” (History of Mysore, CH Rao, Vol III, p 1073).

The Mysore Gazetteer ने दक्षिण भारत में टीपू सुल्तान के द्वारा विध्वंस किए हुए ८०० मंदिरों की जानकारी दी है।

अब किसे सच मानें? दो कौड़ी के झूठे उपन्यासकार, टीपू जयंती मनाने वाले राजनैतिक दलाल और संजय खान जो इतिहासकार बनकर बच्चों को मूर्ख बनाने के लिए मैदान में उतर आए हैं या फिर खुद टीपू सुल्तान के अपने खत और लेख?

इस जिहादी की ज़िंदगी पर ज़रा थोड़ी और रोशनी डालते हैं।

शुरुआत

टीपू ने ७ दिसम्बर १७८२ से लेकर ४ मई १७९९ तक कुल साढ़े सोलह साल तक हुकूमत की। हालाँकि मालाबार पर इसका कब्ज़ा केवल ८ साल के छोटे वक़्त के लिए ही हुआ। अगर इसने वक़्त रहते विली पूरनैया से मदद नहीं ली होती तो आज केरल और कर्नाटक में मुस्लिम आबादी इतनी नहीं होती। हिंदू कभी नहीं घटते।

जब प्रधानमंत्री पूरनैया ने टीपू को ९०,००० सैनिक, ३ करोड़ रुपए, और बहुत से हीरे जवाहरात और गहने दिए, टीपू दक्षिण भारत का सुल्तान बनने के सपने देखने लगा। टीपू ने महाराष्ट्र के हिंदू राजाओं या मुस्लिम निज़ाम को कभी ख़तरा नहीं समझा। हाँ, ब्रिटिश ताक़त से यह सुल्तान कांपता था। इसने भांप लिया था कि अगर ब्रिटिश को हरा दिया जाए तो दक्षिण भारत में कोई ताक़त उसे चुनौती नहीं दे सकेगी। उसकी इसी ब्रिटिश विरोधी बातों को लेकर सेक्युलर उदारवादी उसे आज तक का सबसे बड़ा स्वाधीनता सेनानी घोषित कर देते हैं! रैबीज का कुत्ता अगर दूसरे कुत्ते को काट खाए तो क्या इससे वो इंसान का दोस्त हो जाता है?

विदेशी ताक़तों का विरोध हमेशा देश से प्यार की वजह से ही हो यह ज़रूरी नहीं। ब्रिटिश फ़ौजों को हराने के लिए टीपू ने फ्रेंच फ़ौजों से मदद माँगी जो खुद हिंदुस्तान में पैर ज़माने की फ़िराक़ में थे। अगर टीपू बाहरी ताक़तों से नफ़रत करता तो फ्रेंच फ़ौजें क्या इस जिहादी की जेब से निकली थीं? क्या फ्रेंच विदेशी नहीं थे? इसने नेपोलियन और फ्रेंच राजा लुईस १६ से भी मदद माँगी। क्या ये सब हिंदुस्तानी थे?

असल बात कुछ और है। इतिहास गवाह है कि टीपू सुल्तान की सारी

ज़िंदगी हिंदुस्तान को इस्लाम के शिकंजे में लाने की कोशिश में बीती। क्योंकि राह में ब्रिटिश सबसे बड़ी रुकावट थे इसलिए उसने सबसे पहले उनसे लड़ाई मोल ली। इसने मुस्लिम मुल्कों जैसे ईरान, अफ़ग़ानिस्तान और तुर्की सब जगह मदद की भीख माँगी।

कुछ घने सयाने उपन्यासकार इतिहासकार बनकर पूछते हैं - लेकिन टीपू ने कोचीन के राजा को हाथ भी नहीं लगाया, यहाँ तक कि जिसने भी उसके सामने सिर झुकाया और समर्थन दिया, उसने उनको हाथ भी नहीं लगाया। अरे मूर्खों! जब लड़ाई ब्रिटिश से चल रही हो तो घर पर उत्पात मचाना वो भी उन लोगों के खिलाफ़ जो पहले ही क़दमों में पड़े हों, कहाँ की अक्लमंदी थी? उसने एक साथ सारे मोर्चे खोलने के बजाय एक एक करके लड़ाई लड़ी। ब्रिटिश से लड़ते वक़्त कुछ समय के लिए हिंदुओं को छोड़ दिया। पर इससे वो एक चालाक गिरगिट तो साबित हुआ लेकिन हिंदुओं का दोस्त कैसे साबित हुआ?

टीपू और निज़ाम दक्कन में केवल दो ही मुसलमान सुल्तान थे। इसलिए उसने निज़ाम के साथ लड़ाई नहीं की। इसने कोशिश की कि निज़ाम अपनी बेटी का हाथ इसके बेटे के हाथ में दे दे। पर निज़ाम को टीपू की छोटी औक़ात और साधारण वंशज रास नहीं आए। निज़ाम ने टीपू को ठेंगा दिखा दिया। मज़े की बात है कि इसके पहले भी, टीपू के बाप हैदर अली खान ने कमसिन टीपू के लिए भी निज़ाम की लड़की का हाथ माँगा था!

टीपू सुल्तान - पादशाही के सपने

ब्रिटिश को शिकस्त देकर टीपू पादशाह बनना चाहता था। पीर फ़क़ीर

ज्योतिषी, कोई ऐसा ना था जिसके पास सुल्तान नहीं गया। इस्लाम के नाम पर शहर के शहर वीरान कर देने वाले इस दरिंदे पर पादशाही का भूत सवार था। क्या हिंदू क्या मुसलमान, सारे टोटके आजमाए। ब्रिटिश पर फ़तह कब मिलेगी? यही सवाल उसके मन में घुमड़ रहा था। श्री रंगनाथ स्वामी मंदिर के कुछ ब्राह्मण ज्योतिषियों ने कोई पूजा विधि सुझाई। दक्षिण भारत की पादशाही पाने के लालच में इस इस्लामी जिहादी ने अल्लाह को धोखा देकर रंगनाथ स्वामी मंदिर में पूजा अर्चना भी कर ली। पादशाही के लिए ज्योतिषियों और मंदिर को कीमती तोहफ़े भी अदा किए गए। पादशाही पाने के लालच में किया गया यह कारनामा आज जिहादी टीपू सुल्तान के हिंदू-प्रेम को साबित करने की नाकाम कोशिशों में अहम स्थान रखता है। इसी एक कहानी की आड़ लेकर जिहादी/कम्युनिस्ट इतिहासकार 'सिद्ध' कर देते हैं कि टीपू सुल्तान या उसकी इस्लामी फ़ौजों ने तो मालाबार में कभी कोई हिंदू मंदिर तोड़ा ही नहीं!

पर झूठ ज़्यादा देर नहीं चलता। प्रसिद्ध इतिहासकार लेविस राइस ने सब उपलब्ध प्रमाणों और दस्तावेज़ों को पढ़कर "History of Mysore" लिखी जिसमें वो कहते हैं - *"टीपू सुल्तान की इतनी बड़ी सल्तनत में उसके मरने के एक दिन पहले तक केवल दो हिंदू मंदिर बचे थे जिनमें रोज़ाना पूजा हो सकती थी। ये दोनों मंदिर श्रीरंगपट्टनम क़िले में स्थित थे। इन दो मंदिरों को भी केवल इसलिए छोड़ा गया था ताकि टीपू की कुंडली देखने वाले ब्राह्मण को कुछ संतोष रहे। हर एक मंदिर से सारी दौलत १७९० से पहले पहले ज़ब्त कर ली गई थी और इस लूटी दौलत से लड़ाई में ख़ाली हुए सुल्तानी ख़ज़ाने फिर से भरे गए।"*

कुछ लोगों का कहना है कि कम से कम टीपू सुल्तान का हाल अपने

राज्य मैसूर में तो ठीक ही था। तो एक बार मैसूर के ही विद्वान एम ए गोपाल राव के एक लेख को पढ़ लें - “हिंदू और मुसलमान के लिए अलग अलग करों (टैक्स) के क़ानून टीपू सुल्तान की मज़हबी कट्टरपन के सबूत थे। मुसलमानों के लिए घर और सामान पर लगाने वाले कर माफ़ थे। इस्लाम कुबूल करने वालों को यह सब फ़ायदे मिलते थे। यही नहीं, उसने मुसलमान बच्चों की पढ़ाई के ख़ास इन्तेज़ाम भी किए थे।”

टीपू सुल्तान ने फ़ौज और सरकारी जगहों में ऊँचे ओहदों पर हिंदुओं की तैनाती पर पाबंदी लगा दी। ग़ैर मुसलमान/काफ़िरों के लिए इसकी नफ़रत जगज़ाहिर थी। सोलह सालों के उसके राज में पूरनैया अकेला हिंदू था जिसे टीपू ने दीवान या मंत्री का पद मिला। १७९७ में (टीपू के मरने के २ साल पहले) ६५ ऊँचे पदों की भर्ती के लिए चुने गए लोगों में एक भी हिंदू नहीं था। ब्रिटिश ने जब २६ फ़ौजी और ग़ैर फ़ौजी अफ़सर क़ब्ज़े में लिए तो उनमें से केवल ६ ग़ैर-मुसलमान थे।

१७८९ में हैदराबाद के निज़ाम और बाक़ी मुस्लिम राजाओं ने सब सरकारी पदों के लिए केवल मुस्लिम आदमी को रखने का ऐलान कर दिया। इनमें टीपू भी शामिल था जिसने यही काम अपने राज्य मैसूर में किया। नतीजा यह निकला कि अनपढ़, जाहिल और निकम्मे लोगों की भर्ती अहम सरकारी जगहों पर केवल इसलिए कर दी गई क्योंकि वो मुसलमान थे। अपने पद में बढ़ोतरी या पदोन्नति के लिए भी मुसलमानी सर्टिफ़िकेट ज़रूरी था। हिंदुओं को तंग करने के मक़सद से टैक्स से जुड़े दस्तावेज़ जो पहले मराठी और कन्नड़ में होते थे उन्हें फ़ारसी में बदलने का फ़रमान हुआ। इस जिहादी टीपू ने यह भी कोशिश की कि कैसे राज्य की भाषा कन्नड़ से हटाकर फ़ारसी की जाए। सरकारी ओहदों पर जाहिल

जिहादियों का बोलबाला हो गया। लोगों को इन ऐय्याश और जाहिल मुसलमानी अफ़सरों के निकम्मेपन और बदमाशी का मोल चुकाना पड़ा। टीपू सुल्तान के पास इस मुद्दे को लेकर जाने वालों के लिए कोई वक़्त नहीं था।

टीपू सुल्तान - बदले नाम

गोपालराव ने टीपू के बेटे गुलाम मुहम्मद और मुस्लिम इतिहासकार किरमानी जैसे प्रामाणिक लोगों के लेखों से तथ्य निकाले हैं। जिहादी टीपू सुल्तान हर हिंदू चीज़ से नफ़रत करता था। बहुत सी जगहों के नाम बादल कर इसने इस्लामी नाम थोप दिए। जैसे

- मंगलपुरी (मैंगलोर) जलालाबाद बना
- कन्नूर (कँवापुरम) कुसनाबाद बना
- बेपर (वैप्पुरा) सुल्तान पटनम/फ़ारूक़ी बना
- मैसूर नज़ाराबाद बना
- धारवाड कार्शद सवद बना
- गूटी फ़ैज़ हिसार बना
- रत्नागिरी मुस्तफ़ाबाद बना
- दिंडुगुल खलिकाबाद बना
- कालीकट इस्लामाबाद बना

जिहादी टीपू की मौत के बाद ही स्थानीय लोगों की कोशिशों से जगहों के पुराने नाम वापस रखे जा सके।

कूर्ग, बेदनूर और मंगलोर में इस्लामी आतंक

कूर्ग में मचाई गई वहशत जिहादी टीपू की इस्लामी परवरिश का वो नतीजा थी जिसकी कोई और मिसाल इतिहास में नहीं मिलती। एक बार इसने १०,००० से ज़्यादा हिंदुओं को तलवार के ज़ोर से मुसलमान बनाया। फिर एक बार १,००० कूर्गी हिंदुओं को बंदी बनाकर उन्हें उनकी मर्ज़ी के खिलाफ़ इस्लाम कुबूल करवाया और फिर उन्हें बंदी बनाकर श्रीनागपट्टम के क़िले में कैद कर लिया। फिर एक दिन जब टीपू ब्रिटिश के साथ लड़ाई में लगा हुआ था, ये क़िले से निकल भागे और अपने राज्य में जाकर दोबारा हिंदू धर्म को धारण किया। कूर्ग राजा से किए गए अपने वादे के खिलाफ़ जाकर इस दरिंदे टीपू ने कूर्ग शाही परिवार की एक राजकुमारी को उठवा लिया और उसकी मर्ज़ी के बिना उससे निकाह किया।

१७८५ में इस चालाक जिहादी टीपू ने कूर्गी हिंदुओं से दोस्ती का वादा किया। भोले हिंदुओं ने अपने इसका स्वागत अपने घरों में किया। पर तभी टीपू जिहादी की फोजों ने हिंदुओं पर हमला कर दिया। हर कूर्गी औरत जो भाग नहीं सकी, उसकी अस्मत रौंद दी गई। हर कूर्गी लड़का टीपू जिहादी के नपुंसक जिहादियों के हाथों लौंडेबाज़ी का शिकार बना। लगभग एक लाख हिंदू गुलाम बनाए गए और फिर तलवार की नोक पर मुसलमान।

उत्तरी कर्नाटक के बिदनूर में किया गया क़ब्ज़ा और उसके बाद हुए कल्लेआम को कौन भूल सकता है? अयाज़ खान, जो कि मजबूरन इस्लाम कुबूल करने से पहले कम्मरन नांबियार नाम का हिन्दू हुआ करता था, को

हैदर अली ने बिदनूर का गवर्नर लगाया। बाप के इस क़दम से बेटे टीपू के तन बदन में आग लग गई। हैदर अली सदा ही अयाज़ को टीपू से ज़्यादा लायक और समझदार समझता था। इसी के चलते टीपू उससे सदा जलता था और उसे रास्ते से हटाने की फ़िराक़ में था। इसकी ख़बर अयाज़ को लग गई और वो बहुत सा सोना लेकर मुंबई भाग गया। बस, किसी पागल पिल्ले के समान बौराया हुआ टीपू बेदनूर पहुँचा और उसकी सारी हिंदू आबादी को ज़बरन मुसलमान बना लिया। जान प्यारी होने से कोई कुछ ना कह सका।

मंगलोर पर जिहादी टीपू के क़ब्ज़े के साथ ही हज़ारों ईसाई भी श्री-नागपट्टम भेजे गए जहाँ ज़बरदस्ती इनकी सुन्नत की गई और ज़बरन मुसलमान बनाया गया।

फिर इसने केरल के उत्तरी हिस्से में कुम्बला का रुख किया। जो भी हिंदू रास्ते में आया, उसे ज़बरन मुसलमान बनाया गया। बेशर्मी से भरा जिहादी कहता था - “जब सब जगह एक ही मज़हब होगा तो एकता और ख़ुशहाली अपने आप होगी और ब्रिटिश आसानी से हराए जा सकेंगे”!

मालाबार में

मालाबार में टीपू सुल्तान की नज़र हिंदुओं और हिंदू मंदिरों पर थी। लुईस बी बौरी के मुताबिक़ मालाबार में टीपू के हिंदुओं के खिलाफ़ जिहाद ने बर्बरियत और हैवानियत में महमूद राजनवी, अलाउद्दीन ख़िलजी और नादिर शाह को कहीं पीछे छोड़ दिया। मुखर्जी के यह कहने पर कि - ‘टीपू सुल्तान ने केवल अपने दुश्मनों को इस्लाम कुबूल करवाया’, लुईस कहता है - ‘असल में नीच से नीच आदमी भी अपने दुश्मन को ही मारता/

तड़पाता है। इससे उसकी महानता साबित नहीं होती। इससे मासूम औरतों और बच्चों के खिलाफ़ किए गए उसके घिनौने काम कम नहीं हो जाते।’

इस्लामी शैतान का नंगा नाच

विलियम लोगान जो मालाबार में कुछ समय के लिए ज़िला कलेक्टर भी रहे, Malabar Manual में लिखते हैं - चिरकाल तालुका के त्रिचम्बरम और थलिप्परम्पु मंदिर, तेल्लीचेरी का थिरुवांगटू मंदिर और पोणमेरि

मंदिर सब के सब टीपू सुल्तान ने तुड़वा दिए। मनियूर मस्जिद भी पहले एक हिंदू मंदिर था। बहुत से लोगों के मुताबिक़, इस मंदिर को मस्जिद बनाने वाला कोई और नहीं, टीपू सुल्तान था।

राजा राजा वर्मा के मशहूर History of Sanskrit Literature in Kerala में केरल में टीपू सुल्तान के राज में हिन्दू मंदिरों के विध्वंस के बारे में कुछ यूँ लिखा है -

“टीपू सुल्तान की फ़ौजी चढ़ाई के बाद हिंदू मंदिरों की हुई तबाही की कोई हद नहीं बची। हिंदू मंदिर जलाकर राख किए गए, पवित्र मंदिर की मूर्तियों को चकनाचूर करना, मूर्तियों पर गाय का सिर काटकर उनके खून से नहलाना - ये सब टीपू सुल्तान और उसकी निर्दयी फ़ौज के आम मनोरंजन के तरीक़े थे। टीपू सुल्तान ने थलिप्परम्पु और त्रिचम्बरम मंदिरों को तोड़ते वक़्त जो बर्बरियत दिखाई उसको सोच कर भी दिल दहल जाते हैं। इस नए रावण की मचाई गई तबाही की भरपाई आज तक भी नहीं की जा सकी है।”

कालीकट बना शमशान

मंगलोर की १७८४ की संधि के तहत ब्रिटिश ने मालाबार पर टीपू सुल्तान का क़ब्ज़ा स्वीकार किया। के वी कृष्ण अय्यर अपनी मशहूर किताब *Zamorins of Calicut*, जो कि कालीकट के शाही महल से प्राप्त ऐतिहासिक दस्तावेजों के आधार पर लिखी गई, में लिखते हैं -

“जब जेमोरिन के अगले लड़ाकों इरलप्पड ने टीपू सुल्तान के हिंदुओं पर किए अत्याचारों और इस्लाम कुबूल करवाने की वजह से फ़ौजी अभियान में हिस्सा लेने से इंकार किया तो गुस्से से पगलाए टीपू ने क्रसम खाई की जेमोरिन हिंदुओं, उनके साथियों और हिंदू लड़ाकों को जब तक इस्लाम कुबूल नहीं करवा लेगा, चैन से नहीं बैठेगा।”

एल बी बौरी लिखते हैं - “ख़ुद को इस्लाम का ग़ाज़ी साबित करने के लिए कालीकट टीपू सुल्तान की नज़र में सबसे बढ़िया जगह थी। ऐसा इसलिए क्योंकि मालाबार के हिंदुओं ने औरत प्रधान सोच और औरतों के ‘अधनंगे’ कपड़ों के रिवाज को बंद करने से साफ़ इंकार कर दिया था जिन्हें टीपू सुल्तान नामी ‘समाज सुधारक’ इस्लाम कुबूल करवा कर इज़्ज़त बरख़्शाना चाहता था।”

मालाबार के हिंदुओं के लिए मुस्लिम हरम, एक से ज़्यादा औरतों से शादी और इस्लामी सुन्नत (ख़तना) कुबूल करने लायक नहीं थे। इनमें से कुछ भी केरल के प्राचीन धर्म और संस्कृति से मेल नहीं खाता था। कालीकट उन दिनों केरल में धर्म का गढ़ माना जाता था जहाँ ७,००० ब्राह्मण परिवार बसते थे। टीपू सुल्तान के जिहादी खून ख़राबे के चलते २,००० ब्राह्मण परिवार कालीकट से मिट गए। औरतों और बच्चों तक को

नहीं छोड़ा गया। बहुत से पुरुषों ने जंगलों में भाग कर जान बचाई।

एलमकुलम कुंजन पिल्लै ने २५ दिसम्बर १९५५ को साप्ताहिक मातृभूमि में तत्कालीन कालीकट की स्थिति के बारे में लिखा - “मुसलमान संख्या में बहुत बढ़ गए थे। हजारों हिंदुओं के ज़बरदस्ती खतने करवाए गए। टीपू सुल्तान के अत्याचार का नतीजा यह निकला कि नायर और चमार (अनुसूचित जाति) हिंदू बहुत बड़ी संख्या में साफ़ हो गए। नम्बूदरी हिंदू भी जनसंख्या में कम पाए गए।”

जर्मन मिशनरी गनटेस्ट लिखता है - “६०,००० लड़ाकों की फ़ौज लेकर टीपू सुल्तान कालीकट पर हमलावर हुआ और इसे मिट्टी में मिला दिया। मैसूर के इस इस्लामी जिहादी के अत्याचारों का शब्दों में वर्णन करना सम्भव नहीं है।” सी ए पार्कहर्स्ट भी लिखता है - “क़रीब सारा कालीकट ज़मींदोज़ कर दिया गया था।”

हिंदू मंदिरों का विध्वंस

जिहादी सूवर टीपू सुल्तान की फ़ौजों ने थाली, थिरुवनूर, वरक्कल, पूथूर, गोविंदपुरम, थालिक्कुन्नु समेत कालीकट शहर और आस पास के सारे हिंदू मंदिर पूरी तरह तहस नहस कर डाले। इनमें से कुछ मंदिर जमोरिन ने टीपू सुल्तान को श्रीरंगापट्टनम में मिली हार और १७९२ की संधि के बाद दोबारा बनवाए।

वेत्तुम इलाक़े के बहुत प्राचीन और पवित्र केरलाधीश्वरम, थरिक्कन्दियूर और थरिपरंगतु मंदिरों के साथ टीपू सुल्तान की दरिंदगी दिलों को चीर देने वाली थी। जमोरिन ने कुछ हद तक टूटे मंदिरों को फिर से बनाने का काम

किया। बहुत मशहूर और प्राचीन थिरुनवया मंदिर जो पूरे भारत देश में बहुत प्राचीन काल से वेदों के अध्ययन का गढ़ माना जाता था, जो तमिलनाडु के वैष्णवों का आस्था केंद्र था और जीसस की पैदाइश से भी पहले का बना हुआ था, ऐसे दुर्लभ और प्राचीन मंदिर को जिहादी टीपू सुल्तान की फ़ौजों ने पैरों तले कुचल दिया। (Malabar Gazetteer) मंदिर की पवित्र मूर्तियों को तोड़ने के बाद थरिक्कुवु मंदिर को फ़ौज का गोला बारूद रखने के काम में लिया गया (Malabar Manual)

कोटिक्कुन्नू, थ्रिथला, पन्नियूर और ना जाने कितने हिंदू जमोरिन मंदिर लूटने के बाद तोड़ दिए गए। प्रसिद्ध सुकापुरम मंदिर भी ध्वस्त कर दिया गया। पेरुम्परम्पु मंदिर और मरनेलिरा मंदिर (नम्बूदरी ब्राह्मणों का केंद्र) के खंडहर आज भी टीपू सुल्तान के अत्याचारों की कहानी कहते हैं। एरानाडु के वेंगारी और थरिक्कुलम मंदिर, रमणत्तुकारा का अर्झिंजिल्लम मंदिर, इन्द्यान्नूर मंदिर, मन्नूर मंदिर और अनगिनत छोटे बड़े हिंदू मंदिर जिहादी टीपू की तलवार से तोड़ डाले गए या लगभग बर्बाद कर दिए गए।

जिहादी टीपू मम्मियूर मंदिर और पलायूर चर्च को तोड़ कर गुरुवायूर मंदिर पहुँचा। यहाँ टीपू की फ़ौजों के द्वारा मंदिर तोड़ने के सबूत नहीं दिखते तो इसकी बड़ी वजह हैद्रोस कुट्टी था जिसे टीपू के बाप हैदर अली ने इस्लाम कुबूल करवाया था। इसी ने मंदिर की रक्षा की और मंदिर को कर-टैक्स देने की मार से से बचा कर रखा।

मौजूद सबूत यह बताते हैं कि जिहादी टीपू के शैतानी मंसूबों से डर कर गुरुवायूर मंदिर की पवित्र मूर्ति को छिपाकर त्रवणकोर के अंबालापूझा श्री कृष्ण मंदिर में स्थापित किया गया। मूर्ति को वापस पुराने मंदिर में तभी

लाया जा सका जब टीपू सुल्तान का फ़ौजी राज ख़त्म हो चुका था। यहाँ तक कि आज भी अंबालापूझा श्री कृष्ण मंदिर में उस स्थान पर दैनिक पूजा होती है जहाँ पर गुरुवायूर मंदिर की पवित्र मूर्ति कुछ समय के लिए रखी गई थी।

आस पास के परंपथाली, पनमयानाडू और वेंगिडंगू आदि जगहों के मंदिरों में आज भी टीपू के जिहाद के निशान देखे जा सकते हैं। जिहादी टीपू के द्वारा तहस नहस किए गए परंपथाली मंदिर के पवित्र गर्भगृह के अवशेष पत्थर को भी पिघलाने के लिए काफ़ी हैं। हिंदू और ईसाइयों के खिलाफ़ फ्रेंच फ़ौजों के साथ मिल कर टीपू ने जो कत्लेआम किया, वो फ़्रा बाटॉलमेओ की किताबों में देखा जा सकता है।

केरल का बोलता ख़ूनी इतिहास

गोविंद पिल्लै अपनी मशहूर किताब History of Literature में लिखते हैं:

“मलयालम काल १६५ जो कि लगभग १७८९-९० के आस पास था, टीपू सुल्तान जंगली दरिंदों की फ़ौजें लेकर मालाबार में दाख़िल हुआ। इस्लामी मज़हब के लिए पागलपन के जोश में टीपू उन अनगिनत हिंदू मंदिर और ईसाई चर्च तोड़ता चला गया जो कि खुशहाली और धार्मिक संस्कृति के प्रतीक थे। यही नहीं, टीपू ने सैकड़ों लोगों को गुलाम बनाया और उनका ज़बरदस्ती ख़तना करके मुसलमान बनाया जो कि उन लोगों के लिए मौत से बदतर था।”

२,००० नायरों की एक छोटी सी वीर सेना ने बहादुरी से इस कई

गुना बड़ी जंगली जिहादी फ़ौज को हफ़्तों तक कुट्टीपुरम के क़िले के पास छकाया। पर आख़िर में नायर रसद ख़त्म हो जाने से भूखे मरने लगे। तब टीपू सुल्तान क़िले में घुसा और उन्हें इस्लाम कुबूल करने की सूरत में जान बख़्शने की बात कही। नायरो को ज़बरदस्ती इस्लाम कुबूल करवा कर गाय का माँस मुँह में ठूँसा गया। परप्पनड राजमहल के एक पूरे ख़ानदान को इस्लाम कुबूल करवाया गया। एक-दो लोग टीपू की फ़ौजों की आँखों में धूल झोंक कर भाग निकले और मुसलमान बनने के कलंक से बचे।

इसी बीच शांतिपूर्वक तरीक़े से समर्पण करने वाले हिंदू कोलाथिरी राजा को बिना किसी वजह के इस महान गाज़ी टीपू ने धोखे से क़त्ल किया। बात यहीं नहीं रुकी। उसकी लाश को हाथी के पैर से बाँध कर सड़कों पर घसीटा गया। आख़िर में बची खुची लाश पेड़ से लटका दी गई। मुस्लिम सुल्तान का एक हिंदू राजा के प्रति इससे बढ़कर और क्या सम्मान हो सकता है?

एक बात और बताते चलें कि मैसूर में वोडयार का पूरा राजघराना टीपू और उसके बाप हैदर अली ने अपनी राजधानी श्रीरंगपटनम में बंदी बना रखा था। पालघाट का राजा एट्टिपंगी अचन जो पहले ही समर्पण कर चुका था केवल गाज़ी टीपू के शक के कारण कैदख़ाने में फेंक दिया गया जिसे बाद में श्रीरंगपटनम ले जाया गया। इसके बाद से इसका कुछ पता न चला।

पालाघाट के ईसाइयों ने डर से पलायन कर दिया। गाज़ी टीपू ने हिंदू आबादी में ख़ौफ़ बढ़ाने के लिए मालाबार में जगह जगह फ़ौजी छावनियाँ खड़ी कर दीं। हिंदुओं से बेदर्दी से कर वसूला गया। नहीं चुकाने की सूरत

में खड़ी की खड़ी फ़सल बर्बाद कर दी जाती। इससे तंग आकर कुछ ता-क़तवर मप्पिलों ने टीपू सुल्तान के खिलाफ़ विद्रोह किया।

गाज़ी टीपू ने मंदिरों पर भारी टैक्स लगाया। बहुत से नायर और ब्रा-ह्मण ज़मींदार अपनी अपनी ज़मीन और धन छोड़ कर राज्य छोड़ कर भाग खड़े हुए। मप्पिलों ने भागते हिंदुओं की ज़मीन और सामान पर क़ब्ज़े कर लिए ठीक उसी तरह जैसे १९२१ में इन्होंने हिंदुओं का कल्लेआम करके सब कुछ लूट लिया था। ठीक उसी तरह जिस तरह कश्मीर से जान बचा कर भाग रहे पंडितों की ज़मीन कश्मीरी मुस्लिमों ने क़ब्ज़ा कर ली थी और अब उस पर ऐश करते हैं।

जो भी हो, टीपू सुल्तान लाखों हिंदुओं के कल्लेआम करने, लाखों को इस्लाम कुबूल करवाने, लाखों को उनके घरों से निकालने और उनको कहीं का ना छोड़ने में कामयाब हुआ। बहुत से हिंदुओं ने सालों तक इस्लामी बर्बरियत के सामने घुटने टेक कर इस्लाम कुबूल किया।

मालाबार में जब ब्रिटिश राज क़ायम हुआ तब हिंदू ज़मींदार वापस लौटे। पर तब तक देर हो चुकी थी। मप्पिला गुंडों ने हिंदुओं की सारी ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लिया था। यही नहीं, इन्होंने मुल्लाओं से हिंदू ज़मींदारों के लिए क़त्ल के फ़तवे निकलवाए। यही वजह है की मालाबार में मप्पिलों द्वारा हिंदुओं के क़त्ल, बलात्कार, ज़बरन इस्लाम कुबूल करवाने और ज़मीन पर क़ब्ज़ा करने के किससे २०वीं सदी तक सुने जाते रहे। यहाँ तक कि आज भी मप्पिलों की नफ़रत हिंदुओं के लिए सबसे ज़्यादा है। केरल में सैकड़ों हिन्दू कार्यकर्ताओं के क़त्ल के पीछे आज भी यही धिनौनी सोच काम करती है।

चेरूनड़, वेत्ताथुनड़, एरानड़, वल्लुवनड़ और अंदर के हिस्सों में स्थानीय मण्डिलों ने हिंदुओं पर हमले जारी रखे ताकि हिंदू अपनी ज़मीन वापस नहीं ले सकें और काफ़िर हिंदुओं पर मुसलमानी हुकूमत ठीक उसी तरह से चले जैसी टीपू सुल्तान के राज में थी। दहशत इतनी थी कि मालाबार के किसी भी हिस्से जिसमें मण्डिले बड़ी संख्या में थे, वहाँ से हिंदू गुज़र नहीं सकते थे।

लेफ़्टिनेंट कर्नल ई फ़िटियन, आंद्रियाँसी, मायन, के पी पद्मनाभ मेनन, टी के वेलु पिल्लै, उल्लूर परमेश्वर अय्यर समेत बहुत से प्रसिद्ध विद्वानों ने मालाबार में टीपू सुल्तान के जिहादी राज की पोल खोली है जो किसी भी तरह के जिहादी झूठ और प्रपंच को नष्ट करने के लिए काफ़ी है। सैकड़ों हिन्दू मंदिरों को तोड़ कर कितनी दौलत लूटी गई, इसका कोई हिसाब ही नहीं।

इस दरिंदे भेड़िए टीपू सुल्तान की टीपू जयंती मनाने के ढोंग में लगे कुछ धर्मद्रोही हिंदू भले ही कुछ कहें, इतिहास का फ़ैसला हो चुका है। टीपू अंग्रेज़ों से देश को आज़ाद करवाने वाला लड़ाका नहीं था। एक धर्मांध मुसलमान और मंदिर तोड़ने वाले जिहादी से बढ़कर इसकी कोई हैसियत नहीं थी। बड़ी चालाकी से इसकी सारी करतूतों पर पर्दा डालकर अंग्रेज़ों को गाली दी जाती हैं। मण्डिले गुंडों के हिंदू कल्लेआम को अंग्रेज़ों के खिलाफ़ आज़ादी का संघर्ष बताया जाता है! इस जिहादी पिल्ले के लाखों पाप छुपाने के लिए हिंदू बच्चों को ब्रिटिश का दुश्मन बनाया जाता है और इस बीच जिहादी अपनी ताक़त बढ़ाकर राजवा ए हिंद की तैयारी करते हैं। पर अब यह खेल ख़त्म हुआ।

आखिरी शब्द

टीपू सुल्तान के इतिहास पर सबसे प्रामाणिक आवाज़ - त्रवणकोर के दीवान माधव राव की है जिन्होंने तत्कालीन राज्य के दस्तावेज़ों को ज्यों का त्यों पढ़ कर सार लिखा है जो कि हर हिन्दुस्तानी को पढ़ने योग्य है। वह कुछ इस तरह है -

“मप्पिलों ने हिंदुओं के खिलाफ़ अत्याचार करने के जो मंसूबे बाँधे थे, उन सबको टीपू सुल्तान और इस्लाम कुबूल करके उसके वफ़ादार बने लड़ाकों की फ़ौज ने पूरा किया। प्राचीन और पवित्र हिंदू मंदिर तोड़ दिए गए या आग में झोंक दिए गए। आज तक भी उन बेबस मंदिरों के खंडहर टीपू सुल्तान के इस्लामी अत्याचार की कहानी बयान करते हैं। यही हाल ईसाइयों के गिरजाघरों का हुआ।

टीपू सुल्तान ने केवल कोचीन राजा की ज़मीन पर हमला नहीं किया क्योंकि उसने टीपू के बाप हैदर अली के वक़्त से ही समर्पण किया हुआ था। पर यह काफ़ी नहीं था। टीपू सुल्तान की फ़ौजें जब परूर में दाखिल हुईं और उन्होंने कोडूंगल्लूर पर हमला किया, कोचीन राजा ने त्रवणकोर के राजा को पत्र लिखा और उनसे अपनी और अपने परिवार को बचाने की गुहार लगाई।”

यह सब लिखे हुए दस्तावेज़ हैं और प्रामाणिक इतिहास का हिस्सा हैं। अंत में एक पंक्ति जो कटाथनद के राजपरिवार के एक सदस्य ने टीपू के राज में लिखी थी, कुछ इस तरह है - “हे शिव! शिव लिंग मंदिरों से गायब (नष्ट) हैं और लिंग (पौरुष/वीरता) इस भूमि से!”

दो शब्द

इस किताब को पढ़ने के बाद हिंदू अपने खोए हुए मंदिर, आत्म सम्मान और सच्चे इतिहास को ना समझें तो धिक्कार है। इस किताब को पढ़ने के बाद हिंदुस्तानी मुसलमान अगर मुस्लिम हमलावरों से नफ़रत नहीं करें और अपने हिंदू पूर्वजों के बलिदान पर सिर ना झुकाएँ तो धिक्कार है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

उपरलिखित तथ्यों का विस्तार जानने के लिए पढ़ें:

- [1] “Chachnama: Islamic conquest of Sindh”
- [2] Vincent Smith. “Akbar – the Great Mogul”
- [3] Abul Fazl. “Akbarnama: The History of Akbar”
- [4] Abul Fazl. “Aain e Akbari”
- [5] “Baburnama: Memoirs of Babur”
- [6] Works of P N Oak
- [7] P.C.N. Raja. (1964). “English translation of the Malayalam article on Tipu Sultan”. Kesari Annual
- [8] Works of Francois Bernier
- [9] The Wily Princess
- [10] Works of Catrou

लेखक परिचय

ऊर्जा वैज्ञानिक। धर्म, मज़हब, इस्लामिक कट्टरता, आतंकवाद और भारत में मुस्लिम आक्रमण के इतिहास पर असाधारण पकड़। इस्लामिक कट्टरता में बह चुके युवाओं को फिर से देश और सनातन धर्म के रास्ते पर लाने वाले। इस्लामिक मज़हब, आतंकवाद, इतिहास, और युवाओं पर १० असाधारण पुस्तकों के लेखक। प्यार के नाम पर धर्म-परिवर्तन और जिहाद की शिकार लड़कियों को फिर से जीने और धर्म की शक्ति देने वाले रक्षक। कवि, दार्शनिक और वक्ता। विश्व-प्रसिद्ध IIT के स्नातक और अध्यापक, वर्तमान में भारत सरकार के प्रतिष्ठित 'INSPIRE Faculty Award' से सम्मानित। विश्व के श्रेष्ठ 'Energy Journals' (ऊर्जा शोध-पत्रिकाओं) में ऊर्जा और सौर-विज्ञान पर कई लेखों के प्रणेता। वर्तमान में अग्रिवीर के अध्यक्ष डॉ. वाशि शर्मा हिंदू धर्म का शौर्य हैं।

अग्निवीर : एक परिचय

अग्निवीर आईआईटी - आईआईएम शिक्षा प्राप्त, डेटा वैज्ञानिक, और योगी श्री संजीव नेवर द्वारा स्थापित एक आंदोलन है। सत्य, आध्यात्म और पुरुषार्थ से संसार और स्वयं के लिए सुख बढ़ाना इस आंदोलन का उद्देश्य है। वेद, गीता और योग की शक्तियों से आज की समस्याओं के समाधान में अग्निवीर कार्यरत है। 'शिकायत करने वाले कभी नहीं जीतते, कर्म करने वाले कभी नहीं हारते', इस मंत्र को लेकर अग्निवीर ने समाज में धर्म और कर्म की नयी धारा प्रवाहित की है। अग्निवीर के सम्पर्क में आकर हज़ारों प्रशंसकों के अपने जीवन के लिए बदला नज़रिया उनके पत्रों और संदेशों से झलकता है। अग्निवीर के जीवन बदल देने वाले संदेशों को पढ़ कर आत्महत्या के लिए जाने वाले निराश लोगों का वापस जीवन में लौटना इसी चमत्कार का हिस्सा है।

डर, शर्म और अन्य कारणों से समाज में कभी ना उठाए जाने वाले मुद्दों को अग्निवीर के प्रचंड पुरुषार्थ ने इस छोटे से समय में सबके सामने ला खड़ा किया है। सदियों से जात-पात के बंधनों में खुद को जकड़ कर रखने वाले हिंदू समाज में दलित-यज्ञ की शुरुआत करके धार्मिक और जातियों की एकता का बिगुल फूँका। असामाजिक तत्त्वों द्वारा हिंदू महिलाओं को बहला-फुसला कर धर्म-परिवर्तन करके शादी करने के बड़े धिनौने लव जिहाद रैकेट का पर्दाफ़ाश किया। जिहादी चंगुल में फँसी महिलाओं (कई नाबालिग बच्चियों समेत) की रक्षा की। मुस्लिम महिलाओं के समान अधिकारों के लिए चार शादी, ३ तलाक़, हलाला, जिस्माना-गुलामी की जंगली प्रथाओं के खिलाफ़ ज़बरदस्त संघर्ष किया। इन सभी मुद्दों पर अग्निवीर के अनथक प्रयास निरंतर जारी हैं।

अग्निवीर ने भारत के संवेदनशील क्षेत्रों में निःशस्त्र आत्मरक्षा कार्यक्रम आयोजित किए हैं ताकि विषम समय में असहाय लोगों की रक्षा की जा सके। भारत और दुनिया में तेज़ी से फैल रहे इस्लामी कट्टरवाद से युवाओं को बचाने के लिए अग्निवीर के Deradicalisation कार्यक्रम देश रक्षा में अहम स्थान रखते हैं। मज़हबी कट्टरवाद से बहुत से युवाओं को छुड़ाकर सनातन धर्म की मुख्यधारा में लाने का श्रेय अग्निवीर को है। भारत के स्कूलों में पढ़ाए जा रहे झूठे इतिहास को अग्निवीर की चुनौती के बाद सच्चे इतिहास को लेकर लोगों की उत्सुकता और माँग सकारात्मक प्रभाव का प्रमाण है।

अग्निवीर की बीस से ज़्यादा किताबें हिंदू धर्म, आध्यात्म, वेद, योग, प्रेरणा, हिंदू धर्म पर आक्षेप और उनके उत्तर, सामाजिक, जाति, स्त्री-पुरुष एकता, मानव अधिकार, भारत में आक्रमणकारियों का सच्चा इतिहास, मत-सम्प्रदाय-मज़हब, कट्टरता और कई झकझोर देने वाले मुद्दों पर छपी हैं जो अपने विषय पर अद्वितीय हैं और पाठकों में अत्यंत लोकप्रिय हैं।

अग्निवीर भविष्य का सूर्य है। आइए, जुड़िए। परिवार, देश और धर्म की सेवा कीजिए। जीवन को एक मतलब दीजिए। मोक्ष मार्ग पर आरूढ़ हो जाइए।

अधिक जानकारी के लिए देखें-

वेबसाइट: <http://www.agniveer.com/>

फेसबुक: <http://www.facebook.com/agniveeragni>

यूट्यूब: <http://www.youtube.com/agniveer>

ट्विटर: <http://www.twitter.com/agniveer>

अग्निवीर का सदस्य बनने के लिए, यहां सदस्यता फॉर्म भरें:

<http://www.agniveer.com/membership-form/>

अग्निवीर को सहयोग प्रदान करने के लिए, यहां जाएँ:

पेमेंट पेज : <http://www.agniveer.com/pay/>

पेपाल : give@agniveer.com

अग्निवीर
राष्ट्र सेवा | धर्म रक्षा